बी० ए० (प्रतिष्ठा) तृतीय खण्ड

दर्शनशास्त्र – सप्तम पत्र

प्रतीकात्मक तर्कशास्त्र तथा दार्शनिक विश्लेषण परिचय

विषय सूची

		पाठ	पृष्ठ
1.	तर्कशास्त्र का स्वरूप	1	2
2.	प्रतीकात्मक तर्कशास्त्र की विशेषताएँ एवं उपयोगिता	2	8
3.	युक्ति का स्वरूप-सत्यता एवं वैधता	3	15
4.	सरल एवं यौगिक प्रकथन	4	22
5.	संयोजक एवं वियोजक प्रतिज्ञप्ति	5	29
6.	सोपाधिक तथा हेत्वश्रित तथा निषेधात्मक, प्रतिज्ञप्ति	6	35
7.	वैधता एवं अवैधता का निर्धारण	7	41
8.	युक्ति तथा युक्ति-आकार	8	46
9.	सत्यता सरिणी विधि के द्वारा युक्ति की वैधता एवं अवैधता का निर्धारण	9	52
10.	प्रकथन और प्रकथन आकार	10	60
11.	पुनरुक्ति, व्याघातक तथा आपात्तिक	11	65
12.	वस्तुगत एवं तार्किक समता या तुल्यता	12	71
13.	शब्दार्थ	13	76
14.	'अर्थ' शब्द के विभिन्न अर्थ	14	81
15.	आलंकारिक एवं संवेगात्मक अर्थ	15	86
16.	परिभाषा का स्वरूप	16	91
17.	तुल्यार्थक शब्दों के द्वारा परिभाषा	17	96
18.	स्वनिर्मित तथा सूचनात्मक परिभाषाएँ	18	102
19.	वस्तुवाचकता के द्वारा परिभाषा	19	107
20.	गुणवाचकता के द्वारा परिभाषा	20	112
21.	संप्रत्यय तथा इनके निर्माण	21	117
22.	संप्रत्यय एवं प्रतिमा	22	122
23.	संप्रत्यय तथा अनुभव	23	126
24.	वाक्य एवं तर्कवाक्य	24	130
25.	वाक्य के अर्थ की कसौटियाँ	25	135

तर्कशास्त्र का स्वरूप

पाठ संरचना

1.1 उद्देश्य

1.2 विषय-प्रवेश

1.3 मुख्य विषय की व्याख्या

1.3.1 तर्कशास्त्र की विषय-वस्तु

1.3.2 तर्कशास्त्र की परिभाषा

1.3.3 तर्कशास्त्र विज्ञान है

1.3.4 तर्कशास्त्र आदर्शवादी विज्ञान है

1.3.5 तर्कशास्त्र कला है

1.3.6 तर्कशास्त्र सैद्धान्तिक और व्यावहारिक दोनों है

1.4 सारांश

1.5 पाठ में प्रयुक्त शब्द

1.6 अभ्यास के लिए प्रश्न

1.6.1 वस्तुनिष्ठ प्रश्न एवं उनके उत्तर

1.6.2 लघु उत्तरीय प्रश्न

1.6.3 दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1.7 प्रस्तावित पाठ

1.1 उद्देश्य

प्रस्तुत पाठ का मुख्य उद्देश्य तर्कशास्त्र के स्वरूप पर प्रकाश डालना है । तर्कशास्त्र वह विषय है जिसमें अनुमान के नियमों की व्याख्या की जाती है तथा इसका संबंध तर्कना या अनुमान के परिणामों की शुद्धता एवं अशुद्धता से है । तर्कशास्त्र भाषाभिव्यक्त तर्क का वह विज्ञान है, जिसके द्वारा सत्य की प्राप्ति एवं दोष का परिहार किया जाता है ।

1.2 विषय – प्रवेश

वैज्ञानिक ज्ञान की प्रत्येक शाखा अपनी व्यवस्थित ज्ञान-प्रक्रिया के सिलसिले में अनुमानों का प्रयोग करती है (व्यक्त या अव्यक्त रूप में) तथा उन्हीं के सहारे कुछ निष्कर्षों पर आती है । विज्ञान अनुमानों का प्रयोग करते है परन्तु उसके स्वरूप तथा उनसे संबंधित अन्य बातों की विवेचना नहीं करते । यही काम तर्कशास्त्र करता है । अत: तर्कशास्त्र का

मूल विषय अनुमान है । अनुमान के स्वरूप तथा उससे संबंधित विधियों एवं नियमों आदि की विवेचना करना तर्कशास्त्र का मुख्य कार्य है । अनुमान युक्तियों के माध्यम से होता है । युक्ति कुछ तर्कवाक्यों का समूह हैं, जिसमें एक तर्कवाक्य को निष्कर्ष के रूप में स्थापित किया जाता है तथा अन्य तर्कवाक्य उस निष्कर्ष तर्कवाक्य की सत्यता के लिए प्रमाण प्रस्तुत करता है । इस प्रकार, किसी भी युक्ति में आधार वाक्य एवं निष्कर्ष दोनों होते हैं । कुछ युक्तियाँ ऐसी होती हैं जिनमें आधार-वाक्य निष्कर्ष की सत्यता के लिए सिर्फ एक संभाव्य प्रमाण पेश करते हैं । दूसरी ओर कुछ युक्तियाँ ऐसी होती हैं जिनमें आधार-वाक्य निष्कर्ष की सत्यता के लिये कुछ ऐसे निश्चित प्रमाण पेश करते हैं कि आधार-वाक्यों को सत्य मानने पर निष्कर्ष की सत्यता अनिवार्य रूप से स्वीकार करनी पड़ती है । पहले प्रकार की युक्तियों को आगमनात्मक तथा दूसरे प्रकार की युक्तियों को निगमनात्मक कहा जाता है । इस प्रकार, तर्कशास्त्र का विषय अनुमान है । इसमें हम अनुमान के विषय में अध्ययन करते हैं । प्रत्यक्ष या ज्ञात के आधार पर अप्रत्यक्ष या अज्ञात का ज्ञान प्राप्त करना ही अनुमान है । प्रत्येक अनुमान या तर्कना की अभिव्यक्ति एक युक्ति के रूप में होती है और तर्कशास्त्र का संबंध इन्हीं युक्तियों से होता है । तर्कशास्त्र का संबंध तर्कना के परिणामों की शुद्धता एवं अशुद्धता से है । इसीलिए साधारणत: तर्कशास्त्र को तर्कना का विज्ञान कहा गया है ।

1.3 मुख्य विषय की व्याख्या

तर्कशास्त्र के स्वरूप की चर्चा करने के पूर्व तर्कशास्त्र की विषय-वस्तु, उसकी परिभाषा जान लेना आवश्यक है ।

1.3.1 तर्कशास्त्र की विषय-वस्तु :

अलग-अलग विषयों के अन्तर्गत अलग-अलग विषय-वस्तु के बारे में अध्ययन किया जाता है । प्रत्येक विषय की अपनी-अपनी विषय-वस्तु है । अब स्वभावत: प्रश्न उठता है कि तर्कशास्त्र की वस्तु-विषय क्या है ? तर्कशास्त्र का विषय है-'अनुमान' । इसमें हम अनुमान के विषय में अध्ययन करते हैं । अनुमान मनुष्य के ज्ञान प्राप्त करने का एक साधन है। प्रत्यक्ष ज्ञान के आधार पर अप्रत्यक्ष के विषय में जो ज्ञान प्राप्त करते हैं, उसे ही अनुमान कहा जाता है । धुएँ का तो आपको प्रत्यक्ष ज्ञान होता है, पर आग को नहीं देखने पर भी उसका जो विचार आप कर लेते हैं, यह अनुमान के द्वारा ही ज्ञान हुआ। अनुमान करने की शक्ति मनुष्य-जाति की विशेषता है । साथ ही अनुमान करने में भूल भी होती हैं । अनुमान में भूल को तभी दूर कर सकते हैं जब उसके नियमों को जानें । तर्कशास्त्र ही वह विषय है, जिसमें सही अनुमान के नियम बताये जाते हैं । इसमें हम सही अनुमान के नियमों का ही अध्ययन करते हैं । तर्कशास्त्र का लक्ष्य है अनुमान में सत्यता की प्राप्ति और भूलों का निवारण । इसलिए तर्कशास्त्र को सही अनुमान के सिद्धान्तों या नियमों का व्यवस्थापक विज्ञान कहा जाता है। विज्ञान इसे इसलिए कहते हैं कि इसमें अनुमान संबंधी बातों का एक व्यवस्थित ढंग से अध्ययन किया जाता है । अत: सही अनुमान के नियमों का अध्ययन करना ही तर्कशास्त्र का मुख्य लक्ष्य है ।

1.3.2 तर्कशास्त्र की परिभाषा :

तर्कशास्त्र का अँगरेजी पर्यायवाची शब्द 'Logic' है । यह 'Logic' शब्द ग्रीक भाषा के विशेषण Logike से बना है। इस शब्द का संज्ञा के रूप में व्यवहार Logos होता है । इसका अर्थ 'विचार' (Thought) या शब्द (Word) होता है। 'विचार' और 'शब्द' इन दोनों शब्दों के लिए ग्रीक भाषा में सिर्फ एक ही शब्द Logos का व्यवहार किया गया है । इससे यह पता चलता है कि 'विचार' एवं 'शब्द' में घनिष्ठ संबंध है । इस प्रकार, शब्द की व्युत्पत्ति पर विचार करने से तर्कशास्त्र का अर्थ यह होता है कि यह उन विचारों का शास्त्र है जो विचार शब्दों द्वारा व्यक्त किए जाते हैं । जब हम ऐसा तर्क करते हैं कि 'बर्फ जल रही है' तब यह तार्किक नियमों के अनुकूल नहीं होता, इसलिए शब्दों में ऐसा व्यक्त करना अशुद्ध है । अत: तर्कशास्त्र के बारे में हम कह सकते हैं कि तर्कशास्त्र का संबंध भाषाभिव्यक्त तर्क से है । अर्थात् तर्कशास्त्र वह विज्ञान है, जो नियमों का निर्धारण सत्य-असत्य के निर्णय के लिए करता है । तर्कशास्त्र की परिभाषा इस

प्रकार दे सकते हैं– "Logic is the science of reasoning as expressed in language for the attainment of truth and avoidance of error."

साधारणत: तर्कशास्त्र को तर्कना का विज्ञान कहकर परिभाषित किया जाता है । जैसा कि हम जानते हैं कि तर्कना का अर्थ है ज्ञात से अज्ञात की ओर जाना । जो ज्ञात है, वह तर्कना या अनुमान के लिए आधार या सामग्रियाँ प्रदान करता है और जो अज्ञात है वह तर्कना क्रिया के द्वारा निकाला गया निष्कर्ष है । इसे हम इस प्रकार व्यक्त कर सकते हैं–

सभी मनुष्य मरणशील हैं ।

राम एक मनुष्य है ।

∴ राम मरणशील है ।

अर्थात तर्कना या अनुमान को युक्ति के माध्यम से प्रस्तुत करते हैं । युक्तियाँ वैध या अवैध हो सकती हैं । तर्कशास्त्र में उन नियमों या प्रणालियों का अध्ययन किया जाता है जिसके प्रयोग से शुद्ध एवं अशुद्ध युक्तियों में भेद किया जा सके । तर्कशास्त्र का संबंध 'सत्य' की प्राप्ति से होता है ।

तर्कशास्त्र तर्कना के शुद्ध एवं सही नियमों की चर्चा करता है "Logic is the science of the laws and condition to which reasoning must conform in other that it may be valid." ''तर्कशास्त्र उचित या सही तर्कना की कला है ।'' तर्कशास्त्र शुद्ध तर्कना के नियम स्थापित करता है । इसप्रकार, तर्कशास्त्र तर्कना का विज्ञान एवं कला दोनों ही है । Charles Peivce का भी कहना है कि, "It will, however, generally be conceded that its central problem is the classification of arguments, so that those that are bad and thrown into one division and those which are good into another."

तर्कशास्त्र के विरुद्ध यह आपत्ति उठायी जाती है कि यदि तर्कशास्त्र के अध्ययन से मनुष्य कभी भी अशुद्ध युक्ति नहीं दे सकता है तो फिर तर्कशास्त्रियों से ऐसी भूलें क्यों होती हैं ? वस्तुत: तर्कशास्त्र के अध्ययन से वैध-अवैध युक्तियों के भेद में सहायता मिलती है । इसलिए कहा जाता है कि तर्कशास्त्र सृजनात्मक (Creative) तो नहीं पर सुधारात्मक (Corrective) अवश्य है । यह तर्कशक्ति का सृजन नहीं करता है, पर तर्कों में सुधार अवश्य लाता है ।

साधारणत: तर्कशास्त्र को तर्कना का विज्ञान कहा गया है । कुछ विद्वान जैसे I. M. Copi का कहना है कि इससे तर्कशास्त्र के स्वरूप की झलक तो मिलती है पर यह अस्पष्ट है । 'तर्कना' उस प्रकार का चिन्तन है जिसे अनुमान करना कहा जाता है जिसमें आधार वाक्यों से निष्कर्ष निकाले जाते हैं । पर 'चिन्तन' (Thinking) की भाँति ''तर्कना'' (reasoning) तर्कशास्त्र का ही मात्र वस्तु-विषय नहीं, मनोविज्ञान का भी है । मनोविज्ञान में चिन्तन तथा 'तर्कना' के स्वरूप का अध्ययन किया जाता है । उसमें तर्कना की क्रिया में सन्निहित सभी मानसिक क्रियाओं की व्याख्या होती है । तर्कशास्त्र का संबंध तर्कना क्रिया से नहीं है बल्कि तर्कना क्रिया के द्वारा निकाले गए परिणामों की शुद्धता से है । तर्कशास्त्र का प्रमुख प्रश्न है कि माने हुए आधार वाक्यों से जो निष्कर्ष निकाला गया है वह निगमित है या नहीं ।

1.3.3 तर्कशास्त्र विज्ञान है :

विश्व के किसी खास विभाग के सुव्यवस्थित अध्ययन को विज्ञान कहा जाता है । तर्कशास्त्र सभी विज्ञानों की भाँति विश्व के एक विभाग का अध्ययन करता है–अनुमान का । यह सही अनुमान के व्यापक सिद्धान्तों का प्रतिपादन करता है । यह ज्ञान सुव्यवस्थित होता है । इसमें हमें पद, वाक्य, अनुमान आदि के स्वरूप का ज्ञान होता है । अत: तर्कशास्त्र एक विज्ञान है ।

1.3.4 तर्कशास्त्र आदर्शवादी विज्ञान है :

विज्ञान दो प्रकार के होते हैं–यथार्थवादी एवं आदर्शवादी । यथार्थवादी विज्ञान का संबंध 'है' से है जब कि आदर्शवादी विज्ञान का संबंध 'चाहिए' से है । यथार्थवादी विज्ञान वस्तु जैसी है, उसे उसी रूप में मानकर अध्ययन करता

है। इसके विपरीत आदर्शवादी विज्ञान 'वस्तु को कैसा होना चाहिए' इसका अध्ययन करता है । अत: स्पष्ट है कि तर्कशास्त्र आदर्शवादी विज्ञान है । तर्कशास्त्र के अन्तर्गत हम तर्क कैसे करना चाहिए, अनुमान की शुद्ध प्रक्रिया क्या होनी चाहिए आदि का अध्ययन करते हैं ।

1.3.5 तर्कशास्त्र कला है :

किसी निश्चित लक्ष्य की प्राप्ति के लिए जो नियम होते हैं । उन्हें ही कला कहा जाता है । तर्कशास्त्र का भी एक लक्ष्य है–अनुमान में सत्यता की प्राप्ति । इस लक्ष्य की पूर्ति के लिए इसमें सही अनुमान के नियम बताये जाते हैं । अत: तर्कशास्त्र भी एक कला है ।

1.3.6 तर्कशास्त्र सैद्धान्तिक और व्यावहारिक दोनों हैं :

तर्कशास्त्र अनुमान के सिद्धान्तों का, उसकी बनावट का ज्ञान प्रदान करता है । इसलिए यह सैद्धान्तिक है । पर इसमें अनुमान में सत्यता की प्राप्ति का मार्ग भी बताया जाता है, अत: यह व्यावहारिक भी है । तर्कशास्त्र में सिद्धान्त के साथ-ही-साथ जीवन के व्यावहारिक पक्ष की समस्याओं का भी अध्ययन किया जाता है । कला और विज्ञान, सिद्धान्त और व्यावहार विरोधात्मक नहीं है । व्यावहार ज्ञान पर निर्भर करता है तथा ज्ञान व्यावहार को प्रेरित करता है ।

1.4 सारांश

सारांशत: यह कहा जा सकता है कि तर्कशास्त्र की विषय-वस्तु तर्कना या अनुमान है । अनुमान के स्वरूप तथा उससे संबंधित विधियों एवं नियमों आदि की विवेचना करना तर्कशास्त्र का मुख्य कार्य है । अनुमान की अभिव्यक्ति युक्तियों के माध्यम से होता है । तर्कशास्त्र को सैद्धान्तिक एवं व्यावहारिक दोनों माना गया है अथवा तर्कशास्त्र विज्ञान एवं कला दोनों है । व्यावहारिक जीवन में अनुमान का काफी महत्त्व है । साधारण मनुष्य अचेतन रूप से इन नियमों का पालन करता ही रहता है । परन्तु तर्कशास्त्र के अध्ययन से, विशेष रूप से प्रतीकात्मक तर्कशास्त्र के अध्ययन से किसी निश्चित विज्ञान की भाँति तर्कना में प्रवीणता बढ़ती है ।

1.5 पाठ में प्रयुक्त शब्द

तर्कना या अनुमान
आदर्शवादी विज्ञान
वैधता एवं अवैधता
यथार्थवादी विज्ञान
तर्कना का विज्ञान
सैद्धान्तिक एवं व्यावहारिक
सृजनात्मक
चिन्तन
सुधारात्मक
विचार
युक्ति

1.6 अभ्यास के प्रश्न

1.6.1 वस्तुनिष्ठ प्रश्न

(i) तर्कशास्त्र का विषय वस्तु है

(अ) प्रत्यक्ष

(ब) अनुमान

(स) शब्द

(द) आध्यात्मिक ज्ञान

उत्तर : (ब)

(ii) तर्कशास्त्र अध्ययन करता है;

(अ) अनुमान के नियमों का

(ब) अनुमान की प्रक्रियाओं का

(स) प्रत्यक्ष की प्रक्रियाओं का

(द) उपरोक्त सभी का

उत्तर : (अ)

(iii) तर्कशास्त्र है;

(अ) सृजनात्मक

(ब) सुधारात्मक

(स) उपरोक्त दोनों

(द) उपर्युक्त में से कोई नहीं ।

उत्तर : (ब)

(iv) व्युत्पत्ति की दृष्टि से तर्कशास्त्र का अर्थ है;

(अ) चिन्तन करने का विज्ञान

(ब) अनुमान का विज्ञान

(स) सृजनात्मक विज्ञान

(द) उपरोक्त सभी

उत्तर : (ब)

1.6.2 लघु उत्तरीय प्रश्न

(i) तर्कशास्त्र की विषय-वस्तु पर प्रकाश डालें ।

(ii) क्या तर्कशास्त्र विज्ञान है ? स्पष्ट करें ।

(iii) क्या तर्कशास्त्र कला है ? स्पष्ट करें ।

(iv) तर्कशास्त्र की परिभाषा दें ।

(v) क्या तर्कशास्त्र सैद्धान्तिक या व्यावहारिक है ? स्पष्ट करें ।

1.6.3 दीर्घ उत्तरीय प्रश्न :

(i) तर्कशास्त्र के स्वरूप की चर्चा करें ।

1.7 प्रस्तावित पाठ

(i) आइ० एम० कापी : प्रतीकात्मक तर्कशास्त्र

(ii) प्रो० केदार नाथ तिवारी : प्रतीकात्मक तर्कशास्त्र : एक सरल परिचय ।

✠✠✠

प्रतीकात्मक तर्कशास्त्र की विशेषताएँ एवं उपयोगिता

पाठ संरचना

2.1 उद्देश्य

2.2 विषय-प्रवेश

2.3 मुख्य विषय की व्याख्या

2.3.1 पारम्परिक तर्कशास्त्र

2.3.2 तात्विक तर्कशास्त्र

2.3.3 व्यावहारिकतावादी तर्कशास्त्र

2.3.4 तर्कगणित

2.3.5 प्रतीकात्मक तर्कशास्त्र

2.3.6 प्रतीकात्मक तर्कशास्त्र की विशेषता एवं उपयोगिता

2.4 सारांश

2.5 पाठ में प्रयुक्त शब्द

2.6 अभ्यास के लिए प्रश्न

2.6.1 वस्तुनिष्ठ प्रश्न

2.6.2 लघु उत्तरीय प्रश्न

2.6.3 दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

2.7 प्रस्तावित पाठ

2.1 उद्देश्य

प्रस्तुत पाठ का उद्देश्य प्रतीकात्मक तर्कशास्त्र की विशेषताओं एवं उपयोगिता पर प्रकाश डालना है । प्रतीकात्मक तर्कशास्त्र तर्कगणित का ही परिमार्जित परिष्कृत रूप है । तर्कशास्त्र का संबंध युक्ति से है । प्रतीकात्मक तर्कशास्त्र में भी अनुमान की अभिव्यक्ति युक्तियों के माध्यम से होती है । यहाँ युक्ति के प्रतीकात्मक रूप देते हैं जिससे अनेक लाभ होता है। भाषा की अस्पष्टता तथा दुरूहता से बचने के लिए तथा समय एवं स्थान में मितव्ययिता के लिए समकालीन युग में तर्कशास्त्र के क्षेत्र में प्रतीक (Symbol) का प्रयोग किया गया । प्रतीकात्मक तर्कशास्त्र के अध्ययन से किसी निश्चिंत विज्ञान की भाँति तर्कना में प्रवीणता बढ़ती है ।

2.2 विषय–प्रवेश

वस्तुत: प्रतीकात्मक तर्कशास्त्र परम्परावादी तर्कशास्त्र का खंडन या विरोध नहीं करता, उसे संशोधित करता है और उसे विकसित कर वैज्ञानिक रूप प्रदान करता है । प्रतीकात्मक तर्कशास्त्र तर्क-गणित का ही विकसित रूप है । व्हाइटहेड तथा रसेल के अतिरिक्त कई तर्कशास्त्री, गणितज्ञ, वैज्ञानिक इस दिशा में शोधकार्य करने लगे । आरंभ में लोगों ने किसी मानक प्रतीक का प्रयोग नहीं किया था । बाद में प्रतीकों का एक मानक रूप स्वीकारा गया और उन्हें व्यवस्थित किया गया। वाक्यों के विश्लेषण में तथा विज्ञानों में भी इसका प्रयोग होने लगा । तर्कगणित के इस विकसित तथा व्यवस्थित रूप को ही प्रतीकात्मक तर्कशास्त्र कहा गया है । 1904 ई० में अन्तर्राष्ट्रीय दर्शन सभा पेरिस में इसका नामकरण 'Logistic' तर्कगणित हुआ था । पर इसके नाम में अब कोई मतभेद नहीं है । इसे ही प्रतीकात्मक तर्कशास्त्र कहा जाता है । वर्त्तमान तर्कशास्त्र जो आज प्रतीकात्मक तर्कशास्त्र के रूप में प्रसिद्ध हो रहा है, में मात्र तर्कवाक्यों के लिए चिन्हों का प्रयोग नहीं, उन तर्कवाक्यों के संबंधों के लिए भी प्रतीकों का प्रयोग किया है । इन प्रतीकों के प्रयोग से तर्कशास्त्र को कई प्रकार से लाभ हुआ है । अनुमान में युक्तियों के प्रतीकात्मक प्रयोग से स्थान तथा काल की बचत होती है । पारम्परिक तर्कशास्त्र तथा प्रतीकात्मक तर्कशास्त्र में गुणात्मक अन्तर नहीं है अपितु केवल मात्रा में अन्तर है ।

2.3 मुख्य विषय की व्याख्या

प्रतीकात्मक तर्कशास्त्र की विशेषताओं एवं उपयोगिता पर प्रकाश डालने के पूर्व तर्कशास्त्र के विकास पर विचार करना आवश्यक प्रतीत होता है ।

2.3.1 पारम्परिक तर्कशास्त्र (Traditional Logic)

अरस्तूयी तर्कशास्त्र को पारम्परिक तर्कशास्त्र का आधार कहा जाता है । अरस्तू को पाश्चात्य तर्कशास्त्र का जनक माना जाता है । क्योंकि सर्वप्रथम पश्चिम में अरस्तू ने तर्कना या अनुमान में तर्कवाक्यों के आकार के महत्व को समझा और यह माना कि सभी नियम आकारिक होते हैं । उसने यह विचारा कि किन नियमों के पालन करने से निष्कर्ष शुद्ध या अशुद्ध होते हैं । उसने उन सिद्धान्तों को व्यवस्थित कर उन्हें एक विज्ञान का रूप दिया, जिसे तर्कशास्त्र कहा गया । 19वीं सदी तक उनके विचारों में कुछ संशोधन अवश्य हुए, पर वे ही भविष्य के तर्कशास्त्र के आधार रहे ।

अरस्तू का तर्कशास्त्र कुछ आवश्यक मान्यताओं पर आधारित है । अरस्तू ने उन्हें तर्कना का मौलिक नियम कहा है। इस अनुमान के आधार विचारों के नियम-तादात्म्य-नियम (Law of Identity), व्याघातक-विरोध नियम (Low of Contradiction) अनन्य-नियम (Low of Excluded Middle) तथा पर्याप्त हेतु नियम (Law of Sufficient Reason) हैं । निगमनात्मक अनुमान का संबंध आकारिक सत्य (Formal truth) से है । कोई भी अनुमान तर्कवाक्यों से ही बना हुआ होता है । तर्कवाक्य ही अनुमान का मुख्य अंग है ।

सभी मनुष्य मरणशील हैं । (1)

राम एक मनुष्य है । (2)

राम मरणशील है । (3)

उपरोक्त अनुमान में (1), (2) और (3) तर्कवाक्य हैं । वे ही इस अनुमान के घटक हैं । अब प्रश्न उठता है कि तर्कवाक्य क्या है ? जब निर्णय को भाषा में व्यक्त कर देते हैं तो वही तार्किक वाक्य कहलाता है । निर्णय सत्य या असत्य होते हैं । निर्णय के घटक प्रत्यय हैं । प्रत्येक तर्कवाक्य के तीन अंग होते हैं–उद्देश्य, विधेय तथा संयोजक । अरस्तू ने अपने तर्कशास्त्र के अन्तर्गत चार तर्कवाक्यों के लिए A, E, I तथा O प्रतीक (Symbol) का प्रयोग किया है ।

(i) पूर्णव्यापी भावात्मक –A

सभी मनुष्य स्वार्थी हैं ।

(ii) पूर्णव्यापी निषेधात्मक –E

कोई मनुष्य स्वार्थी नहीं है ।

(iii) अंशव्यापी भावात्मक –I

कुछ मनुष्य स्वार्थी हैं ।

(iv) अंशव्यापी निषेधात्मक –O

कुछ मनुष्य स्वार्थी नहीं हैं ।

इन तर्कवाक्यों के बीच अरस्तू ने चार प्रकार का संबंध माना है, उपरोक्त (A–I तथा E–O), विपरीतता (A तथा E), अनुविपरीतता (I–O) और व्याघातकता (A–O, E–I) के बीच ।

यदि एक आधार वाक्य से निष्कर्ष निकाला जाता है तो उसे साक्षात् अनुमान कहते हैं ।

All men are wise—A

∴ Some wise beings are men —I

मध्याश्रित अनुमान निगमन का वह रूप है जिसमें दो या दो से अधिक वाक्यों के संयोग से निष्कर्ष निकाला जाता है ।

सभी पशु मरणशील है ।

गाय पशु है

∴ अत: गाय मरणशील है ।

2.3.2 तात्विक तर्कशास्त्र (Metaphysical Logic)

लगभग तेईस सौ वर्षों के बाद पारम्परिक तर्कशास्त्र का एक व्यवस्थित ढंग से खण्डन करने का प्रयास प्रत्ययवादी दार्शनिकों ने किया । ब्रैडले ने अपनी पुस्तक 'तर्कशास्त्र के सिद्धान्त' के अर्न्तगत अरस्तूयी सिद्धान्तों का विरोध कर प्रत्ययवादी दृष्टिकोण अपनाया । तात्विक तर्कशास्त्रियों का परम्परावादियों से मौलिक विरोध इस कारण से था कि उनके अनुसार परम्परावादी तर्कशास्त्र मात्र आकारिक हैं । अर्थात अनुमान का संबंध निष्कर्ष की वैधता से है, सत्यता से नहीं । इसलिए तात्विक तर्कशास्त्रियों का कहना है कि परम्परावादियों के तर्कशास्त्र वास्तविक जीवन से कटा हुआ है ।

पारम्परिक तर्कशास्त्रियों के अनुसार निर्णय दो प्रत्ययों का संबंध है अर्थात प्रत्यय निर्णयों की इकाई हैं । तात्विक तर्कशास्त्रियों ने इस मत का विरोध किया है, इनके अनुसार निर्णयों में मात्र एक प्रत्यय होता है । 'वह फूल लाल है' इसमें फूल के बिना उसके रंग के कोई प्रत्यय कैसे हो सकता है । इसलिए प्रत्ययवादी तर्कशास्त्रियों के अनुसार अनुमान की इकाई पद या प्रत्यय नहीं, तर्कवाक्य या निर्णय स्वयं है ।

यह सत्य है कि तात्विक तर्कशास्त्रियों ने पारम्परिक तर्कशास्त्र का विरोध कर विचारों की शिथिलता में गति प्रदान की, पर वे किसी व्यवस्थित नियम का प्रतिपादन नहीं कर सके ।

2.3.3 व्यावहारिकतावादी तर्कशास्त्र (Pragmatic Logic)

20 वीं शताब्दी के प्रारंभ में जेम्स, शीलर, डीवी जैसे विचारकों ने तर्कशास्त्र के क्षेत्र में मानवतावादी दृष्टिकोण अपनाया । तर्कशास्त्र के क्षेत्र में व्यावहारिकतावादी सम्प्रदाय ने सभी प्रचलित मतों का विरोध किया–पारम्परिक, तात्विक तथा तर्कगणित सम्प्रदायों का । इन सभी सम्प्रदायों ने तर्कशास्त्र एवं मनोविज्ञान के बीच एक खाई खींच दी है । इनलोगों ने माना

है कि मनोविज्ञान का संबंध चिन्तन क्रिया से है और तर्कशास्त्र का चिन्तन के निष्कर्ष से । व्यावहारिकतावादी तर्कशास्त्री इस अन्तर को नहीं स्वीकारते । इनके अनुसार तर्कशास्त्र की जड़ मनोविज्ञान में है । अत: व्यावहारवादियों का दृष्टिकोण मनोवैज्ञानिक है । इनलोगों के अनुसार प्रत्येक निर्णय सोद्देश्य तथा वैयक्तिक होता है । यही कारण है कि परम्परावादियों के अवैयक्तिक विचार का खंडन किया है । व्यावहारवादियों के अनुसार तर्कशास्त्र के सभी सम्प्रदाय आकारिक और निरर्थक हैं।

2.3.4 तर्कगणित : (Mathematical Logic)

19वीं सदी के मध्यकाल में कुछ गणितज्ञों ने अपने लेखों में पारम्परिक तर्कशास्त्र के सिद्धान्तों में प्रतीकों (Symbol) का प्रयोग किया । इसलिए, तर्कगणित अरस्तू के तर्कशास्त्र का खंडन नहीं करता । यह उस तर्कशास्त्र के दोषों को दूर कर उनके नियमों का विस्तार अन्य प्रकार की युक्तियों में करता है और प्रतीकों का प्रयोग कर उसे और भी सुदृढ़ करता है । रसेल की पुस्तक 'Principia Mathematica' तर्कगणित का मानक ग्रंथ है ।

परम्परावादियों ने तर्कवाक्यों के बीच केवल चार प्रकार का संबंध माना है, उपाश्रित, विपरीतता अनुविपरीतता तथा व्याघातकता का, पर तर्कगणित में सात–स्वतंत्रता, समता, अतिआपादान, अवआपादान, विपरीतता, अनुविपरीतता तथा व्याघातकता।

अरस्तूयी तर्कशास्त्र में गणित के प्रतीकों तथा प्रणालियों के प्रयोग तथा अन्य प्रकार की युक्तियों को भी गणित के नियमों के आधार पर विचार करना तर्कगणित कहा जाने लगा ।

2.3.5 प्रतीकात्मक तर्कशास्त्र (Symbolic Logic)

प्रतीकात्मक तर्कशास्त्र परम्परावादी तर्कशास्त्र का खंडन नहीं करता बल्कि परिमार्जित एवं परिष्कृत कर वैज्ञानिक रूप प्रदान करता है । यह सत्य है कि पारम्परिक तर्कशास्त्र में सिर्फ चार प्रतीकों (A, E, I तथा O) का ही प्रयोग किया गया था जबकि प्रतीकात्मक तर्कशास्त्र में प्रतीकों की संख्या ज्यादा है । तर्कगणित के विकसित तथा व्यवस्थित रूप को ही प्रतीकात्मक तर्कशास्त्र कहा गया है । 1904 ई० में अन्तर्राष्ट्रीय दर्शन सभा, पेरिस में इसका नामकरण तर्कगणित (Logistic) हुआ था । इसे ही प्रतीकात्मक तर्कशास्त्र कहा जाता है ।

2.3.6 प्रतीकात्मक तर्कशास्त्र की विशेषता एवं उपयोगिता :

तर्कशास्त्र का मुख्य काम वैध तथा अवैध युक्ति–आकारों में भेद करने की विधि बतलाना तथा वैध युक्तियों के निर्माण–संबंधी नियम एवं सिद्धान्त हमारे समक्ष प्रस्तुत करना है । अरस्तू के पारम्परिक तर्कशास्त्र एवं आधुनिक प्रतीकात्मक तर्कशास्त्र दोनों का यही कार्य है । दोनों की विषय–वस्तु में कोई मौलिक अन्तर नहीं है । परन्तु प्रतीकात्मक तर्कशास्त्र की फिर भी अपनी विशेषता है और यह विशेषता इस बात में है कि अन्य आधुनिक विज्ञानों की तरह इसने भी अपनी एक खास तकनीकी भाषा विकसित कर ली है जिसके माध्यम से ही यह युक्तियों की वैधता–अवैधता के प्रश्न तथा उनसे संबंधित सारे नियमों एवं सिद्धान्तों का अध्ययन करता है । इस तकनीकी भाषा में अनेकों प्रकार के प्रतीक हैं जिनके प्रयोग से बड़ी से बड़ी युक्ति का भी मूल तार्किक आकार हमारे समक्ष स्पष्ट तथा संक्षिप्त रूप में रख दिया जाता है कि उनके वाक्यों के बीच के परस्पर संबंध हमें साफ दिखाई पड़ने लगते है तथा वैद्यता–अवैद्यता आसानी से निर्धारित कर ली जाती है। इसका फल यह हुआ कि जहाँ अरस्तू का तर्कशास्त्र का तर्कशास्त्र कुछ छोटी तथा सरल युक्तियों की ही वैधता–अवैधता के प्रश्न से अपना संबंध रख पाता है, वहाँ प्रतीकात्मक तर्कशास्त्र बहुत बड़ी–बड़ी तथा जटिल युक्तियों की वैधता–अवैधता के साथ भी निबत्ने की क्षमता रखता है । प्रतीकों के प्रयोग के द्वारा इस प्रकार प्रतीकात्मक तर्कशास्त्र युक्तियों की विषय–वस्तु से उनके मूल आकार को अलग कर लेता है तथा अधिक प्रभावकारी ढंग से उनकी वैधता–अवैधता के प्रश्न को निर्धारित करता है ।

प्रतीकों के प्रयोग के कई लाभ हैं, तथा प्राय: सभी विज्ञानों में प्रतीकों का प्रचलन हो गया । वाक्यों एवं शब्दों के स्थान पर प्रतीकों के प्रयोग के कई लाभ हैं । किसी सिद्धान्तों एवं रिपोर्टों को विस्तार पूर्वक अंकित करने में समय और स्थान दोनों की बहुत अधिक मात्रा में आवश्यकता होती है । प्रतीकों के प्रयोग से उनका रूप छोटा हो जाता है । उन्हें अंकित करने में न तो उतने स्थान न उतने समय की आवश्यकता होती है ।

If there is Sun, there is light

There is sun

∴ There is light

उपरोक्त युक्ति का प्रतीकात्मक रूप होगा–

P>Q

P

∴ Q

अत: स्पष्ट है कि किसी युक्ति के लिए प्रतीकों के प्रयोग से स्थान तथा काल दोनों की बचत होती है ।

प्रतीकात्मक तर्कशास्त्र में प्रतीकों के प्रयोग का दूसरा लाभ यह होता है कि हमारी साधारण बोल चाल की भाषा की जटिलता, अस्पष्टता तथा अनिश्चितता को सरलता, स्पष्टता तथा निश्चितता प्रदान कर उसे अधिक सुग्राह्य बनाना है । तर्कशास्त्र में डीमॉर्गन सिद्धान्त नामक एक सिद्धान्त (दो भागों में) है जिसे साधारण भाषा में इस प्रकार व्यक्त किया जाता है–

(i) दो वाक्यों के संयोग का निषेध उनके निषेध के वियोजन के साथ तार्किक रूप में तुल्य होता है । इस कथन का प्रतीकात्मक रूप होगा– $\sim (p.\ q) \equiv \sim p \vee \sim q$

(ii) दो वाक्यों के वियोजन का निषेध उनके निषेध के संयोजन के साथ तार्किक रूप से तुल्य होता है । इस कथन का प्रतीकात्मक रूप होगा–

$\sim (p \vee q) \equiv \sim p.\ \sim q.$

साथ ही गणित में या संख्यात प्रणाली में व्याख्यात्मक प्रतीकों के प्रयोग से किसी समीकरण को बहुत ही संक्षिप्त रूप में व्यक्त किया जाता है , जैसे–

$A \times A \times A \times A \times A \times A \times A \times A = B \times B \times B \times B$

इसका प्रतीकात्मक रूप होगा– $A^8 = B^4$

प्राय: सभी विज्ञानों में प्रतीकों का प्रचलन हो गया है ।

संकेतों तथा प्रतीकों का प्रयोग अपनी आवश्यकतानुसार अरस्तू ने भी अपने तर्कशास्त्र में किया है, जैसे– A, E, I तथा O । आधुनिक तर्कशास्त्र में इन चिन्हों तथा प्रतीकों को और विकसित किया गया । इसलिए कहा जाता है कि परम्परागत तर्कशास्त्र तथा आधुनिक प्रतीकात्मक तर्कशास्त्र में सिर्फ मात्रा भेद है, प्रकार-भेद नहीं । यही कारण है कि दोनों का मूल विषय एक होते हुए भी प्रतीकात्मक तर्कशास्त्र का क्षेत्र अरस्तू के तर्कशास्त्र की तुलना में बहुत ही अधिक विकसित है ।

आधुनिक प्रतीकात्मक तर्कशास्त्र की एक विशेषता यह भी है कि यह वैध युक्ति-आकारों से संबंधित नियमों को निरूपित कर उन्हें एक अव्यवस्थित रूप में सिर्फ व्यावहारिक प्रयोग के लिए छोड़ नहीं देता बल्कि इन नियमों को एक क्रमबद्ध रूप में सजाकर एक निगमनात्मक समष्टि का निर्माण करना है । प्रतीकात्मक तर्कशास्त्र में ऐसी समष्टि का नाम 'लॉजिस्टिक सिस्टम' दिया जाता है ।

प्रतीकात्मक तर्कशास्त्र की एक अन्य उपयोगिता यह भी है कि साधारण भाषा की तुलना में प्रतीकों के द्वारा तर्कना या अनुमान करना अधिक आसान है । प्रतीकात्मक भाषा का प्रयोग साधारण भाषा से उत्कृष्ट सिद्ध हुआ है । इस प्रकार, प्रतीकात्मक भाषा के प्रयोग के द्वारा अनुमान करने में तथा युक्तियों के परीक्षण में अत्यधिक सहायता मिली है । इस संदर्भ में व्हाइटहेड ने भी कहा है कि, "By the aid of symbolism we can make transitions in reasoning almost

mechanically by the eye, which otherwise would call into play the higher faculties of the brain" (An Introduction to Mathematics) अर्थात् प्रतीकों की सहायता से एक बार देखकर ही यांत्रिक रूप से युक्तियों की वैधता जानी जा सकती है जिसके लिए अन्यथा उच्च मानसिक योग्यता की आवश्यकता होती है ।

2.4 सारांश

उपर्युक्त विवेचना के आधार पर निष्कर्ष के रूप में कहा जा सकता है कि वर्त्तमान तर्कशास्त्र जो आज प्रतीकात्मक तर्कशास्त्र के रूप में प्रसिद्ध हो रहा है, में मात्र तर्कवाक्यों के लिए चिन्हों या प्रतीकों का प्रयोग नहीं, उन तर्कवाक्यों के संबंधों के लिए भी प्रतीकों का प्रयोग किया है । प्रतीकों के प्रयोग से स्थान तथा काल की बचत संभव हो पाती है । साथ ही विज्ञानों की विस्तृत सामग्रियों पर ध्यान केन्द्रित करना कठिन होता है लेकिन प्रतीकों के द्वारा दत्त सामग्रियों के छोटे रूप पर ध्यान देना सरल हो जाता है । अर्थात् भाषा की अस्पष्टता तथा दुरूहता से बचने के लिए तथा समय और स्थान में मितव्ययिता के लिए समकालीन युग में तर्कशास्त्र के क्षेत्र में चिन्हों एवं प्रतीकों का प्रयोग किया जाता है । कई विज्ञानों जैसे रसायनशास्त्र, भौतिक विज्ञान, गणित आदि में भी प्रतीकों का प्रयोग किया जाता है ।

2.5 पाठ में प्रयुक्त शब्द

प्रतीक

तर्कगणित

प्रतीकात्मक तर्कशास्त्र

पारम्परिक तर्कशास्त्र

तादात्म्य नियम

व्याघातक विरोध नियम

अनन्य नियम

पर्याप्त-हेतु-नियम

आकारिक सत्य

तात्विक तर्कशास्त्र

व्यावहारिकतावादी तर्कशास्त्र

2.6 अभ्यास के लिए प्रश्न

2.6.1 वस्तुनिष्ठ प्रश्न

(i) प्रतीकात्मक तर्कशास्त्र और प्रारम्परिक तर्कशास्त्र के बीच

(अ) गुणात्मक अन्तर है

(ब) परिमाणात्मक अन्तर है

(स) गुणात्मक एवं परिमाणात्मक दोनों अन्तर है

(द) उपरोक्त में से कोई नहीं ।

उत्तर : (ब)

(ii) निगमनात्मक युक्ति का संबंध है–

(अ) आकारिक सत्य से

(ब) वास्तविक सत्य से

(स) आकारिक एवं वास्तविक दोनों से

(द) उपरोक्त में से कोई नहीं ।

उत्तर : (अ)

(iii) प्रतीकों के प्रयोग से लाभ होता है ।

(अ) समय की बचत

(ब) स्थान की बचत

(स) भाषा की दुरूहता एवं जटिलता से बचाव

(द) उपरोक्त सभी

उत्तर : (द)

2.6.2 लघु उत्तरीय प्रश्न

(i) "पारम्परिक तर्कशास्त्र और प्रतीकात्मक तर्कशास्त्र में गुणात्मक अन्तर नहीं है अपितु केवल मात्रा में अन्तर है ।" स्पष्ट करें ।

(ii) प्रतीकात्मक तर्कशास्त्र क्या है ? स्पष्ट करें ।

2.6.3 दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

(i) प्रतीकात्मक तर्कशास्त्र के लक्षण एवं उपयोगिता पर प्रकाश डालें ।

2.7 प्रस्तावित पाठ

(i) आइ० एम० कापी : प्रतीकात्मक तर्कशास्त्र

(ii) डा० केदारनाथ तिवारी : प्रतीकात्मक तर्कशास्त्र : एक सरल परिचय

✠✠✠

युक्ति का स्वरूप–सत्यता एवं वैद्यता

पाठ संरचना

3.1 उद्देश्य

3.2 विषय-प्रवेश

3.3 मुख्य विषय की व्याख्या

3.3.1 तर्कवाक्य का स्वरूप

3.3.2 युक्ति का स्वरूप

3.3.3 सत्यता तथा वैधता

3.4 सारांश

3.5 पाठ में प्रयुक्त शब्द

3.6 अभ्यास के लिए प्रश्न

3.6.1 वस्तुनिष्ठ प्रश्न

3.6.2 लघु उत्तरीय प्रश्न

3.6.3 दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

3.7 प्रस्तावित पाठ

3.1 उद्देश्य

प्रस्तुत पाठ का उद्देश्य युक्ति के स्वरूप को स्पष्ट करना है तथा सत्यता एवं वैधता की अवधारणा पर प्रकाश डालना है । अनुमान युक्तियों के माध्यम से होता है । युक्ति तर्कवाक्यों अथवा प्रकधनों का ऐसा समूह है जिसमें कोई तर्कवाक्य अन्य तर्कवाक्यों से निष्पादित होता है । सत्यता तथा असत्यता तर्कवाक्य के गुण है तथा वैधता एवं अवैधता युक्ति के । इसलिए, किसी भी युक्ति की वैधता एवं अवैधता और तर्कवाक्य के सत्यता एवं असत्यता के बीच आवश्यक संबंध होंगे ।

3.2 विषय–प्रवेश

तर्कशास्त्र का मूल विषय अनुमान है । अनुमान की अभिव्यक्ति युक्तियों के माध्यम से होती है । युक्ति कुछ ऐसे तर्कवाक्यों के समूह को कहा जाता है जिनमें से एक तर्कवाक्य को निष्कर्ष के रूप में स्थापित किया जाता है तथा अन्य तर्कवाक्य उस निष्कर्ष तर्कवाक्य की सत्यता के लिए प्रमाण प्रस्तुत करता है । इस प्रकार, किसी भी युक्ति में आधार वाक्य एवं निष्कर्ष दोनों होते हैं । जैसे–

सभी मनुष्य मरणशील हैं – (1)

राम एक मनुष्य है – (2)

∴ राम मरणशील है – (3)

इस तर्कना में (1) और (2) आधार वाक्य हैं तथा (3) निष्कर्ष । जिस वाक्य की सत्यता व्युत्पन्न की जाती है उसे निष्कर्ष कहते हैं तथा जिन वाक्यों की सत्यता के आधार पर निष्कर्ष की सत्यता व्युत्पन्न की जाती है उन्हें आधार वाक्य कहते हैं । तर्कशास्त्र का संबंध युक्तियों की वैधता-अवैधता के प्रश्न के साथ ही है । युक्तियाँ कब वैध होती हैं और कब अवैध, यही बताना तर्कशास्त्र का कार्य है । वैध युक्तियों के निर्माण के लिए तर्कशास्त्र हमारे समक्ष कुछ नियम रखता है तथा कुछ वैसी विधियों को प्रस्तुत करता है जिनके सहारे हम यह जाँच कर सकते हैं कि कोई युक्ति वैध है या नहीं ।

3.3 मुख्य विषय की व्याख्या

युक्ति के स्वरूप को स्पष्ट करने के पूर्व तर्कवाक्य के स्वरूप पर प्रकाश डालना आवश्यक है ।

3.3.1 तर्कवाक्य का स्वरूप :

तर्कशास्त्र की विषय-वस्तु अनुमान है । अनुमान करना एक क्रिया है, जिसमें एक या उससे अधिक तर्कवाक्यों के आधार पर किसी तर्कवाक्य का विधान किया जाता है ।'' Inferring is an activity in which one proposition is affirmed on the basis of one or more other Propositions that are accepted as the starting point of the process. The Logician is not concerned with the Process of inference, but with the propositions that are the initial and end points of that process, and the relationships between them"—(I. M. Copi, Symbolic Logic, Page–2) तर्कशास्त्र का संबंध अनुमान की क्रिया से नहीं है अपितु उन तर्कवाक्यों से है, जो उस क्रिया का आरंभ बिन्दु है तथा परिणाम है और तर्कवाक्यों के बीच जो संबंध है उनसे है । जैसे–

सभी चित्रकार कलाकार हैं – (1)

श्याम चित्रकार है, – (2)

अत: श्याम एक कलाकार है – (3)

यह अनुमान या तर्कना का उदाहरण है । मेरे अनुमान करने में कौन-सी मानसिक क्रियाएँ हुईं, इससे तर्कशास्त्र का कोई संबंध नहीं है । इसका संबंध इससे है कि (1), (2) तथा (3) का स्वरूप क्या है तथा इनमें क्या संबंध है ।

अब स्वभावत: प्रश्न उठता है कि अनुमान में तर्कवाक्यों या प्रकथनों का प्रयोग किया जाता है तो प्रकथन या तर्कवाक्य क्या है ? जब किसी निर्णय को भाषा में व्यक्त किया जाता है तो उसे तर्कवाक्य कहते हैं । जैसे–''सभी विद्यार्थी पढ़ने में तेज हैं ।'' इस प्रकथन में विद्यार्थी के विषय में कुछ कहा गया है । तर्कवाक्य और प्रकथन समानार्थक हैं ।

तर्कवाक्य के तीन अंग होते हैं–उद्देश्य, विधेय तथा संयोजक । जैसे–मनुष्य मरणशील है । उद्देश्य वह है जिसके विषय में कुछ कहा जाता है । इस तर्कवाक्य में मनुष्य के विषय में मरणशील होने की बात कही गई है । विधेय वह है जो उद्देश्य के बारे में कहा जाता है । उपरोक्त उदाहरण में 'मरणशील' विधेय पद है । संयोजक वह है जो उद्देश्य और विधेय में संबंध स्थापित करता है । उपरोक्त उदाहरण में 'है' संयोजक है ।

तर्कवाक्य सत्य या असत्य हो सकते हैं । सत्यता और असत्यता तर्कवाक्य या प्रकथन के गुण हैं । इसी गुण या विशेषता के कारण तर्कवाक्य प्रश्नों, आदेशों तथा विस्मयों से भिन्न होते हैं । जैसे–'तुम कहाँ जा रहे हो' यह एक प्रश्न-बाचक वाक्य है, जिसके संबंध में सत्यता अथवा असत्यता का प्रश्न ही नहीं उठता है । ''दरवाजा बन्द कर दो'' यह एक आदेश है जिसके संबंध में भी सत्यता अथवा असत्यता का प्रश्न नहीं उठता है । साथ ही विस्मयों (exclamations) के संबंध में जैसे–ओह ! वाह ! आदि के संबंध में भी सत्यता अथवा असत्यता का प्रश्न नहीं उठता है । पर 'श्याम कॉलेज

में पढ़ता है' एक प्रकथन है, यह सत्य हो सकता है या असत्य भी । प्रश्न, आदेश, विस्मय आदि को भाषा में वाक्यों द्वारा व्यक्त किया जाता है । व्याकरण में उनका वर्गीकरण कई प्रकार के वाक्यों में होता है जैसे–प्रश्नवाचक वाक्य, आज्ञावाचक वाक्य, विस्मयवाचक वाक्य तथा सूचनार्थक वाक्य । व्याकरण की दृष्टि से 'श्याम कॉलेज में पढ़ता है' सूचनार्थक वाक्य है। ऐसे वाक्यों से कोई सूचना मिलती है । सूचनार्थक वाक्य तर्कवाक्य की तरह है फिर भी दोनों में अन्तर है । एक ही सूचनार्थक वाक्य के भिन्न-भिन्न प्रसंगों में भिन्न अर्थ हो सकते हैं । जैसे ''यह कलम बहुत मूल्यवान है'' इस वाक्य का अलग-अलग लोगों की दृष्टि में अलग-अलग अर्थ होता है । परन्तु तार्किक वाक्य का एक ही अर्थ होता है । तार्किक वाक्य सत्य या असत्य होते हैं लेकिन व्याकरण के सूचनार्थक वाक्य शुद्ध या अशुद्ध हो सकते हैं । तार्किक वाक्य के तीन अंग होते हैं–उद्देश्य, विधेय तथा संयोजक । जबकि व्याकरण के वाक्य के दो अंग उद्देश्य तथा विधेय (कर्त्ता या क्रिया) होते हैं।

अत: स्पष्ट है कि अनुमान या तर्कना के घटक तर्कवाक्य या प्रकथन हैं । प्रत्येक अनुमान के लिए एक युक्ति का प्रयोग किया जाता है और तर्कशास्त्र का संबंध इन्हीं युक्तियों से होता है । "Propositions are the constituents of inference and corresponding to every possible inference is an argument and it is with these arguments that Logic is chiefly concerned".–(I. M. Copi, Symbolic Logic, Page–2)

3.3.2 युक्ति का स्वरूप

युक्ति कुछ तर्कवाक्यों का समूह है जिसमें से एक तर्कवाक्य अन्य तर्कवाक्यों से निष्पादति होता है तथा अन्य तर्कवाक्य उस निष्कर्ष तर्कवाक्य की सत्यता के लिए प्रमाण प्रस्तुत करता है । I. M. Copi के अनुसार– "An argument may be defined as any group of propositions or statements of which one is claimed to follow from the others, which are alleged to provide grounds for the truth of that one" (Symbolic Logic, Page–2)

जैसे–

सभी मुनष्य मरणशील हैं – (1)

राम एक मनुष्य है – (2)

अत: राम मरणशील है – (3)

उपरोक्त युक्ति में तीन तर्कवाक्य हैं, जिसमें (1) और (2) आधार वाक्य हैं तथा (3) निष्कर्ष है । (3) निष्कर्ष को (1) तथा (2) से निष्पादित किया गया है । अर्थात् किसी भी युक्ति में आधारवाक्य एवं निष्कर्ष होते हैं ।

आधार वाक्य तथा निष्कर्ष सापेक्ष होते हैं । एक ही प्रकथन यदि एक युक्ति में आधार वाक्य होता है तो दूसरी युक्ति में निष्कर्ष भी हो सकता है । उदाहरणस्वरूप :

(i) सभी मनुष्य मरणशील हैं

सुकरात एक मनुष्य है

अत: सुकरात मरणशील है

इस युक्ति में ''सभी मनुष्य मरणशील है'' एक आधार वाक्य है ।

(ii) सभी पशु मरणशील हैं

सभी मनुष्य पशु हैं

अत: सभी मनुष्य मरणशील हैं ।

इस युक्ति में ''सभी मनुष्य मरणशील हैं'' निष्कर्ष है ।

युक्तियाँ दो प्रकार की होती हैं–निगमनात्मक तथा आगमनात्मक । इन दोनों प्रकार की युक्तियों के निष्कर्ष के लिए प्रमाण आधार वाक्य ही होते हैं ।

निगमनात्मक युक्ति उसे कहा जाता है जिसमें आधारवाक्य निष्कर्ष की सत्यता के लिए निश्चित प्रमाण प्रस्तुत करते हैं । उदाहरणस्वरूप :

सभी मनुष्य मरणशील हैं

राम एक मनुष्य है

अत: राम मरणशील है ।

निगमनात्मक युक्ति के आधार वाक्य को स्वत: सिद्ध माना जाता है तथा आधार वाक्य निष्कर्ष की सत्यता के लिए निश्चित प्रमाण प्रस्तुत करता है इसका संबंध केवल आकारिक सत्यता से है । I. M. Copi के अनुसार "Only a deductive argument involves the claim that its premisses provide absolutely conclusive ground".(Symbolic Logic, P–3) निगमनात्मक युक्ति के संदर्भ में ही वैधता तथा अवैधता का प्रश्न उठता है अर्थात् निगमनात्मक युक्ति या तो वैध होते हैं या अवैध ।

आगमनात्मक युक्ति वह है, जिसमें आधार वाक्य निष्कर्ष की सत्यता के लिए आंशिक प्रमाण प्रस्तुत करता है । यहाँ आधार वाक्य अनुभव पर आधारित होता है । उदाहरणस्वरूप :

राम स्वार्थी है

श्याम स्वार्थी है

अत: सभी मनुष्य स्वार्थी हैं ।

आगमनात्मक युक्ति में अनुभव पर आधारित सामान्यीकरण होता है । इसलिए इसके निष्कर्ष निश्चित नहीं होकर संभाव्य होतो हैं । रसेल ने भी कहा था कि आगमन का सामान्यीकरण संभाव्य होता है । वैध तथा अवैध का प्रयोग आगमनात्मक युक्ति के लिए नहीं होगा क्योंकि यहाँ निष्कर्ष संभाव्य होता है । अत: आगमनात्मक युक्तियाँ वैध तथा अवैध नहीं बल्कि अधिक संभाव्य या कम संभाव्य होती हैं ।

3.3.3 सत्यता तथा वैधता :

सत्यता अथवा असत्यता तर्कवाक्यों अथवा प्रकथनों की विशेषता है, युक्तियों की नहीं । दूसरे शब्दों में, तर्कवाक्य या प्रकथन सत्य या असत्य हो सकते हैं । वैधता अथवा अवैद्यता युक्तियों की विशेषता है । कोई भी युक्ति वैध होता है या अवैध । हम जानते हैं कि तर्कवाक्यों के समूह को ही युक्ति कहा जाता है इसलिए सत्यता तथा वैधता के बीच आवश्यक संबंध है । अब प्रश्न उठता है कि किसी भी निगमनात्मक युक्ति को वैध कब कहा जाएगा तथा अवैध कब कहा जाएगा ? किसी भी निगमनात्मक युक्ति को वैध तब कहा जाएगा, जब उसके आधार वाक्य और निष्कर्ष इस रूप में संबंधित हो कि आधारवाक्य के लिए सत्य होना तब तक असंभव है, जब तक कि उसका निष्कर्ष भी सत्य नहीं हो । अर्थात् अगर आधार वाक्य सत्य होगा तो निष्कर्ष भी सत्य होगा, तब वह युक्ति वैध कहलायेगी उदाहरण स्वरूप :

सभी मनुष्य मरणशील हैं – सत्य

राम एक मनुष्य है – सत्य

अत: राम मरणशील है – सत्य

अत: उपरोक्त युक्ति वैध है ।

किसी भी निगमनात्मक युक्ति को अवैध तब कहा जाता है, जब उसके आधार वाक्य एवं निष्कर्ष इस रूप में संबंधित हो कि आधार वाक्य सत्य हो एवं निष्कर्ष असत्य हो– उदाहरण स्वरूप :

यदि टाटा कुलपति हैं तो प्रसिद्ध हैं – सत्य

टाटा कुलपति नहीं हैं – सत्य

अत: टाटा प्रसिद्ध नहीं है – असत्य

उपरोक्त उदाहरण के दोनों आधार वाक्य सत्य हैं तथा निष्कर्ष असत्य हैं । अत: यह युक्ति अवैध है ।

किसी भी युक्ति में तर्कवाक्यों का प्रयोग होता है । इसलिए, किसी भी युक्ति के वैधता और अवैधता तथा प्रकथन के सत्यता और असत्यता में आवश्यक संबंध होते हैं ।

कुछ युक्तियाँ ऐसी होती हैं जिसके सभी तर्कवाक्य सत्य होते हैं तथा वह युक्ति वैध होते है–

उदाहरणस्वरूप–

सभी मनुष्य मरणशील हैं – सत्य A

राम एक मनुष्य है – सत्य A

अत: राम मरणशील है – सत्य A

यह युक्ति वैध है । अरस्तू के अनुसार भी यह युक्ति वैध है यह न्याय के प्रथम आकार की युक्ति है, इसे 'B A R B A R A' कहते हैं ।

लेकिन कुछ युक्तियाँ ऐसी होती हैं जिसके सभी के सभी तर्कवाक्य असत्य होते हैं लेकिन वे वैध होते हैं–उदाहरणस्वरूप :

सभी मनुष्य अंधा हैं – असत्य A

सभी हाथी मनुष्य हैं – असत्य A

अत: सभी हाथी अंधा हैं – असत्य A

यह एक वैध युक्ति है । अरस्तू ने इसका नामकरण "B A R B A AR A' कह कर दिया है ।

I. M. Copi के अनुसार, "The validity of an argument does not, therefore, guarantee the truth of its conclusion". — (Symbolic Logic–P–4)

अर्थात् किसी भी युक्ति की वैधता उसके निष्कर्ष की सत्यता का प्रमाण नहीं है ।

निष्कर्ष को किसी भी युक्ति में सत्य होने के लिए उस युक्ति के द्वारा दो शर्त्तों की पूर्ति आवश्यक है–

(i) युक्ति को वैध होना चाहिए ।

(ii) उसके सभी के सभी आधार वाक्यों को सत्य होना चाहिए

जैसे–

All men are rational – True

All Indians are men – True

All Indians are rational – True

यह युक्ति दोनों शर्त्तों को पूरा कर रही है । यह युक्ति वैध है तथा इसके आधार वाक्य सत्य हैं । अत: निष्कर्ष निश्चित रूप से सत्य होगा ।

All cats are rats – False

All dogs are Cats – False

All Dogs are rats – False

(ii) युक्ति

(अ) वैध या अवैध हो सकते हैं

(ब) सत्य या असत्य हो सकते हैं

(स) शुद्ध या अशुद्ध होते हैं

(द) उपरोक्त सभी ।

उत्तर : (अ)

(iii) निगमनात्मक युक्ति के निष्कर्ष

(अ) संभाव्य होते हैं

(ब) निश्चित होते हैं

(स) अनिश्चित होते हैं

(द) उपरोक्त में से कोई नहीं ।

उत्तर : (ब)

(iv) आगमनात्मक युक्ति के निष्कर्ष

(अ) संभाव्य होते हैं

(ब) निश्चित होते हैं

(स) वैध होते हैं

(द) उपरोक्त में से कोई नहीं ।

उत्तर : (अ)

3.6.2 लघु उत्तरीय प्रश्न

(i) तर्कवाक्य के स्वरूप को स्पष्ट करें ।

(ii) सत्यता एवं वैधता को स्पष्ट करें ।

(iii) निगमनात्मक युक्ति तथा आगमनात्मक युक्ति को स्पष्ट करें ।

3.6.3 दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

(i) युक्ति के स्वरूप पर प्रकश डालें ।

3.7 प्रस्तावित पाठ

(i) आइ० एम० कापी : प्रतीकात्मक तर्कशास्त्र

(ii) डा० केदारनाथ तिवारी : प्रतीकात्मक तर्कशास्त्र : एक सरल परिचय

✠✠✠

सरल एवं यौगिक प्रकथन

पाठ संरचना

4.1 उद्देश्य
4.2 विषय-प्रवेश
4.3 मुख्य विषय की व्याख्या
4.3.1 सरल तथा जटिल प्रकथन
4.3.2 सत्यता-फलित तथा अ-सत्यता फलित प्रतिज्ञप्तियाँ
4.3.3 सत्यता-फलनक संबंध
4.4 सारांश
4.5 पाठ में प्रयुक्त शब्द
4.6 अभ्यास के लिए प्रश्न
4.6.1 वस्तुनिष्ठ प्रश्न
4.6.2 लघु उत्तरीय प्रश्न
4.6.3 दीर्घ उत्तरीय प्रश्न
4.7 प्रस्तावित पाठ

4.1 उद्देश्य

प्रस्तुत पाठ का उद्देश्य सरल एवं यौगिक प्रकथन की अवधारणा पर प्रकाश डालना है । तर्कशास्त्र के अन्तर्गत सरल एवं यौगिक प्रकथन के स्वरूप के विषय में अध्ययन किया जाता है । सरल तर्कवाक्यों को विभिन्न विधियों द्वारा संबंधित कर यौगिक तर्कवाक्यों की रचना की जाती है ।

4.2 विषय – प्रवेश

प्रकथन वह है, जिसे सार्थक ढंग से सत्य अथवा असत्य कहा जा सकता है । उदाहरण के लिए, 'राम कॉलेज में पढ़ता है', 'कलम लाल है', 'लड़का सुन्दर है', 'श्याम कलाकार है', 'मनुष्य विवेकशील प्राणी हैं', 'यह कलम है, आदि ऐसे प्रकथन हैं जिनके संबंध में अर्थपूर्ण ढंग से सत्यता-असत्यता का प्रश्न उठाया जा सकता है तथा जिन्हें सत्य अथवा असत्य कहा जा सकता है । परन्तु प्रश्नवाचक, आज्ञासूचक, विस्मयादि बोधक आदि वाक्य न तो सत्य होते हैं और न असत्य। उदाहरणस्वरूप, 'तुम कहाँ जा रहे हो' ?, 'दरवाजा बन्द करो', 'चोरी नहीं करना चाहिए', 'वाह ! यह फूल कितना सुन्दर है ।' आदि वाक्य के संबंध में अर्थपूर्ण ढंग से न तो सत्य कहा जा सकता है और न असत्य कहा जा सकता है

अर्थात् ऐसे वाक्यों के साथ सत्यता-असत्यता का कोई सवाल ही पैदा नहीं होता । सिर्फ विवरणात्मक या सूचनात्मक वाक्य ही ऐसे वाक्य हैं जो सत्य या असत्य होते हैं । ऐसे ही वाक्यों को हम प्रकथन या प्रतिज्ञप्ति कहते हैं । एक दृष्टिकोण से प्रकथनों को हम दो वर्गों में विभाजित कर सकते हैं–सरल तथा यौगिक प्रकथन । सरल प्रकथन वे हैं, जिसमें सिर्फ एक ही प्रकथन हो, जैसे–'कलम लाल है', 'राम पढ़ने में तेज है, 'पेपर उजला है' आदि । जटिल या यौगिक प्रकथन वह है जिसमें एक से अधिक प्रकथन होता है । जैसे–'कलम लाल है और पेपर उजला है, राम या तो पढ़ने में तेज है या मेहनती है, आदि । सरल प्रकथनों को चार विधियों के द्वारा संबंधित कर यौगिक प्रकथनों का निर्माण किया जाता है–संयोजन, निषेधात्मक प्रकथन, वियोजन तथा सोपाधिक प्रकथन ।

4.3 मुख्य विषय की व्याख्या

4.3.1 सरल तथा जटिल प्रकथन :

तर्कशास्त्र के अर्न्तगत सारे प्रकथनों को दो भागों में बाँटा जा सकता है–सरल तथा जटिल प्रकथन । सरल प्रकथन वे हैं जिनके अन्दर घटक रूप में अन्य प्रतिज्ञप्तियाँ न हों । "A Simple statement is one that does not contain any other statement as a component part". (I. M. copi, Symbolic Logic, P–8)

उदाहरणस्वरूप :

राम कॉलेज जा रहा है ।

श्याम स्कूल जा रहा है ।

कलम लाल है ।

राम पढ़ने में तेज है ।

मोहन एक अच्छा लड़का है । आदि

उपरोक्त सारे प्रकथन सरल हैं । क्योंकि इन प्रतिज्ञप्तियों के निर्मायक अंग (Component part) के रूप में कोई अन्य प्रतिज्ञप्ति नहीं हैं ।

जटिल प्रतिज्ञप्तियाँ वे हैं जिनके अन्दर घटक रूप (Component part) के रूप में एक से अधिक प्रतिज्ञप्तियाँ हों। "Compound statement is one that does contain another statement as a component part." (I. M. Copi, Symbolic Logic, P–8)

उदाहरणस्वरूप :

राम कॉलेज जा रहा है और श्याम स्कूल जा रहा है ।

श्याम या तो पढ़ने में तेज है या मेहनती है ।

यदि सूर्य है तो प्रकाश है ।

राम अमीर नहीं है । आदि ।

उपरोक्त सारी प्रतिज्ञप्ति जटिल हैं क्योंकि इन प्रतिज्ञप्तियों के निर्मायक अंग के रूप में अन्य प्रतिज्ञप्ति भी हैं ।

अर्थात्, सरल तथा जटिल प्रतिज्ञप्ति या तो सत्य होती हैं या असत्य । इन प्रतिज्ञप्तियों को जो 'सत्य', और 'असत्य' नामक दो तार्किक मूल्य दिये जाते हैं उन्हें उनकी सत्यता कहते हैं । एक सत्य वाक्य का सत्यता–मूल्य होता है 'सत्य' तथा एक 'असत्य' वाक्य का 'असत्य' ।

4.3.2 सत्यता-फलित तथा अ-सत्यता फलित प्रतिज्ञप्तियाँ :

जटिल प्रतिज्ञप्तियों को फिर एक दृष्टिकोण से हम दो भागों में विभाजित कर सकते हैं–

(i) सत्यताफलित (Truth–functional)

(ii) अ–सत्यता–फलित (Non-truth functional)

सत्यता–फलित जटिल प्रकथन उसे कहा जाता है, जिसकी सत्यता या असत्यता उसके निर्मायक अंगों की सत्यता या असत्यता के द्वारा निर्धारित होती है । अर्थात् जिन जटिल प्रतिज्ञप्तियों का सत्यता–मूल्य पूर्णत: उनकी घटक प्रतिज्ञप्तियों के सत्यता–मूल्यों के द्वारा निर्धारित होता है उन्हें हम सत्यता–फलित जटिल प्रतिज्ञप्ति कहते हैं । उदाहरणस्वरूप 'कलम लाल है और पेपर उजला है' एक सत्यता–फलित जटिल प्रतिज्ञप्ति है, इसका सत्यता–मूल्य पूर्णत: इसकी दोनों घटक प्रतिज्ञप्तियों के सत्यता–मूल्यों पर निर्भर करता है अथवा उन्हीं के द्वारा निर्धारित होता है । हमारा यह प्रकथन 'कलम लाल है और पेपर उजला है' तभी सत्य होगा, जब इसकी दोनों ही घटक प्रतिज्ञप्तियाँ–'कलम लाल है' तथा 'पेपर उजला है' सत्य हों । यदि इनमें से एक भी असत्य हो तो फिर हमारी उपरोक्त जटिल प्रतिज्ञप्ति असत्य हो जाएगी । इस प्रकार, हमारी मिश्र प्रतिज्ञप्ति सत्य है या असत्य यह पूर्णत: इस बात पर निर्भर करता है कि इसकी घटक प्रतिज्ञप्तियाँ सत्य हैं या असत्य । ऐसी ही जटिल प्रतिज्ञप्ति को सत्यता–फलित मिश्र प्रतिज्ञप्ति कहते हैं । प्रत्येक सत्यता–फलित मिश्र प्रतिज्ञप्ति अपनी घटक प्रतिज्ञप्तियों का सत्यता–फलन कहलाती है । जैसे 'कलम लाल है और पेपर उजला है', मिश्र प्रतिज्ञप्ति 'कलम लाल है' और 'पेपर उजला है' इन दो सरल प्रतिज्ञप्तियों का सत्यता–फलन है । 'फलन' की धारणा वास्तव में गणित में बहुत प्रचलित है । वहीं से इसे प्रतीकात्मक तर्कशास्त्र में लिया गया है ।

असत्यता–फलित जटिल प्रतिज्ञप्ति उसे कहा जाता है जिसकी सत्यता या असत्यता उसके निर्मायक अंशों की सत्यता या असत्यता के द्वारा निर्धारित नहीं होती है अर्थात् जिन जटिल प्रतिज्ञप्तियों का सत्यता मूल्य उनकी घटक–प्रतिज्ञप्तियों के सत्यता–मूल्यों के द्वारा निर्धारित नहीं होता, अर्थात् उनपर निर्भर नहीं करता उन्हें हम अ–सत्यता–फलित मिश्र प्रतिज्ञप्ति कहते हैं । जैसे–

'Percival Lowell believed that mars is inhabited' यह एक अ–सत्यता–फलित जटिल प्रतिज्ञप्ति है चूँकि इस प्रतिज्ञप्ति का सत्यता–मूल्य इसकी घटक प्रतिज्ञप्ति 'Mars is inhabited' के सत्यता–मूल्य पर निर्भर नहीं करती । उसका सत्य या असत्य होना किसी भी प्रकार 'Mars is inhabited' के सत्य या असत्य होने पर निर्भर नहीं करता ।

4.3.3 सत्यता–फलनक संबंधक :

जिन शब्दों या शब्द–समूहों के द्वारा घटक प्रतिज्ञप्तियों को मिलाकर जटिल प्रतिज्ञप्तियाँ बनाई जाती हैं उन्हें संबंधक कहते हैं तथा जिनके द्वारा सत्यता–फलित मिश्र प्रतिज्ञप्तियाँ बनाई जाती हैं उन्हें 'सत्यता–फलनक संबंधक' कहते हैं । 'और', 'नहीं', 'या', 'यदि–तो', 'यदि और सिर्फ यदि' तथा इनके अनुरूप अन्य संबंधक सत्यता फलनक संबंधक हैं । आकारिक तर्कशास्त्र के दृष्टिकोण से ये संबंधक ही सत्यता–फलित जटिल प्रतिज्ञप्तियों की रीढ़ होते हैं । वस्तुत: इन्हीं के द्वारा इन प्रतिज्ञप्तियों के आकार निर्धारित किये जाते हैं ।

प्रतीकात्मक तर्कशास्त्र संबंधकों का प्रयोग उनके प्राकृतिक रूप में नहीं बल्कि कुछ प्रतीकों के माध्यम से करता है। वे प्रतीक निम्नलिखित हैं–

(i) 'और' का प्रतीक है – '•'

(ii) 'या' का प्रतीक है – 'V'

(iii) 'नहीं' का प्रतीक है – '~'

(iv) 'यदि–तो' का प्रतीक है – '⊃'

(v) 'यदि और सिर्फ यदि' का प्रतीक है – '≡'

सरल प्रतिज्ञप्तियों को निम्न विधियों के द्वारा संबंधित कर यौगिक प्रतिज्ञप्तियों का निर्माण किया जाता है–

(i) संयोजन (Conjunction) :

जब दो या दो से अधिक सरल प्रतिज्ञप्तियों के बीच 'और' या 'तथा' शब्द लगाकर एक जटिल प्रतिज्ञप्ति की रचना की जाती है तो उस जटिल प्रतिज्ञप्ति को 'संयोजन' कहा जाता है तथा उसके घटकों को 'संयुक्त' कहा जाता है । उदाहरणार्थ जब हम कहते हैं–'कलम लाल है और पेपर उजला है' यह एक यौगिक प्रतिज्ञप्ति है जिसे संयोजक कहा जाएगा क्योंकि इसके दोनों घटकों को 'और' के द्वारा संबंधित कर एक जटिल प्रतिज्ञप्ति का निर्माण किया गया है । प्रतीकात्मक तर्कशास्त्र में 'और' के लिए ' • ' प्रतीक का प्रयोग किया जाता है । अर्थात उपरोक्त उदाहरण को इस प्रकार लिखा जा सकता है–'कलम लाल है • पेपर उजला है, इस संयोजन प्रतिज्ञप्ति एक एक संयुक्त–'कलम लाल है' को 'प' मान लिया जाए तथा दूसरा संयुक्त 'पेपर उजला है' को 'फ' मान लिया जाए तो उपरोक्त संयोजन का प्रतीकात्मक रूप होगा–'प • फ'। 'प • फ' को हम संयोजन प्रतिज्ञप्ति-आकार कह सकते हैं तथा 'प' और 'फ़' के स्थान पर निश्चित प्रतिज्ञप्तियों को प्रतिस्थापित कर देने पर जो संयोजन प्रतिज्ञप्ति बनती है वह उसका प्रतिस्थापित दृष्टान्त है ।

(ii) वियोजन (Disjunction)–

यदि दो या दो से अधिक सरल प्रतिज्ञप्तियों को 'या' (Either, or) लगाकर संबंधित कर कोई जटिल प्रतिज्ञप्ति बनायी जाती है तो उसे वियोजन कहा जाता है तथा उसके घटकों को 'वियुक्त' अथवा 'विकल्प' । उदाहरणार्थ जब हम कहते है–'राम अमीर है या तेज है' यह एक जटिल वियोजन प्रतिज्ञप्ति है । प्रतीकात्मक तर्कशास्त्र में 'या' के लिए 'V' (wedge) प्रतीक का प्रयोग किया जाता है । यदि 'राम अमीर है' सरल वियुक्त के लिए 'प' तथा 'राम तेज है' के लिए 'फ' माना जाए तो इसका प्रतीकात्मक आकार होगा 'प V फ' । यह 'प V फ' वियोजन प्रतिज्ञप्ति आकार है ।

(iii) निषेधात्मक प्रतिज्ञप्ति (Negation) :

'नहीं' संबंधक से बनी जटिल प्रतिज्ञप्ति को निषेधात्मक प्रतिज्ञप्ति कहते हैं । यह एक सत्यता-फलित मिश्र प्रतिज्ञप्ति होती है चूँकि इसका सत्यता मूल्य इसकी घटक भावात्मक प्रतिज्ञप्ति पर निर्भर करता है । उदाहरण के लिए यदि हम कहें कि 'राम स्वार्थी नहीं है' तो इस निषेधात्मक प्रतिज्ञप्ति का सत्यता मूल्य इसकी घटक भावात्मक प्रतिज्ञप्ति 'राम स्वार्थी है' के सत्यता मूल्य पर निर्भर करता है । यदि 'राम स्वार्थी है' सत्य है तो 'राम स्वार्थी नहीं है' असत्य होगा और यदि 'राम स्वार्थी है' असत्य है तो 'राम स्वार्थी नहीं है' सत्य होगा । एक सत्य भावात्मक प्रतिज्ञप्ति का निषेध असत्य होता है तथा एक असत्य भावात्मक प्रतिज्ञप्ति का निषेध सत्य । प्रतीकात्मक तर्कशास्त्र में निषेध के लिए ' ~ ' (Tilde या Curl) प्रतीक का प्रयोग किया जाता हैं । जब हम कहते है कि 'राम स्वार्थी नहीं है' तो इसके लिए ~ (राम स्वार्थी है) लिखा जा सकता है । 'राम स्वार्थी है' को 'प' आकार दिया जाए तो इसका प्रतीकात्मक आकार होगा–'~प' ।

(iv) सोपाधिक प्रतिज्ञप्ति (Conditional statement)

'यदि–तो' संबंधक से बनी जटिल प्रतिज्ञप्ति को 'सोपाधिक' प्रतिज्ञप्ति कहते हैं । फिर 'यदि' और 'तो' के बीच वाले घटक को 'पूर्ववर्ती' या 'आपादक' तथा 'तो' के बाद वाले घटक को अनुवर्ती अथवा 'आपाध' कहते हैं । उदाहरणार्थ 'यदि सूर्य है तो प्रकाश है' एक सोपाधिक प्रतिज्ञप्ति है, जिसमें 'सूर्य है' 'पूर्ववर्ती' तथा 'प्रकाश है' को अनुवर्ती कहा जाता है । प्रतीकात्मक तर्कशास्त्र के अन्तर्गत 'या–तो' के लिए '⊃' (Horse shoe) प्रतीक का प्रयोग किया जाता है । उपरोक्त उदाहरण का प्रतीकात्मक आकार होगा । 'P ⊃ q' अर्थात 'p⊃q' में 'P' पूर्ववर्ती घटक है तथा 'q' अनुवर्ती घटक है ।

(v) उभयोपाधिक प्रतिज्ञप्ति (Equivalent statement)

'यदि और सिर्फ यदि' संबंधक से बनी जटिल प्रतिज्ञप्ति 'उभयोपाधिक प्रतिज्ञप्ति' कहलाती हैं चूकि इसके दोनों घटक एक दूसरे को आपादित करते हैं । घटकों को एक दूसरे के तुल्य (या अधिक निश्चित रूप में वस्तुगत रूप में तुल्य) कहा जाता है । यदि P तथा q किन्हीं दो घटक प्रतिज्ञप्तियों के प्रतीक हों तो उभयोपाधिक प्रतिज्ञप्ति का सामान्य रूप होगा 'P=q'.

कभी-कभी हमारे समक्ष ऐसी भी सत्यता-फलित जटिल प्रतिज्ञप्तियाँ उपस्थित हो सकती हैं जो ' • ' ' ~ ', 'V'

आदि सत्यता फलनक संबंधकों से बनी कई छोटी-छोटी सत्यता-फलित प्रतिज्ञप्तियों का मिश्रण हो । यहाँ यदि हम सीधे प्रतिज्ञप्ति-परिवर्तियों तथा सत्यता-फलनक संबंधकों का प्रयोग करते चले जाएं तो सत्यता-फलित जटिल प्रतिज्ञप्ति को जो रूप हमारे समक्ष आयेग वह बड़ा ही अनिश्चित होगा तथा उसके सत्यता-मूल्य के निर्धारण में भी हमें एक अनिश्चितता का सामना करना पड़ेगा । इन कठिनाइयों से बचने के लिए गणित की तरह प्रतीकात्मक तर्कशास्त्र में भी हम कोष्ठकों का प्रयोग करते हैं । उदाहरणार्थ, यदि हमारे समक्ष एक सत्यता-फलित जटिल प्रतिज्ञप्ति 'P • q V r' रख दी जाए तो हमारे समक्ष कठिनाई उत्पन्न हो जाएगी । यहाँ हम 'P. q' v r का वियोजन या P• 'qvr' का संयोजन समझें परन्तु यदि कोष्ठकों का प्रयोग कर उपर्युक्त प्रतिज्ञप्ति को हम इस प्रकार लिखे–(p . q) v r या p . (qvr) तो दोनों ही स्थिति में प्रतिज्ञप्ति का रूप हमारे समक्ष स्पष्ट है तथा इसके सत्यता-मूल्य का निर्धारण भी स्पष्ट रूप से किया जा सकता है ।

4.4 सारांश

उपर्युक्त विवेचना के आधार पर यह निष्कर्षत: कहा जा सकता है कि सरल प्रतिज्ञप्ति में केवल एक ही प्रकथन होता है किन्तु जटिल प्रतिज्ञप्ति में हमेशा एक से अधिक प्रकथन होगा । सरल प्रतिज्ञप्तियों को विभिन्न विधियों के द्वारा संबंधित कर यौगिक प्रतिज्ञप्ति की रचना की जाती है । प्रतीकात्मक तर्कशास्त्र के अन्तर्गत विशिष्ट प्रतीकों का प्रयोग कर सरल प्रतिज्ञप्तियों को संबंधित किया जाता है तथा जटिल प्रतिज्ञप्ति का निर्माण किया जाता है ।

4.5 पाठ में प्रयुक्त शब्द

यौगिक प्रतिज्ञप्ति
सरल प्रतिज्ञप्ति
सत्यता-फलित
अ-सत्यता-फलित
सत्यता-फलनक संबंधक
संयोजन
वियोजन
निषेधात्मक प्रतिज्ञप्ति
सोपाधिक प्रतिज्ञप्ति
उभयोपाधिक प्रतिज्ञप्ति

4.6 अभ्यास के लिए प्रश्न

4.6.1 वस्तुनिष्ठ प्रश्न

(i) जटिल प्रतिज्ञप्तियों में निर्मायक अंश होते हैं–

(अ) एक प्रतिज्ञप्ति
(ब) एक से अधिक प्रतिज्ञप्तियाँ
(स) एक भी प्रतिज्ञप्ति नहीं
(द) उपरोक्त में से कोई नहीं

उत्तर : (ब)

(ii) कौन ऐसा वाक्य है जिसके विषय में सार्थक ढंग से सत्य या असत्य कहा जा सकता है :

(अ) प्रश्नवाचक वाक्य

(ब) आज्ञासूचक वाक्य

(स) विस्मयादि बोधक वाक्य

(द) विवरणात्मक वाक्य

उत्तर : (द)

(iii) जिन जटिल प्रतिज्ञप्तियों का सत्यता-मूल्य उसके निर्मायक अंशों के सत्यता-मूल्य द्वारा निर्धारित होता है उसे कहते हैं

(अ) सत्यता-फलित प्रतिज्ञप्ति

(ब) अ-सत्यता-फलित प्रतिज्ञप्ति

(स) सरल प्रतिज्ञप्ति

(द) उपरोक्त में से कोई नहीं ।

उत्तर : (अ)

4.6.2 लघु उत्तरीय प्रश्न

(i) सत्यता-फलित प्रतिज्ञप्ति और अ-सत्यता-फलित प्रतिज्ञप्ति में अन्तर स्पष्ट करें ।

(ii) सत्यता-फलनक संबंधक को स्पष्ट करें ।

4.6.3 दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

(i) सरल एवं जटिल प्रतिज्ञप्तियों को स्पष्ट करें तथा उन विधियों का उल्लेख करें जिससे यौगिक प्रतिज्ञप्तियों की रचना की जाती है ।

4.7 प्रस्तावित पाठ

(i) आइ० एम० कापी : प्रतीकात्मक तर्कशास्त्र

(ii) डा० केदारनाथ तिवारी : प्रतीकात्मक तर्कशास्त्र : एक सरल परिचय

✠✠✠

और वियोजक (Disjunction) भी हैं । संयोजक प्रतिज्ञप्ति जटिल प्रतिज्ञप्ति का एक विशिष्ट रूप है जिसमें दो सरल प्रतिज्ञप्तियों को 'और' के द्वारा संबंधित किया जाता है । प्रतीकात्मक तर्कशास्त्र के अन्तर्गत 'और' के लिए ' • ' (Dot) का प्रयोग किया जाता है । 'P . q' संयोजक प्रतिज्ञप्ति है । इसका सत्यता-मूल्य इसके घटक सरल प्रतिज्ञप्तियों के सत्यता-मूल्य पर आधारित होता है । उसी प्रकार, वियोजक प्रतिज्ञप्ति भी जटिल प्रतिज्ञप्ति का एक विशिष्ट रूप है जिसमें दो सरल प्रतिज्ञप्तियों को 'या' के द्वारा संबंधित किया जाता है । प्रतीकात्मक तर्कशास्त्र के अन्तर्गत 'या' के लिए ('Either or') का प्रयोग किया जाता है । p v q वियोजन प्रतिज्ञप्ति है । इसका सत्यता-मूल्य भी इसकी घटक प्रतिज्ञप्तियों के सत्यता-मूल्य पर आधारित होता है ।

5.3 मुख्य-विषय की व्याख्या

संयोजक एवं वियोजक प्रतिज्ञप्तियों की व्याख्या के पूर्व वाक्य के स्वरूप तथा सत्यता-फलित प्रतिज्ञप्ति की विवेचना अपेक्षित है ।

5.3.1 सरल एवं जटिल प्रतिज्ञप्ति :

वह वाक्य जिसे सार्थक ढंग से सत्य या असत्य कहा जा सकता है, प्रतिज्ञप्ति कहलाता है । जैसे–कलम लाल है। मोहन अच्छा लड़का है । मैं कॉलेज जा रहा हूँ । आदि । प्रतिज्ञप्तियों का विभाजन दो रूपों में हुआ है–

सरल प्रतिज्ञप्ति (Simple Statement)

जटिल प्रतिज्ञप्ति (Compound Statement)

सरल प्रतिज्ञप्ति वह है जिसमें केवल एक अभिकथन होते हैं तथा इसके घटक के रूप में अन्य कोई अभिकथन या वाक्य जुड़ा नहीं होता है । जैसे कलम लाल है । पेपर उजला है । मनुष्य मरणशील है । आदि ।

इससे भिन्न जटिल प्रतिज्ञप्ति वह है जिसमें घटक के रूप में एक से अधिक सरल प्रतिज्ञप्तियाँ संयुक्त रहती हैं । दूसरे शब्दों में एक से अधिक सरल प्रतिज्ञप्तियों को विभिन्न रीतियों से जोड़कर जटिल प्रतिज्ञप्ति का निर्माण होता है । जैसे-कलम लाल है और पेपर उजला है । राम या तो पढ़ने में तेज है या मेहनती है । आदि ।

5.3.2 सत्यता-फलित प्रतिज्ञप्ति (Truth-Functional statement)

तर्कशास्त्र का मुख्य कार्य प्रतिज्ञप्तियों की सत्यता-असत्यता या युक्तियों की वैधता-अवैधता को निर्धारित करना है। अत: यहाँ केवल वैसे वाक्यों का प्रयोग होता है जिनका सत्यता-मूल्य हो । इस दृष्टिकोण से मिश्र वाक्य के दो प्रकार होते हैं–सत्यता-फलित जटिल प्रकथन तथा न-सत्यता-फलक मिश्र प्रकथन । जिस जटिल प्रतिज्ञप्ति का सत्यता-मूल्य पूरी तरह से उसके घटक सरल प्रकथनों के सत्यता-मूल्य के द्वारा निर्धारित होता हो, उसे सत्यता-फलित जटिल प्रतिज्ञप्ति कहते हैं । उदाहणस्वरूप :

राम मेहनती है या तेज है ।

कमल लाल है और पेपर उजला है ।

इससे भिन्न जिस प्रतिज्ञप्ति का सत्यता-मूल्य उसके निर्मायक सरल प्रकथनों द्वारा निर्धारित नहीं होता हो उसे न-सत्यता-फलित प्रतिज्ञप्ति (Non-truth functional statement) कहते हैं । जैसे–वह कहता है कि राम दिल्ली चला गया ।

यह स्पष्ट है कि प्रतीकात्मक तर्कशास्त्र के अन्तर्गत सत्यता-फलित जटिल प्रतिज्ञप्तियों का ही अध्ययन किया जाता है, न कि न-सत्यता-फलित मिश्र प्रतिज्ञप्तियों का ।

एक जटिल प्रतिज्ञप्ति के निर्माण में विभिन्न सरल प्रकथन को मूलरूप से 'और (And)', 'या (Either or)', यदि.

..तब (If.....then), 'यदि और सिर्फ यदि (If and only if)' के द्वारा संयुक्त किये जाते हैं । प्रतीकात्मक तर्कशास्त्र में वे शब्द या शब्द समूह जिससे सरल प्रतिज्ञप्ति आपस में जुड़ते हैं, संबंधक (Connectives) कहे जाते हैं तथा इनके लिये मुख्य रूप से निम्न प्रतीकों का प्रयोग किया जाता है–

And— ' • ' (Dott)

Either, or — ' V' (Wedge)

If.....then — ' ⊃ ' (Horse shoe)

If and only if — ' ≡ ' (Three bar)

Not — ' ~ ' (Tidle, Negation)

प्रतीकात्मक तर्कशास्त्र में इन्हीं संबंधक प्रतीकों के बल पर विभिन्न सरल प्रतिज्ञप्तियों को संयुक्त कर उनका सत्यता-मूल्य निर्धारित किया जाता है । प्रतिज्ञप्ति का वह मूल्य जिसके बल पर वह सत्य या असत्य सिद्ध होता है, सत्यता मूल्य कहलाता है । किसी प्रतिज्ञप्ति का सत्यता मूल्य या तो सत्य होता है या असत्य ।

उपरोक्त संबंधकों के प्रयोग के आधार पर प्रतीकात्मक तर्कशास्त्र के अन्तर्गत निम्नांकित जटिल प्रतिज्ञप्तियों का निर्माण और प्रयोग होता है–

(i) संयोजक प्रतिज्ञप्ति (Conjunction statement)

(ii) वियोजन प्रतिज्ञप्ति (Disjunctive statement)

(iii) हेत्वाश्रित प्रतिज्ञप्ति (Hypothetical statement)

(iv) तुल्य प्रतिज्ञप्ति (Equivalent statement)

(v) निषेधक प्रतिज्ञप्ति (Negative statement)

प्रस्तुत पाठ के अन्तर्गत हम प्रथम दो प्रतिज्ञप्ति-रूप संयोजक एवं वियोजक प्रतिज्ञप्तियों की व्याख्या करेंगे ।

5.3.3 संयोजक प्रतिज्ञप्ति :

'और' संबंधक के द्वारा बनी जटिल प्रतिज्ञप्ति को 'संयोजक प्रतिज्ञप्ति' तथा इसके घटकों को 'संयुक्त' कहा जाता है । अर्थात् संयोजक प्रतिज्ञप्ति जटिल प्रतिज्ञप्ति का एक विशिष्ट रूप है जिसमें दो सरल प्रतिज्ञप्ति 'और', ' . ' (Dott) संबंधक से जुड़ी होती हैं । 'और' के अनुरूप संबंधक हैं– 'एवं', 'तथा', 'लेकिन', 'यद्यपि', 'फिर भी', 'तौभी' आदि । 'और' के द्वारा जुड़ी सरल प्रतिज्ञप्तियों को 'संयुक्त' (Conjuncts) की संज्ञा दी जाती है । जैसे–लड़का तेज है और मनुष्य मरणशील है । इस जटिल प्रतिज्ञप्ति में 'लड़का तेज है' एक संयुक्त है तथा 'मनुष्य मरणशील है' दूसरा संयुक्त है । अब इन सरल संयुक्त को क्रमशः P और Q प्रतीक के रूप में व्यक्त करें तो प्रतीकात्मक तर्कशास्त्र में इस जटिल प्रतिज्ञप्ति का प्रतीकात्मक रूप होगा– 'P . Q' / 'p . q' किन्हीं भी दो घटक प्रतिज्ञप्तियों से बनी संयोजक प्रतिज्ञप्तियों का आकार हमारे समक्ष प्रस्तुत करता है । इसलिए इसे हम संयोजक प्रतिज्ञप्ति-आकार कह सकते हैं तथा P और q के स्थान पर निश्चित प्रतिज्ञप्तियों को प्रतिस्थापित कर देने पर जो संयोजक प्रतिज्ञप्ति बनती है उसे इसका प्रतिस्थापित दृष्टान्त ।

दो घटकों से बनी संयोजक प्रतिज्ञप्ति तभी और सिर्फ तभी सत्य होती है जब इसके दोनों घटक सत्य होते हैं, अन्य सभी स्थितियों में वह असत्य होती है । वस्तुतः संयोजक एक यौगिक प्रकथन है तथा इसका प्रतीक ' . ' (Dott) भी सत्यता-फलणीय संबंधक है । इस दृष्टि से इसका सत्यता-मूल्य इसके निर्मायक सरल प्रकथनों तथा संबंधक के सत्यता मूल्य के आधार पर निर्धारित होगा ।

दो घटकों से बनी संयोजक प्रतिज्ञप्ति तभी और सिर्फ तभी सत्य होती है जब इसके दोनों घटक सत्य होते हैं, अन्य सभी स्थितियों में वह असत्य होती है । अर्थात् कोई भी संयोजक सत्य तभी होता है, जब उसके सभी के सभी संयुक्त

(Conjuncts) सत्य होते हैं, अन्यथा असत्य होते हैं । जैसे P.q एक संयोजक प्रतिज्ञप्ति है । p. q तभी और सिर्फ तभी सत्य होगा जब P तथा q दोनों संयुक्त सत्य हों । P तथा q की सत्यता-असत्यता की समस्त संभावित शर्तों निम्नलिखित ही होंगी ।

(i) p तथा q दोनों सत्य हो ।

(ii) p सत्य तथा q असत्य हो ।

(iii) p असत्य तथा q सत्य हो ।

(iv) p तथा q दोनों असत्य हो ।

यहाँ उल्लेखनीय है कि संयोजक के सत्यता मूल्य तथा उसके संयुक्तक के सत्यता मूल्य में आवश्यक संबंध होता है । इस दृष्टि से एक संयोजक प्रतिज्ञप्ति केवल पहली स्थिति अर्थात् दोनों संयुक्तकों के सत्य होने पर ही सत्य होती है अन्यथा प्रत्येक स्थिति में इसका सत्यता-मूल्य असत्य ही होता है ।

यदि सत्यता-मूल्य को क्रमशः 'T' और 'F' प्रतीक से संकेत किया जाए तो p.q संयोजक प्रतिज्ञप्ति के सत्यता-मूल्य को निम्न सत्यता-सारणी के आधार पर भी निर्धारित किया जा सकता है–

'p . q' की सत्यता-सारणी :

P	q	P.q
T	T	T
T	F	F
F	T	F
F	F	F

उपरोक्त सारणी में 'T' सत्य का तथा 'F' असत्य का द्योतक है । प्रथम पंक्ति में p तथा q दोनों संयुक्तक 'T' अर्थात् सत्य है तो संयोजक भी सत्य (T) है । द्वितीय पंक्ति में P सत्य (T) तथा q असत्य (F) है, तो संयोजक असत्य है । तृतीय पंक्ति में P असत्य (F) तथा q सत्य (T) है तो संयोजक असत्य (F) है, चतुर्थ पंक्ति में दोनों संयुक्तकों को असत्य (F) किया गया तो संयोजक असत्य (F) है । इसीलिए 'और' संबंधक या '.' प्रतीक के प्रयोग से निर्मित यौगिक प्रतिज्ञप्ति की सत्यता-मूल्य के संबंध में एक सामान्य नियम बना दिया जाता है कि उसके प्रयोग द्वारा बनी जटिल प्रतिज्ञप्ति तभी सत्य होंगी जबकि उसके दोनों घटक सत्य हों ।

5.3.4 बियोजक प्रतिज्ञप्ति :

जब दो प्रतिज्ञप्तियों को 'या तो' अथवा 'V' के द्वारा संबोधित करके किसी जटिल प्रतिज्ञप्ति का निर्माण किया जाता है तो उसे ही वियोजक प्रतिज्ञप्ति कहा जाता है और जिन दो प्रतिज्ञप्तियों को इस रूप में संबोधित किया जाता है तो उसे वियुक्त (Disjunct) या विकल्प कहा जाता है । अर्थात् 'या' संबंधक से बनी जटिल प्रतिज्ञप्ति को 'वियोजक प्रतिज्ञप्ति' अथवा 'वैकल्पिक प्रतिज्ञप्ति' कहा जाता है तथा इसके घटकों को 'वियुक्त' अथवा 'विकल्प' । जैसे–राम स्वार्थी है या तेज है । यदि P तथा q को दोनों सरल प्रतिज्ञप्तियों के प्रतीक मानें तो उनसे बनी वैकल्पिक प्रतिज्ञप्ति का प्रतीक होगा 'p v q' ।

साधारण बोलचाल की भाषा में 'या' शब्द का व्यवहार दो अर्थों में होता है–समावेशी (Inclusive या Weak) तथा व्यावर्त्तक (Exclusive या strong) । जिस वियोजक वाक्य में दो विकल्पों में एक की सत्यता के अलावे अन्य कोई विकल्प की संभावना नहीं होती, वहाँ 'या' शब्द का उसके Exclusive या strong अर्थ में प्रयोग होता है । जैसे–होटल

में कीमत निश्चित रहने पर लिखा हो, 'भोजन के साथ चटनी या स्लाद मिलेगा' यहाँ दो विकल्पों में से किसी एक का चुनाव करने पर दूसरे का स्वभावत: विलोप हो जाता है । इससे भिन्न जहाँ 'या' शब्द के प्रयोग से विकल्प की एक तीसरी संभावना भी निकलती हो वहाँ 'या' शब्द का प्रयोग उसके Inclusive या weak अर्थ में होता है । जैसे– 'गरीब छात्र को छात्रवृत्ति दी जायेगी या मेधावी छात्र को छात्रवृत्ति दी जाएगी । यहाँ वाक्य विशेष में 'या' शब्द का एक तीसरा विकल्प भी गौण रहता है–'जहाँ गरीब तथा मेधावी दोनों गुणों से युक्त छात्र को छात्रवृत्ति दी जाएगी ।'

प्रतीकात्मक तर्कशास्त्र में 'या' संबंधक के लिए 'V' प्रतीक का प्रयोग समावेशी अर्थ के लिए होता है । समावेशी अर्थ में वियोजक प्रकथन को प्रतीकात्मक रूप में हम 'pvq' के रूप में व्यक्त करते हैं । दोनों ही अर्थ में 'या' के प्रयोग में एक चीज उभयनिष्ठ है और वह यह है कि 'कम से कम एक विकल्प सत्य है' । हम उसके इसी सामान्य अथवा उभयनिष्ठ अर्थ को लेकर उसके प्रयोग के संबंध में उपर्युक्त निश्चित नियम निर्धारित कर लेते हैं और उसके इसी अर्थ को 'V' प्रतीक के द्वारा अभिव्यक्त करते हैं ।

अब स्वभावत: प्रश्न उठता है कि कोई भी वियोजक प्रतिज्ञप्ति सत्य कब होती है तथा असत्य कब होती है ? कोई भी वियोजक प्रतिज्ञप्ति सत्य तब होती है जब इसके कम से कम एक 'वियुक्त' सत्य होते हैं । यह एक ही स्थिति में असत्य होते हैं जब इसके सभी 'वियुक्त' असत्य होते हैं । वियोजक प्रतिज्ञप्ति के सत्यता–मूल्य निर्धारित करने हेतु निम्न सत्यता–सारणी की सहायता ली जा सकती है–

सत्यता–सारणी

p	q	p v q
T	T	T
T	F	T
F	T	T
F	F	F

स्पष्ट है कि वियोजक प्रतिज्ञप्ति तभी और सिर्फ तभी असत्य होती है जब इसके दोनों विकल्प असत्य हों, अन्य सभी स्थितियों में यह सत्य ही होती हैं । केवल चतुर्थ पंक्ति में P तथा q दोनों ही असत्य हैं तो वियोजक भी असत्य हैं। शेष सभी हालत में सत्य (T) ही हैं । अत: वियोजक सत्यता–सारणी के केवल अंतिम स्तम्भ जहाँ दोनों विकल्प असत्य हैं में ही असत्य है, बाकी सभी स्तम्भों में सत्य ।

5.4 सारांश

सारांशत: यह कहा जा सकता है कि प्रतीकात्मक तर्कशास्त्र में जिन संबंधकों 'और', 'या' के प्रयोग के आधार पर जिन जटिल प्रतिज्ञप्तियों की रचना की जाती है उन्हें क्रमश: संयोजक तथा वियोजक प्रतिज्ञप्ति कहते हैं । यहाँ 'और' के लिए '.' (Dott) प्रतीक का प्रयोग तथा 'या' के लिए 'V' (Wedge) प्रतीक का प्रयोग किया जाता है । P.q संयोजक प्रतिज्ञप्ति तथा pvq वियोजक प्रतिज्ञप्ति है । इन दोनों प्रकार की प्रतिज्ञप्तियों की सत्यता मूल्य इनकी घटक प्रतिज्ञप्तियों के सत्यता–मूल्य पर निर्भर करता है । कोई भी संयोजक प्रतिज्ञप्ति तभी और सिर्फ तभी सत्य होती है जब इसके दोनों घटक सत्य होते हैं अन्य सभी स्थितियों में असत्य होती है । कोई भी वियोजक प्रतिज्ञप्ति तभी और सिर्फ तभी असत्य होती है जब इसके दोनों घटक असत्य होते हैं, अन्य सभी स्थितियों में सत्य होती है ।

5.5 पाठ में प्रयुक्त शब्द

संयोजक प्रतिज्ञप्ति

वियोजक प्रतिज्ञप्ति

सत्यता-फलणीय-संबंधक

न-सत्यता-फलित प्रतिज्ञप्ति

संयुक्त

वियुक्त

सत्यता-मूल्य

सत्यता-सारणी

समावेशी

व्यावर्त्तक

5.6 अभ्यास के लिए प्रश्न

5.6.1 वस्तुनिष्ठ प्रश्न

(i) 'और' संबंधक के द्वारा बनी जटिल प्रतिज्ञप्ति को कहते हैं

(अ) संयोजक प्रतिज्ञप्ति
(ब) वियोजक प्रतिज्ञप्ति
(स) हेत्वाश्रित प्रतिज्ञप्ति
(द) तुल्य प्रतिज्ञप्ति

उत्तर : (अ)

(ii) 'या' संबंधक के द्वारा बनी जटिल प्रतिज्ञप्ति को कहते हैं–

(अ) संयोजक प्रतिज्ञप्ति
(ब) वियोजक प्रतिज्ञप्ति
(स) हेत्वाश्रित प्रतिज्ञप्ति
(द) निषेधक प्रतिज्ञप्ति

उत्तर : (ब)

(iii) कोई भी संयोजक प्रतिज्ञप्ति एक ही स्थिति में सत्य होती है

(अ) जब दोनों संयुक्त सत्य हों
(ब) जब दोनों संयुक्त असत्य हों
(स) जब एक संयुक्त सत्य तथा दूसरा असत्य हों
(द) जब एक संयुक्त असत्य तथा दूसरा सत्य हों ।

उत्तर : (अ)

(iv) कोई भी वियोजक प्रतिज्ञप्ति एक ही स्थिति में असत्य होती है

(अ) जब दोनों वियुक्त सत्य हों

(ब) जब दोनों वियुक्त असत्य हों

(स) जब एक वियुक्त सत्य तथा दूसरा असत्य हो

(द) जब एक वियुक्त असत्य तथा दूसरा सत्य हो

उत्तर : (ब)

5.6.2 लघु उत्तरीय प्रश्न

(i) समावेशी तथा व्यावर्त्तक वियोजक प्रतिज्ञप्ति को स्पष्ट करें ।

(ii) संयोजक प्रतिज्ञप्ति सत्य कब होती है ? स्पष्ट करें ।

(iii) वियोजक प्रतिज्ञप्ति असत्य कब होती है ? स्पष्ट करें ।

5.6.3 दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

(i) संयोजक प्रतिज्ञप्ति से आप क्या समझते हैं ? इसके सत्यता-मूल्य का निर्धारण करें ।

(i) वियोजक प्रतिज्ञप्ति क्या है ? इसके सत्यता मूल्य का निर्धारण करें ।

5.7 प्रस्तावित पाठ

(i) आइ० एम० कापी : प्रतीकात्मक तर्कशास्त्र

(ii) डा० केदारनाथ तिवारी : प्रतीकात्मक तर्कशास्त्र : एक सरल परिचय

✠✠✠

सोपाधिक या हेत्वाश्रित तथा निषेधात्मक प्रतिज्ञप्ति

पाठ संरचना

6.1 उद्देश्य

6.2 विषय-प्रवेश

6.3 मुख्य विषय की व्याख्या

6.3.1 सरल एवं जटिल प्रतिज्ञप्ति

6.3.2 सत्यता-फलित प्रतिज्ञप्ति

6.3.3 हेत्वाश्रित प्रतिज्ञप्ति

6.3.4 निषेधात्मक प्रतिज्ञप्ति

6.4 सारांश

6.5 पाठ में प्रयुक्त शब्द

6.6 अभ्यास के लिए प्रश्न

6.6.1 वस्तुनिष्ठ प्रश्न

6.6.2 लघु उत्तरीय प्रश्न

6.6.3 दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

6.7 प्रस्तावित पाठ

6.1 उद्देश्य

प्रस्तुत पाठ का उद्देश्य सोपाधिक एवं निषेधात्मक प्रतिज्ञप्ति से परिचय करवाना है । सरल प्रतिज्ञप्तियों को विभिन्न विधेयों द्वारा संबंधित कर जटिल प्रतिज्ञप्तियों की रचना की जाती है । 'यदि.....तो' संबंधक से बनी मिश्र प्रतिज्ञप्ति को 'सोपाधिक' अथवा 'आपादनात्मक' प्रतिज्ञप्ति कहते हैं तथा 'नहीं' (या ऐसा नहीं है कि') संबंधक से बनी मिश्र प्रतिज्ञप्ति व निषेधात्मक प्रतिज्ञप्ति कहते हैं । वस्तुत: सोपाधिक तथा निषेधात्मक सत्यता-फलणीय संबंधक प्रतिज्ञप्तियाँ हैं । इस दृष्टि से इन प्रतिज्ञप्तियों का सत्यता-मूल्य इसके निर्मायक सरल प्रतिज्ञप्तियों तथा संबंधक के सत्यता-मूल्य के आधार पर निर्धारित होता है ।

6.2 विषय – प्रवेश

तर्कशास्त्र का मूल-विषय 'अनुमान' है । अनुमान युक्तियों के माध्यम से होता है । किसी भी युक्ति में प्रतिज्ञप्तियों का प्रयोग किया जाता है । प्रतिज्ञप्ति दो प्रकार के होते हैं–सरल एवं जटिल । विभिन्न संबंधकों के प्रयोग के आधार पर

प्रतीकात्मक तर्कशास्त्र के अन्तर्गत कुछ जटिल प्रतिज्ञप्तियों की रचना एवं प्रयोग होता है, जिसमें सोपाधिक (Implication) तथा निषेधात्मक (Negation) प्रतिज्ञप्ति भी हैं । सोपाधिक प्रतिज्ञप्ति जटिल प्रतिज्ञप्ति का एक विशिष्ट रूप है जिसमें दो सरल प्रतिज्ञप्तियों को 'यदि.....तो' के द्वारा संबंधित किया जाता है । 'यदि' और 'तो' के बीच वाले घटक को 'पूर्ववर्ती' तथा 'तो' के बाद वाले घटक को 'अनुवर्ती' कहते हैं । प्रतीकात्मक तर्कशास्त्र के अन्तर्गत 'यदि.....तो- के लिए ' ⊃ ' (Horse Shoe) का प्रयोग किया जाता है । 'P ⊃ q' सोपाधिक प्रतिज्ञप्ति है । इसका सत्यता-मूल्य इसके घटक सरल प्रतिज्ञप्तियों के सत्यता-मूल्य पर आधारित होता है । उसी प्रकार निषेधात्मक प्रतिज्ञप्ति भी जटिल प्रतिज्ञप्ति का एक विशिष्ट रूप है, 'नहीं' संबंधक से बनी जटिल प्रतिज्ञप्ति को निषेधात्मक प्रतिज्ञप्ति कहते हैं । यह एक सत्यता-फलित जटिल प्रतिज्ञप्ति है, चूँकि इसका सत्यता-मूल्य इसके घटक भावात्मक प्रतिज्ञप्ति पर निर्भर करता हैं । उदाहरणस्वरूप ''कलम लाल नहीं है ।'' इस निषेधात्मक प्रतिज्ञप्ति का सत्यता मूल्य इसके घटक भावात्मक प्रतिज्ञप्ति 'कलम लाल है' के सत्यता मूल्य पर निर्भर करता है । प्रतीकात्मक तर्कशास्त्र के अन्तर्गत 'नहीं' संबंधक के लिए ' ~ ' (Tilde) का प्रयोग किया जाता है । यदि हम घटक भावात्मक प्रतिज्ञप्ति का प्रतीक 'P' को मानें तो सत्यता-फलित निषेधात्मक प्रतिज्ञप्ति का प्रतीक होगा '~P' ।

6.3 मुख्य-विषय की व्याख्या

सोपाधिक एवं निषेधात्मक प्रतिज्ञप्तियों की व्याख्या के पूर्व वाक्य के स्वरुप तथा सत्यता-फलित प्रतिज्ञप्ति की विवेचना अपेक्षित है ।

6.3.1 सरल एवं जटिल प्रतिज्ञप्ति :

वह वाक्य जिसे सार्थक ढंग से सत्य या असत्य कहा जा सकता है, प्रतिज्ञप्ति कहलाता है । जैसे–राम पढ़ने में तेज है । लड़का सुन्दर है और गुलाब लाल है । आदि ।

प्रतिज्ञप्ति दो प्रकार के होते हैं–

सरल प्रतिज्ञप्ति (Simple Statement)

जटिल प्रतिज्ञप्ति (Compound Statement)

सरल प्रतिज्ञप्ति वह है, जिसमें केवल एक अभिकथन होते हैं अर्थात् इसके घटक के रूप में अन्य कोई कथन या वाक्य जुड़ा नहीं होता है । जैसे–गुलाब लाल है । मैं कॉलेज जा रहा हूँ ।

इससे भिन्न जटिल प्रतिज्ञप्ति वह है जिसमें घटक के रूप में एक से अधिक सरल प्रतिज्ञप्तियों को विभिन्न रीतियों से जोड़कर जटिल प्रतिज्ञप्ति की रचना की जाती है । जैसे–कलम लाल है और गुलाब सुन्दर है । यदि सूर्य है तो प्रकाश है । आदि ।

6.3.2 सत्यता-फलित प्रतिज्ञप्ति : (Truth functional Statement)

तर्कशास्त्र का मुख्य कार्य प्रतिज्ञप्तियों की सत्यता-असत्यता या युक्तियों की वैधता-अवैधता को निर्धारित करना है । जटिल प्रतिज्ञप्ति के दो प्रकार होते हैं–सत्यता-फलित जटिल प्रतिज्ञप्ति तथा न-सत्यता-फलित जटिल प्रतिज्ञप्ति । जिस जटिल प्रतिज्ञप्ति का सत्यता मूल्य पूरी तरह से उसके घटक सरल प्रतिज्ञप्तियों के सत्यता-मूल्य के द्वारा निर्धारित होता है, उसे सत्यता-फलित जटिल प्रतिज्ञप्ति कहते हैं । उदाहरण स्वरूप :

यदि सूर्य है तो प्रकाश है ।

कलम लाल नहीं है ।

इससे भिन्न जिस प्रतिज्ञप्ति का सत्यता-मूल्य उसकी घटक प्रतिज्ञप्तियों द्वारा निर्धारित नहीं होता हो उसे न सत्यता-फलित प्रतिज्ञप्ति कहते हैं । उदहारणस्वरूप 'वह कहता है कि राम बंबई चला गया ।'

प्रतीकात्मक तर्कशास्त्र में वे शब्द या शब्द समूह जिससे सरल प्रतिज्ञप्ति आपस में जुड़ती है, संबंधक कहे जाते हैं तथा इनके लिए मुख्य रूप से निम्न प्रतीकों का प्रयोग किया जाता है–

'और'	–	'.' (Dott)
'या'	–	'V' (Wedge)
'यदि-तो'	–	'⊃' (Horse shoe)
'यदि और सिर्फ यदि'	–	'≡' (Three bar)
'नहीं'	–	'~' (Negation)

प्रतीकात्मक तर्कशास्त्र में इन्हीं संबंधक प्रतीकों के बल पर विभिन्न सरल प्रतिज्ञप्तियों को संयुक्त कर उसका सत्यता-मूल्य निर्धारित किया जाता है । प्रतिज्ञप्ति का वह मूल्य जिसके बल पर वह सत्य या असत्य सिद्ध होता है, सत्यता-मूल्य कहलाता है । किसी प्रतिज्ञप्ति का सत्यता-मूल्य या तो सत्य होता है या असत्य ।

उपरोक्त संबंधकों के प्रयोग के आधार पर प्रतीकात्मक तर्कशास्त्र के अन्तर्गत निम्नांकित जटिल प्रतिज्ञप्तियों का निर्माण और प्रयोग होता है–

(i) संयोजक प्रतिज्ञप्ति (Conjunction Statement)

(ii) वियोजन प्रतिज्ञप्ति (Disjunctive Statement)

(iii) हेत्वाश्रित प्रतिज्ञप्ति (Hypothetical Statement)

(iv) निषेधक प्रतिज्ञप्ति (Negative Statement)

(v) तुल्य प्रतिज्ञप्ति (Equivalent Statement)

प्रस्तुत पाठ के अन्तर्गत हम दो प्रतिज्ञप्ति-रूप हेत्वाश्रित एवं निषेधक प्रतिज्ञप्तियों पर प्रकाश डालेंगे ।

6.3.3 हेत्वाश्रित प्रतिज्ञप्ति :

'यदि.....तो' संबंधक से बनी मिश्र प्रतिज्ञप्ति को 'हेत्वाश्रित' या 'सोपाधिक' अथवा 'आपादनात्मक' प्रतिज्ञप्ति कहते हैं । फिर 'यदि' और 'तो' के बीच वाले घटक को 'पूर्ववर्ती' या 'आपादक' तथा 'तो' के बाद वाले घटक को 'अनुवर्ती' अथवा 'आपाद्य' कहते हैं । जैसे–'यदि वर्षा होगी, तो फसल अच्छी होगी' । इस प्रकथन में 'फसल अच्छा होना' 'वर्ष होने' की शर्त्त पर निर्भर है । 'वर्षा होगी' कथन सोपाधिक कथन का पूर्ववर्ती तथा 'फसल का अच्छा होना' अनुवर्ती कथन है । यदि 'P' को किसी सोपाधिक प्रकथन का पूर्ववर्ती मानें तथा 'q' को उसका अनुवर्ती मानें तो सोपाधिक प्रतिज्ञप्ति का सामान्य रूप हमारे सामने आयेगा– 'P⊃q' ।

साधारण भाषा में 'यदि.....तो' संबंधक के कई प्रकार के प्रयोग होते हैं । जैसे जब हम कहते हैं कि 'यदि राम कुंवारा है तो वह अविवाहित है' तब 'यदि.....तो' का प्रयोग यहाँ हम अनुवर्ती में पूर्ववर्ती की परिभाषा व्यक्त करने के अर्थ में करते हैं । फिर जब हम कहते हैं कि 'यदि किसी धातु को गर्म किया जाता है तो वह फैलता है' तब हम 'यदि.....तो' का प्रयोग पूर्ववर्ती तथा अनुवर्ती के बीच एक कारण-कार्य संबंध अभिव्यक्त करने के अर्थ में करते हैं । फिर जब हम कहते हैं कि ''यदि दो या दो का योग चार है तो राम मरणशील है'' तब यहाँ हम 'यदि.....तो' का प्रयोग पूर्ववर्ती और अनुवर्ती के बीच किसी अनिवार्य या अनुभव -प्रत्यक्ष संबंध को व्यक्त करने के लिये नहीं करते हैं चूँकि यहाँ पूर्ववर्ती और अनुवर्ती की विषय-वस्तुओं में कोई भी प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष संबंध नहीं है ।

सामान्यत: इन सभी सोपाधिक प्रतिज्ञप्तियों में भेद है, किन्तु इनके बीच कुछ बातों में समानता भी है, एक तो यह कि इस सभी की अभिव्यक्ति '⊃' (Horse shoe) प्रतीक के द्वारा होता है तथा दूसरा यह कि पूर्ववर्ती के सत्य होने पर प्रत्येक स्थिति में उसका अनुवर्ती सत्य होगा क्योंकि पूर्ववर्ती अनुवर्ती की उपस्थिति का मूल आधार है । इस समानता के

आधार पर सोपाधिक प्रतिज्ञप्तियों के सत्यता संबंधी एक सामान्य नियम यह निष्पादित किया गया है कि एक सोपाधिक प्रकथन तभी असत्य होता है जबकि उसका पूर्ववर्ती सत्य हो और अनुवर्ती असत्य । इसे प्रतीकात्मक रूप में व्यक्त करने के संदर्भ में कहा जा सकता है कि एक सोपाधिक प्रकथन 'P⊃q' तभी असत्य होगा जबकि 'p.~q' सत्य मिले । अब यदि इस संयोजक का निषेध हो '~(p.~q)' तब वह सत्य होगा । दूसरे शब्दों में यदि (P.~q) सत्य है तो सोपाधिक प्रकथन असत्य होता है तथा यदि ~ (P.~q) सत्य है तो सोपाधिक प्रकथन सत्य होता है । इस तथ्य को निम्न सत्यता-सारणी के द्वारा निम्न रूप से भी स्पष्ट किया जा सकता है–

P	q	~q	P.~q	~(P.~q)	P⊃q
T	T	F	F	T	T
T	F	T	T	F	F
F	T	F	F	T	T
F	F	T	F	T	T

उपरोक्त सत्यता सारणी के पहले दोनों स्तम्भों में सोपाधिक प्रकथन के दो घटक सरल प्रकथनों P और q का संभव सत्यता-मूल्य उल्लेखित है तथा तीसरे, चौथे और पाँचवें स्तम्भों में क्रमानुसार वे क्रम (Steps) हैं जिनसे यौगिक प्रकथन ~(p.~q) के सत्यता मूल्य का निर्धारण होता है । पाँचवाँ एवं छठा स्तम्भ एक एक है क्योंकि दोनों सूत्र एक है । इस तरह स्पष्ट होता है कि '⊃' प्रतीक आपादान संबंध का नहीं वरन् उस सामान्य आंशिक अर्थ का प्रतीक है जो भिन्न प्रकारों के आपादानों के बीच पाया जाता है तथा 'यदि.....तो' संबंधक के द्वारा व्यक्त किया जाता है । '⊃' एक सत्यता फलित संबंधक है जिससे स्पष्ट होता है कि सोपाधिक प्रकथन के दो निर्मायक सरल प्रकथनों में पूर्ववर्ती असत्य और अनुवर्ती सत्य हो तो सोपाधिक प्रकथन असत्य होता है अन्यथा प्रत्येक स्थिति में आपादान सत्य होता है ।

अब सोपाधिक प्रकथनों के सत्यता-मूल्य निर्धारित करने हेतु सत्यता सारणी की रचना आवश्यक है–स्वभावत: प्रश्न उठता है कि कोई भी सोपाधिक प्रकथन सत्य कब होता है तथा असत्य कब होता है । ''कोई भी सोपाधिक प्रतिज्ञप्ति तभी और सिर्फ तभी असत्य होती है जब इसका पूर्ववर्ती सत्य हो और अनुवर्ती असत्य, अन्य सभी स्थितियों में यह सत्य होती है । 'P⊃q' तभी और सिर्फ तभी असत्य होगा जब 'P' सत्य हो और 'q' असत्य 'P' तथा 'q' की सत्यता-असत्यता की अन्य सभी संभावित स्थितियों में वह सत्य होगा । 'p' तथा 'q' के सत्यता-मूल्यों के आधार पर किस-किस प्रकार 'P⊃q' के सत्यता-मूल्य का निर्धारण होता है यह हमें नीचे की सारणी बतलाती है–

P	q	P⊃q
T	T	T
T√	F√	F√
F	T	T
F	F	T

इस सारणी से स्पष्ट है कि तीसरे स्तम्भ की दूसरी पंक्ति में सोपाधिक कथन असत्य हैं क्योंकि इस पंक्ति के पहले स्तम्भ में पूर्ववर्ती सत्य और दूसरे स्तम्भ में अनुवर्ती असत्य हैं ।

6.3.4 निषेधक प्रतिज्ञप्ति :

'नहीं' (या 'ऐसा नहीं है कि') संबंधक से बनी मिश्र प्रतिज्ञप्ति को निषेधात्मक प्रतिज्ञप्ति कहते हैं । यह एक सत्यता-फलित मिश्र प्रतिज्ञप्ति होती है चूँकि इसका सत्यता-मूल्य इसके घटक भावात्मक प्रतिज्ञप्ति पर निर्भर करता है । उदाहरण के लिये यदि हम कहें कि 'कलम लाल नहीं है' तो इस निषेधात्मक प्रतिज्ञप्ति का सत्यता-मूल्य इसके घटक

भावात्मक प्रतिज्ञप्ति 'कलम लाल है' के सत्यता-मूल्य पर निर्भर करता है । यदि 'कलम लाल है' सत्य है तो 'कलम लाल नहीं है' असत्य होगा और यदि 'कलम लाल है' असत्य है तो 'कलम लाल नहीं है' सत्य होगा ।

''एक सत्य भावात्मक प्रतिज्ञप्ति का निषेध असत्य होता है तथा एक असत्य भावात्मक प्रतिज्ञप्ति का निषेध सत्य । यदि हम घटक भावात्मक प्रतिज्ञप्ति का प्रतीक 'P' को मानें तो सत्यता-फलित निषेधात्मक प्रतिज्ञप्ति का प्रतीक होगा । '~P' । जब 'P' सत्य होगा तो '~P' असत्य होगा तथा जब 'P' असत्य होगा तो '~p' सत्य । इस बात को हम निम्नलिखित सत्यता-सारणी के द्वारा व्यक्त कर सकते हैं–

P	~ P
T	F
F	T

यह सत्यता-सारणी '~' प्रतीक को परिभाषित करती है ।

6.4 सारांश

सारांशत: यह कहा जा सकता है कि प्रतीकात्मक तर्कशास्त्र में जिन संबंधकों 'यदि.....तो', 'नहीं' के प्रयोग के आधार पर जिन जटिल प्रतिज्ञप्तियों की रचना की जाती है, उन्हें क्रमश: 'सोपाधिक' तथा 'निषेधक' प्रतिज्ञप्ति कहते हैं । यहाँ 'यदि.....तो' के लिए '⊃' (Horse shoe) प्रतीक का प्रयोग तथा 'नहीं' के लिए '~' (Negation) प्रतीक का प्रयोग किया जाता है । 'P⊃q' सोपाधिक प्रतिज्ञप्ति तथा '~p' निषेधात्मक प्रतिज्ञप्ति है । इन दोनों प्रकार की प्रतिज्ञप्तियों का सत्यता-मूल्य इनकी घटक प्रतिज्ञप्तियों के सत्यता-मूल्य पर निर्भर करता है ।

6.5 पाठ में प्रयुक्त शब्द

सोपाधिक प्रतिज्ञप्ति

निषेधात्मक प्रतिज्ञप्ति

अनुवर्ती

पूर्ववर्ती

सत्यता-फलणीय संबंधक

सत्यता-फलित प्रतिज्ञप्ति

सत्यता-सारणी

सत्यता-मूल्य

6.6 अभ्यास के लिए प्रश्न

6.6.1 वस्तुनिष्ठ प्रश्न

(i) 'यदि.....तो' संबंधक के द्वारा बनी जटिल प्रतिज्ञप्ति को कहते हैं–

(अ) निषेधक प्रतिज्ञप्ति

(ब) संयोजक प्रतिज्ञप्ति

(स) सोपाधिक प्रतिज्ञप्ति

(द) वियोजक प्रतिज्ञप्ति

उत्तर : (स)

(ii) 'नहीं' संबंधक के द्वारा बनी जटिल प्रतिज्ञप्ति को कहते हैं–

(अ) संयोजक प्रतिज्ञप्ति

(ब) वियोजक प्रतिज्ञप्ति

(स) सोपाधिक प्रतिज्ञप्ति

(द) निषेधक प्रतिज्ञप्ति

उत्तर : (द)

(iii) कोई भी सोपाधिक प्रतिज्ञप्ति एक ही स्थिति में असत्य होती हैं–

(अ) जब उसका पूर्ववर्ती सत्य एवं अनुवर्ती असत्य हो

(ब) जब उसका पूर्ववर्ती तथा अनुवर्ती दोनों घटक सत्य हों

(स) जब उसका पूर्ववर्ती तथा अनुवर्ती दोनों ही घटक असत्य हों

(द) जब उसका पूर्ववर्ती असत्य हो एवं अनुवर्ती सत्य हों

उत्तर : (अ)

(iv) एक सत्य भावात्मक प्रतिज्ञप्ति का निषेध

(अ) सत्य होता है

(ब) असत्य होता है

(स) सत्य तथा असत्य दोनों होता है

(द) उपरोक्त सभी

उत्तर : (ब)

6.6.2 लघु उत्तरीय प्रश्न

(i) सोपाधिक प्रतिज्ञप्ति असत्य कब होती है ।

(ii) निषेधात्मक प्रतिज्ञप्ति को मिश्र प्रतिज्ञप्ति के अन्तर्गत क्यों रखा जाता है ।

6.6.3 दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

(i) सोपाधिक प्रतिज्ञप्ति से आप क्या समझते हैं ? इसके सत्यता-मूल्य का निर्धारण करें।

(i) निषेधक प्रतिज्ञप्ति क्या है ? इसके सत्यता मूल्य का निर्धारण करें ।

6.7 प्रस्तावित पाठ

(i) आइ० एम० कापी : प्रतीकात्मक तर्कशास्त्र

(ii) डॉ० केदारनाथ तिवारी : प्रतीकात्मक तर्कशास्त्र : एक सरल परिचय

वैधता एवं अवैधता का निर्धारण

पाठ संरचना

7.1 उद्देश्य
7.2 विषय-प्रवेश
7.3 मुख्य विषय की व्याख्या
7.3.1 युक्ति का स्वरूप
7.3.2 वैधता
7.3.3 अवैधता
7.4 सारांश
7.5 पाठ में प्रयुक्त शब्द
7.6 अभ्यास के लिए प्रश्न
7.6.1 वस्तुनिष्ठ प्रश्न
7.6.2 लघु उत्तरीय प्रश्न
7.6.3 दीर्घ उत्तरीय प्रश्न
7.7 प्रस्तावित पाठ

6.1 उद्देश्य

प्रस्तुत पाठ का उद्देश्य युक्ति की वैधता एवं अवैधता का निर्धारण पर प्रकाश डालना है । वैधता-अवैधता के संप्रत्यय मूलत: युक्तियों (Arguments) से संबंधित होते हैं । कोई युक्ति वैध तब होती है जबकि आधार वाक्यों की सत्यता निष्कर्ष की सत्यता को अनिवार्यत: आपादित करती हो । किसी भी युक्ति को अवैध तब कहा जाता है जब उसके आधार वाक्य सत्य हों एवं निष्कर्ष असत्य हों ।

7.2 विषय-प्रवेश

तर्कशास्त्र का मूल विषय है युक्तियों की वैधता-अवैधता का निर्धारण । अनुमान करने के क्रम में तर्कशास्त्र के अन्तर्गत मुख्य रूप से युक्तियों का प्रयोग होता है । युक्तियों की संरचना प्रतिज्ञप्तियों के द्वारा होती है । यहाँ विभिन्न प्रकार की प्रतिज्ञप्तियों के प्रतिस्थापित दृष्टान्तों को एक विशेष आकार में व्यवस्थित कर युक्ति तथा युक्ति-आकार की रचना की जाती है, जिनके माध्यम से अनुमान की क्रिया सम्पन्न होती है । प्रतीकात्मक तर्कशास्त्र मूलत: आकारिक तर्कशास्त्र है अत: इसका प्रकथन रूप युक्ति या युक्ति-आकारों की विषय-वस्तु अथवा वस्तुगत सत्यता से संबंध नहीं होता, बल्कि उनकी

आकारिक सत्यता से संबंध होता है । अत: युक्तियों के संबंध में सत्यता-असत्यता का प्रश्न नहीं उठता, वरन वैधता अथवा अवैधता का प्रश्न उठता है । एक युक्ति में यदि आधार वाक्यों का निष्कर्ष से तार्किक संबंध होता है तो युक्ति वैध कहीं जाती है अन्यथा अवैध ।

7.3 मुख्य-विषय की व्याख्या

वैधता-अवैधता की विवेचना के पूर्व युक्ति के स्वरूप की संक्षिप्त व्याख्या आवश्यक जान पड़ती है । अत: प्रथमत: युक्ति की विवेचना करेंगे तथा उसके बाद उसकी वैधता-अवैधता निर्धारण की मूल स्थिति को स्पष्ट करने का प्रयास करेंगे ।

7.3.1 युक्ति का स्वरूप :

युक्ति कुछ तर्कवाक्यों का समूह है जिसमें से एक तर्कवाक्य को निष्कर्ष के रूप में निस्पादित किया जाता है तथा अन्य तर्कवाक्य उस निष्कर्ष तर्कवाक्य की सत्यता के लिए प्रमाण प्रस्तुत करता है । I. M. Copi के अनुसार, "An argument may be defined as any group of propositions or statements of which one is claimed to follow from the others, which are alleged to provide grounds for the truth of that one." (Symbolic Logic, Page-2)

उदाहरणस्वरूप :

सभी मनुष्य मरणशील हैं –(1)

राम एक मनुष्य है –(2)

राम मरणशील है –(3)

उपरोक्त युक्ति में तीन तर्कवाक्य हैं, जिसमें (1) और (2) आधार वाक्य हैं तथा (3) निष्कर्ष है । (3) निष्कर्ष को (1) तथा (2) से निष्पादित किया गया है ।

प्रत्येक संभव अनुमान के अनुरूप एक युक्ति होती है । प्रत्येक युक्ति की एक बनावट होती है । यहाँ युक्ति की संरचना में इसके मूल घटक तर्कवाक्य होते हैं । युक्ति के अन्तर्गत जिन प्रतिज्ञप्तियों के आधार पर एक अन्य प्रतिज्ञप्ति को निष्कर्ष के रूप में आपादित किया जाता है उन प्रतिज्ञप्तियों को आधारवाक्य तथा जिस प्रतिज्ञप्ति को इस आधार वाक्यों से निगमित किया जाता है उसे निष्कर्ष की संज्ञा दी जाती है ।

वस्तुत: प्रतीकात्मक तर्कशास्त्र का युक्ति की वस्तुगत सत्यता से कोई मतलब नहीं होता बल्कि इसका संबंध युक्ति-आकार से होता है । एक युक्ति-आकार विभिन्न प्रकथन चरों (Variables) की एक व्यवस्था होती है जिसमें परिवर्ती के स्थान पर किसी कथन को प्रतिस्थापित कर युक्ति के एक ढाँचे को प्राप्त किया जाता है । वस्तुत: एक युक्ति-आकार में विभिन्न सम्बन्ध विशेषों में प्रकथन चरों को रखकर प्रतिज्ञप्ति-आकार के माध्यम से युक्ति के विशेष ढाँचे का निर्माण किया जाता है । यहाँ प्रकथन चरों को प्रतीक के रूप में p, q, r, s, t.....आदि के द्वारा व्यक्त किया जाता है ।

अब किसी युक्ति का तार्किक विश्लेषण करते समय विचार के लिए मुख्यत: दो प्रश्न उपस्थित होते हैं–प्रथम, युक्ति के आधार वाक्य सत्य हैं अथवा असत्य ? तथा दूसरा, युक्ति के आधार वाक्य एवं निष्कर्ष में तार्किक दृष्टिकोण से उचित संबंध है अथवा नहीं ? इनमें पहले प्रश्न का विवेचन जहाँ सत्यता के सम्प्रत्यय से है वहीं दूसरे प्रश्न का संबंध वैधता के संप्रत्यय के साथ है । प्रस्तुत पाठ के अन्तर्गत हम केवल दूसरे प्रश्न की विवेचना करेंगे ।

7.3.2 वैधता (Validity)

वैधता अथवा अवैधता युक्तियों की विशेषता है । कोई भी युक्ति वैध होता है अथवा अवैध । किसी भी युक्ति के वैध होने की सीधी शर्त यह है कि यदि आधार प्रतिज्ञप्तियाँ सत्य हों तो निष्कर्ष भी अनिवार्य रूप में सत्य हो, ऐसा नहीं हो

कि आधार प्रतिज्ञप्तियाँ सत्य हों और निष्कर्ष असत्य । यदि युक्ति के आधार वाक्य और निष्कर्ष में उचित तार्किक संबंध है तो उस युक्ति को वैध की संज्ञा दी जाती है । स्पष्ट है कि वैधता की मूल शर्त है कि युक्ति के आधार वाक्यों से निष्कर्ष आपादित होता है । यह आपादान उचित रूप में तभी संभव होता है जबकि यह होना संभव नहीं हो कि आधार वाक्य सत्य हों तथा निष्कर्ष असत्य । वैधता की परिभाषा में कहा गया है कि एक युक्ति वैध तभी होती है जबकि आधार वाक्यों की सत्यता निष्कर्ष की सत्यता को अनिवार्यत: आपादित करती हों । वस्तुत: एक युक्ति की वैधता उसकी तार्किक बनावट और आकार पर निर्भर करती है । Copi के अनुसार, "A valid argument form is one that has no substitution instance with true premises and false conclusion. Any given argument can be proved valid if it can be shown specific form of the given argument is a valid argument form".(Symbolic Logic, P-21)

यहाँ महत्त्वपूर्ण तथ्य यह है कि युक्ति की वैधता उसमें प्रयुक्त प्रतिज्ञप्तियों की सत्यता-असत्यता पर निर्भर नहीं करती । Copi के अनुसार, "The validity of an argument does not, therefore, guaruntee the truth of its conclusion". (Symbolic Logic, P–4) किसी भी युक्ति की वैधता उसके निष्कर्ष की सत्यता का प्रमाण भी नहीं है ।

ऐसा संभव है कि वैध युक्ति के आधार वाक्य एवं निष्कर्ष दोनों ही वास्तविकता के दृष्टिकोण से असत्य हो, फिर भी युक्ति वैध हों ।

उदाहरणस्वरूप :

सभी मनुष्य घोड़े हैं ।

सभी बिल्ली मनुष्य हैं ।

सभी बिल्ली घोड़े हैं ।

पुन: यह भी संभव है कि युक्ति की सभी प्रतिज्ञप्तियाँ वस्तुत: सत्य हैं किन्तु युक्ति अवैध हों ।

उदाहरणस्वरूप :

सभी चौपाये मरणशील होते हैं ।

सभी कुत्ते मरणशील होते हैं ।

सभी कुत्ते चौपाये होते हैं ।

इस युक्ति में प्रयुक्त प्रतिज्ञप्तियाँ तो सत्य हैं किन्तु युक्ति अवैध हैं ।

यह भी संभव है कि युक्ति में प्रयुक्त सभी प्रतिज्ञप्ति वस्तुत: सत्य हों तथा युक्ति भी वैध हों ।

उदाहरणस्वरूप :

सभी कुत्ते चौपाये होते हैं ।

सभी चौपाये मरणशील होते हैं ।

सभी कुत्ते मरणशील होते हैं ।

वस्तुत: एक युक्ति की वैधता उसकी तार्किक बनावट एवं आकार पर निर्भर करती है । एक वैध युक्ति में आधार वाक्य की सत्यता अनिवार्य रूप में निष्कर्ष की सत्यता को तर्कत: आपादित करती है । वैध युक्ति में यह कभी संभव नहीं है कि आधार वाक्य सत्य और निष्कर्ष असत्य हों ।

7.3.3 अवैधता (Invalidity)

युक्ति के आधार वाक्य और निष्कर्ष के बीच उचित तार्किक संबंध नहीं रहने पर एक युक्ति अवैध होती है ।

किसी भी युक्ति को अवैध तब कहा जाता है जब उसके आधार वाक्य सत्य हों एवं निष्कर्ष असत्य हों । I. M. Copi के अनुसार :

"An invalid argument form is one that has at least one substitution instance with true premises and a false conclusion" (Symbolic Logic, P-21) पुनः इनका कहना है, कि–

"The technique of refutation by logical analogy Presupposes that any argument of which the specific form is an invalid argument Any argument form is valid that is not invalid." (P-21)

युक्ति की वैधता-अवैधता को निर्धारित करने के लिए युक्ति में व्यवख्त प्रकथनों के सभी प्रतिस्थापित दृष्टांत को निरीक्षण कर देखना होगा कि एक भी ऐसा प्रतिस्थापित दृष्टान्त व्यवख्त है जहाँ आधार वाक्य सत्य हों जबकि निष्कर्ष असत्य निर्धारित हो । यदि ऐसा होता है तो युक्ति अवैध कही जाती है अन्यथा वैध ।

प्रतीकात्मक तर्कशास्त्र में सत्यता-फलित प्रतिज्ञप्तियों को विभिन्न संबंधकों द्वारा समन्वित कर मिश्र प्रतिज्ञप्ति का रूप दिया जाता है । युक्ति आकार में सामान्य रूप से सरल या सत्यता-फलित मिश्र प्रकथनों का प्रयोग होता है । अतः इसकी सत्यता मूल्य पर युक्ति की वैधता-अवैधता निर्भर करती है । प्रतीकात्मक तर्कशास्त्र में प्रकथनों की सत्यता-मूल्य निर्धारित करने के लिए सत्यता-सारणी विधि का प्रयोग किया जाता है । किसी भी युक्ति-आकार की सत्यता-सारणी विधि के द्वारा निम्नलिखित रूप से वैधता-अवैधता को निर्धारित किया जा सकता है ।

उदाहरणस्वरूप :

P

∴ P . q

इस युक्ति-आकार में आधार वाक्य एक सरल प्रकथन है तथा निष्कर्ष 'p.q' मिश्र संयोजक प्रकथन है । इस युक्ति आकार में p तथा q दो variables का प्रयोग किया गया है अतः सत्यता मूल्य की चार पंक्तियाँ बनेंगी ।

	आ० वा०	निष्कर्ष
p	q	p.q
T	T	T
T	F	F
F	T	F
F	F	F

उपरोक्त युक्ति-आकार अवैध है । क्योंकि दूसरी पंक्ति में आधार वाक्य 'P' सत्य है तथा निष्कर्ष 'p.q' असत्य है।

सत्यता-सारणी विधि द्वारा युक्ति-आकारों की अवैधता तथा वैधता को निर्धारित करने की प्रक्रियाओं का विस्तृत विवेचन स्वतंत्र पाठ के अन्तर्गत किया जाएगा ।

7.4 सारांश

उपर्युक्त विवेचना के आधार पर यह निष्कर्ष के रूप में कहा जा सकता है कि वैधता एवं अवैधता का संबंध युक्तियों से होता है । किसी भी युक्ति के वैध होने की शर्त्त यह है कि यदि आधार प्रतिज्ञप्तियाँ सत्य हों तो निष्कर्ष भी अनिवार्य रूप से सत्य हो । साथ ही किसी भी युक्ति के अवैध होने की शर्त्त यह है कि उसके आधार प्रतिज्ञप्तियाँ सत्य हों तथा निष्कर्ष असत्य हों ।

7.5 पाठ में प्रयुक्त शब्द

वैधता

अवैधता

आपादित

युक्ति तथा युक्ति-आकार

प्रकथन चरों

सत्यता-सारणी विधि

सत्यता-मूल्य

7.6 अभ्यास के लिए प्रश्न

7.6.1 वस्तुनिष्ठ प्रश्न

(i) किसी भी युक्ति के अवैध होने की शर्त यह है कि

(अ) उसके आधार प्रतिज्ञप्तियाँ सत्य हों तथा निष्कर्ष भी अनिवार्य रूप में सत्य हों ।

(ब) उसके आधार प्रतिज्ञप्तियाँ सत्य हों तथा निष्कर्ष असत्य हों ।

(स) उसके आधार प्रतिज्ञप्तियाँ तथा निष्कर्ष दोनों असत्य हों ।

(द) उपरोक्त में से कोई नहीं ।

उत्तर : (ब)

(ii) ''किसी भी युक्ति की वैधता उसके निष्कर्ष की सत्यता का प्रमाण नहीं है' यह कथन है–

(अ) मिल

(ब) अरस्तू

(स) आई० एम० कॉपी

(द) उपरोक्त में से कोई नहीं

उत्तर : (स)

7.6.2 लघु उत्तरीय प्रश्न

(i) किसी भी युक्ति को वैध कब कहा जाएगा ?

(ii) किसी भी युक्ति को अवैध कब कहा जाएगा ?

7.6.3 दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

(i) किसी भी युक्ति की वैधता एवं अवैधता का निर्धारण किस प्रकार किया जा सकता है ।

7.7 प्रस्तावित पाठ

(i) आइ० एम० कापी : प्रतीकात्मक तर्कशास्त्र

(ii) डॉ० केदारनाथ तिवारी : प्रतीकात्मक तर्कशास्त्र : एक सरल परिचय

✠✠✠

युक्ति तथा युक्ति–आकार

पाठ संरचना

8.1 उद्देश्य
8.2 विषय-प्रवेश
8.3 मुख्य विषय की व्याख्या
8.3.1 युक्ति
8.3.2 युक्ति के प्रकार
8.3.3 प्रतिज्ञप्ति-आकार
8.3.4 युक्ति-आकार
8.4 सारांश
8.5 पाठ में प्रयुक्त शब्द
8.6 अभ्यास के लिए प्रश्न
8.6.1 वस्तुनिष्ठ प्रश्न
8.6.2 लघु उत्तरीय प्रश्न
8.6.3 दीर्घ उत्तरीय प्रश्न
8.7 प्रस्तावित पाठ

8.1 उद्देश्य

प्रस्तुत पाठ का उद्देश्य युक्ति तथा युक्ति-आकार के स्वरूप को स्पष्ट करना है । अनुमान युक्तियों के माध्यम से होता है । अनुमान करने के क्रम में युक्तियों के अनुरूप प्रतिज्ञप्तियों को एक विशेष आकार या ढाँचे में प्रस्तुत किया जाता है, जिसे युक्ति-आकार कहते हैं ।

8.2 विषय–प्रवेश

तर्कशास्त्र में युक्ति तथा युक्ति-आकार का केन्द्रीय स्थान है । वस्तुत: तर्कशास्त्र का मूल विषय अनुमान है, अनुमान के संदर्भ में उसके अनुरूप युक्तियाँ प्रस्तुत की जाती है । अनुमान की स्पष्टता एवं संगतिपूर्णता के लिए युक्तियों के स्वरूप अथवा प्रकृति की सही जानकारी आवश्यक जान पड़ती है । जब किसी युक्ति में Variable Symbol (परवर्ती प्रतीक) का प्रयोग किया जाता है तो वह युक्ति-आकार कहलाता है, लेकिन जब प्रकथन actual होता है तो वह युक्ति कहलाता है । प्रत्येक युक्ति का कोई न कोई आकार होता है तथा युक्ति की वैधता और अवैधता का निर्धारण उसके आकार में संलग्न

परवर्ती प्रतीक की सत्यता और असत्यता के आधार पर होता है । प्रतीकात्मक तर्कशास्त्र के अन्तर्गत I. M. Copi ने परवर्ती प्रतीक के रूप में p, q, r, s, t.....को रखा है ।

8.3 मुख्य-विषय की व्याख्या

प्रस्तुत पाठ में युक्ति तथा युक्ति-आकार इन दोनों अवधारणाओं की पृथक-पृथक विस्तृत व्याख्या अनिवार्य है ।

8.3.1 युक्ति (Argument)

तर्कशास्त्र में युक्ति का अध्ययन तथा व्याख्या एक विशेष दृष्टिकोण से किया जाता है । तर्कशास्त्र के अन्तर्गत युक्ति से अभिप्राय प्रतिज्ञप्तियों की उसशृंखला से होती है जिसमें प्रयुक्त कुछ प्रतिज्ञप्तियों के आधार पर एक अन्य प्रतिज्ञप्ति को अनुमित करने का दावा करते हैं । अर्थात् युक्ति कुछ तर्कवाक्यों का समूह है जिसमें से एक तर्कवाक्य को निष्कर्ष के रूप में स्थापित किया जाता है तथा अन्य तर्कवाक्य उस निष्कर्ष तर्कवाक्य की सत्यता के लिए प्रमाण प्रस्तुत करता है । I. M. Copi के अनुसार "An argument may be defined as any group of Propositions or statements of which one is claimed to follow from the others, which are alleged to provide grounds for the truth of that one." (Symbolic Logic, Page–2)

उदाहरणस्वरूप :

All men are mortal — (1)

Ram is a man — (2)

Ram is mortal — (3)

प्रत्येक संभव अनुमान के अनुरूप एक युक्ति होती है । किसी भी युक्ति की रचना में इसके मूल घटक प्रतिज्ञप्तियाँ होती हैं । जब युक्ति के अन्तर्गत जिन प्रतिज्ञप्तियों के बल पर किसी अन्य प्रतिज्ञप्ति का अनुमान किया जाता है उन प्रतिज्ञप्तियों को आधार वाक्य की संज्ञा दी जाती है तथा उन आधारवाक्यों से जो एक तर्कवाक्य अनुमित या निष्पादित किया जाता है, उसे निष्कर्ष की संज्ञा दी जाती है । उपरोक्त उदाहरण में (1) तथा (2) आधारवाक्य हैं तथा (3) निष्कर्ष वाक्य है ।

यहाँ उल्लेखनीय है कि एक ही प्रतिज्ञप्ति अलग-अलग संदर्भों में आधारवाक्य तथा निष्कर्ष दोनों हो सकता है । उदाहरणस्वरूप, 'All men are mortal' प्रतिज्ञप्ति आधार वाक्य एवं निष्कर्ष दोनों रूपों में प्रयुक्त हो सकता है ।

(A) All men are mortal
Ram is a man.
∴ Ram is mortal

(b) All beings are mortal
All men are beings
∴ All men are mortal

उपरोक्त दो उदाहरणों में हम देखते हैं (क) युक्ति के अन्तर्गत 'All men are mortal' आधार वाक्य हैं जबकि (ख) के अन्तर्गत वही प्रतिज्ञप्ति निष्कर्ष के रूप में निष्पादित हुई है । इससे स्पष्ट होता है कि अलग-अलग संदर्भ में एक प्रतिज्ञप्ति युक्ति के आधारवाक्य तथा निष्कर्ष दोनों रूपों में प्रयुक्त हो सकती है ।

8.3.2 युक्ति के प्रकार :

युक्ति के स्वरूप संबंधी एक अन्य उल्लेखनीय तथ्य यह भी है कि आधारवाक्यों तथा निष्कर्ष के परस्पर संबंधों के आधार पर युक्ति के दो रूप स्पष्ट होते हैं–

(i) निगमनात्मक युक्ति (Deductive Argument)

(ii) आगमनात्मक युक्ति (Inductive Argument)

निगमनात्मक युक्ति उसे कहा जाता है जिसमें आधार वाक्य निष्कर्ष की सत्यता के लिए निश्चित प्रमाण प्रस्तुत करते हैं । इसके आधारवाक्य तथा निष्कर्ष परस्पर तार्किक आपादान के एक निश्चित और अनिवार्य संबंध द्वारा जुड़े होते हैं । एक निगमनात्मक युक्ति में निष्कर्ष आधार वाक्यों में ही सन्निहित होता है तथा आधार वाक्यों से तर्कत: आपादित होता है । निगमनात्मक युक्ति के साथ वैधता (Validity) एवं अवैधता (Invalidity) के प्रत्यय जुड़े होते हैं । उदाहरणस्वरूप :

सभी मनुष्य मरणशील हैं

राम एक मनुष्य है

राम मरणशील है ।

उपरोक्त युक्ति में 'राम मरणशील है' आधार वाक्य से निष्पादित हुआ है ।

इससे भिन्न आगमनात्मक युक्ति वह युक्ति है जिसमें आधारवाक्य निष्कर्ष की सत्यता के लिए आंशिक प्रमाण प्रस्तुत करता है । यहाँ निष्कर्ष आधार वाक्यों में सन्निहित नहीं होता और नहीं इस युक्ति में आधार वाक्यों तथा निष्कर्ष के बीच कोई अनिवार्य तार्किक संबंध ही पाया जाता है । यहाँ आधार वाक्य तथा निष्कर्ष के बीच केवल संभावना का संबंध होता है । इसका आधार वाक्य निरीक्षण एवं प्रयोग पर आधारित होता है तथा निष्कर्ष की स्थापना प्रकृति समरूपता नियम एवं कारणता नियम के आधार पर स्थापित होती है । उदाहरणस्वरूप :

राम मरणशील है

श्याम मरणशील है

सभी मनुष्य मरणशील हैं ।

यह सत्य है कि आगमनात्मक युक्ति के साथ कम संभव और अधिक संभव के प्रत्यय जुड़े होते हैं ।

8.3.3 प्रतिज्ञप्ति-आकार :

युक्ति-आकार को स्पष्ट करने के पूर्व प्रतिज्ञप्ति-आकार को स्पष्ट करना आवश्यक है । किसी भी युक्ति में प्रतिज्ञप्ति का प्रयोग किया जाता है अर्थात युक्ति प्रतिज्ञप्तियों का समूह है । प्रतिज्ञप्ति-आकार से हमारा तात्पर्य किसी प्रतिज्ञप्ति के तार्किक आकार से होता है । जब किसी प्रतिज्ञप्ति के लिए variables को प्रयुक्त किया जाता है तो वह प्रतिज्ञप्ति-आकार कहलाता है । उदाहरणस्वरूप :

(A) यदि सूर्य है तो प्रकाश है– प्रतिज्ञप्ति

$p \supset q$ — प्रतिज्ञप्ति-आकार

यह संभव है कि दो या दो से अधिक प्रतिज्ञप्ति के कथन एक दूसरे से भिन्न हों, किन्तु उनका आकार एक सा हो । एक ही आकार की विभिन्न युक्तियाँ कथन एवं विषय-वस्तु की भिन्नता के कारण एक दूसरे से भिन्न हो सकती हैं। लेकिन आकार की समानता के काारण ये सभी एक ही आकार की युक्तियाँ मानी जाएंगी । जैसे–

(B) If you read, you will pass — प्रतिज्ञप्ति

$p \supset q$ — प्रतिज्ञप्ति-आकार

उपरोक्त दोनों उदाहरणों की प्रतिज्ञप्ति में भिन्नता होने के बावजूद दोनों के प्रतिज्ञप्ति आकार एक ही हैं ।

8.3.4 युक्ति-आकार (Argument-form)

प्रतीकात्मक तर्कशास्त्र मूलत: एक आकारिक तर्कशास्त्र है । इस कारण अनुमान के अन्तर्गत आधार वाक्यों एवं निष्कर्ष की वस्तुगत सत्यता से इसका कोई संबंध नहीं होता । दूसरे शब्दों में यह कहा जा सकता है कि युक्ति वैधता-अवैधता संबंधी नियमों को प्रस्तुत करने के समय यहाँ युक्तियों की विषय-वस्तु से कोई मतलब नहीं रहता, बल्कि इसका संबंध यहाँ मूलत: युक्ति आकारों से होता है । अब स्वभावत: प्रश्न उठता है कि युक्ति-आकार क्या है ? सामान्यत:

आकार (Form) से एक खोखले एवं अमूर्त्त ढाँचे का बोध होता है, जिसमें कच्ची सामग्रियों को ढाल कर उस आकार की वास्तविक वस्तु को प्राप्त किया जाता है । युक्ति-आकार भी एक अमूर्त्त एवं खोखला ढाँचा होता है जिसका निर्माण परवर्ती प्रतीक (Variable symbol) से होता है ।

प्रतीकात्मक तर्कशास्त्र के अन्तर्गत दो प्रकार के प्रतीकों का प्रयोग किया जाता है ।

Variables Symbol तथा Constant Variables

Variables Symbol –वैसे प्रतीक जिसका अपना कोई प्रयोग का स्थान एवं अर्थ निश्चित नहीं होता है तथा जिसे किसी के बदले प्रयुक्त किया जा सकता है । प्रतीकात्मक तर्कशास्त्र के अन्तर्गत परवर्ती प्रतीक के रूप में अंग्रेजी के Small letters—p, q, r, s, t.....को प्रतीक के रूप में प्रस्तुत किया जाता है । इन परवर्ती प्रतीकों के प्रयोग से युक्ति-आकार की प्राप्ति होती है ।

Constant variables : वे प्रतीक जिनका अपना एक निश्चित स्थान एवं अर्थ होता है । अंग्रेजी के Capital letter A से Z तक Constant Variables के रूप में प्रयुक्त होता है ।

एक युक्ति-आकार में Variables प्रतीक को विभिन्न संबंधों में रखकर प्रतिज्ञप्ति आकारों के माध्यम से युक्ति के विशेष ढाँचे का निर्माण किया जाता है । इस संदर्भ में I. M. Copi ने कहा है कि–

"We define an argument form to be any array of symbols that contains statement variables, such that when statements are substituted for the statement variables–the same statement being substituted for every occurrence of the same statement variable throughout, the result is an argument." (Symbolic Logic, P-20)

युक्ति-आकार के संबंध में यह कहा जा सकता है कि युक्ति-आकारों का घनिष्ठ संबंध प्रतिज्ञप्ति-आकारों से होता है । युक्ति-आकार इन्हीं प्रतिज्ञप्ति आकारों से निर्धारित होते हैं । साथ ही युक्ति-आकार में Variables प्रतीक के प्रयोग में क्रम से p, q, r, s, t.....का प्रयोग होता है ।

	युक्ति	युक्ति आकार
(a)	If there is sun, there is light	$p \supset q$
	there is sun	p
	there is light	$\therefore$ q
	U v w	p v q
	~U	~p
	$\therefore$ w	$\therefore$ q

उपरोक्त उदाहरणों में A तथा B युक्ति को निम्न रूप से युक्ति-आकार में प्रस्तुत किया गया है ।

8.4 सारांश

उपर्युक्त विवेचना के आधार पर यह निष्कर्ष के रूप में कहा जा सकता है कि तर्कशास्त्र की विषय वस्तु अनुमान है । अनुमान युक्तियों के माध्यम से होता है । युक्ति कुछ तर्कवाक्यों का समूह है, जिसमें से एक तर्कवाक्य को निष्कर्ष के रूप में स्थापित किया जाता है तथा अन्य आधार तर्कवाक्य उस निष्कर्ष तर्कवाक्य की सत्यता के लिए प्रमाण प्रस्तुत करते हैं । जब किसी युक्ति के लिए Variables प्रतीक का प्रयोग किया जाता है तो उसे युक्ति-आकार कहा जाता है । I. M. Copi ने प्रतीकात्मक तर्कशास्त्र के अन्तर्गत Variables प्रतीक के रूप में क्रम से p, q, r, s, t.....आदि स्वीकार किया

है । प्रत्येक युक्ति का कोई न कोई आकार होता है तथा युक्ति की वैधता तथा अवैधता का निर्धारण उसके आकार में संलग्न Variables प्रतीक की सत्यता और असत्यता के आधार पर होता है ।

8.5 पाठ में प्रयुक्त शब्द

युक्ति

युक्ति-आकार

प्रतिज्ञप्ति

प्रतिज्ञप्ति-आकार

परवर्ती-प्रतीक

सत्यता एवं असत्यता

वैधता एवं अवैधता

निगमनात्मक युक्ति

आगमनात्मक युक्ति

8.6 अभ्यास के लिए प्रश्न

8.6.1 वस्तुनिष्ठ प्रश्न

(i) युक्ति-आकार की प्राप्ति के लिए प्रयोग में लाते हैं :

(अ) Variables Symbol

(ब) Constant Variables

(स) अ तथा ब दोनों

(द) उपरोक्त में से कोई नहीं ।

उत्तर : (अ)

(ii) कोई भी युक्ति-आकार

(अ) सिर्फ वैध होता है

(ब) सिर्फ अवैध होता है

(स) वैद्य या अवैध हो सकते हैं

(द) सत्य या असत्य हो सकते हैं

उत्तर : (स)

8.6.2 लघु उत्तरीय प्रश्न

(i) युक्ति के स्वरूप को स्पष्ट करें ।

(ii) प्रतिज्ञप्ति तथा प्रतिज्ञप्ति-आकार को स्पष्ट करें ।

8.6.3 दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

(i) युक्ति तथा युक्ति-आकार के स्वरूप पर प्रकाश डालें ।

8.7 प्रस्तावित पाठ

(i) आइ० एम० कापी : प्रतीकात्मक तर्कशास्त्र

(ii) डॉ० केदारनाथ तिवारी : प्रतीकात्मक तर्कशास्त्र : एक सरल परिचय

✠✠✠

सत्यता सारणी विधि के द्वारा युक्ति की वैधता–अवैधता का निर्धारण

पाठ संरचना

9.1 उद्देश्य

9.2 विषय-प्रवेश

9.3 मुख्य विषय की व्याख्या

9.3.1 वैधता

9.3.2 अवैधता

9.3.3 सत्यता-सारणी विधि

9.4 सारांश

9.5 पाठ में प्रयुक्त शब्द

9.6 अभ्यास के लिए प्रश्न

9.6.1 वस्तुनिष्ठ प्रश्न

9.6.2 लघु उत्तरीय प्रश्न

9.6.3 दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

9.7 प्रस्तावित पाठ

9.1 उद्देश्य

प्रस्तुत पाठ का मुख्य उद्देश्य यह है कि किस प्रकार सत्यता-सारणियों का प्रयोग कर युक्तियों की वैधता-अवैधता निर्धारित की जा सकती है । वैधता-अवैधता का संप्रत्यय मूलतः युक्ति के साथ जुड़ा है । प्रस्तुत पाठ में एक युक्ति या युक्ति-आकार की वैधता और अवैधता को निर्धारित करने हेतु सत्यता-सारणी विधि की विस्तृत व्याख्या की जायेगी ।

9.2 विषय प्रवेश

तर्कशास्त्र का मूल विषय है युक्तियों की वैधता-अवैधता का निर्धारण । इस कार्य के लिए कई विधियाँ हैं जिनमें से एक है–सत्यता-सारणी विधि । यद्यपि सत्यता-सारणियों का प्रयोग हम प्रतिज्ञप्तियों के सत्यता-मूल्यों के निर्धारण के संबंध में भी करते हैं । साथ ही सत्यता-सारणियों का प्रयोग हम युक्तियों की वैधता-अवैधता निर्धारण के लिए किया जाता है । हम जानते हैं कि किसी भी युक्ति के वैध होने की सीधी शर्त यह है कि यदि आधार-प्रतिज्ञप्तियाँ सत्य हों तो निष्कर्ष भी अनिवार्य रूप से सत्य हों, ऐसा नहीं हो कि आधार प्रतिज्ञप्तियाँ सत्य हों, और निष्कर्ष असत्य । इसी बात की जाँच के लिये

कि यदि आधार प्रतिज्ञप्तियाँ सत्य हैं तो निष्कर्ष भी सत्य है या नहीं, हम सत्यता-सारणी बनाते हैं । इस प्रकार किसी भी युक्ति या युक्ति-आकार को सत्यता-सारणी विधि द्वारा वैधता-अवैधता का निर्धारण किया जा सकता है ।

9.3 मुख्य विषय की व्याख्या

किसी भी युक्ति-आकार की वैधता और अवैधता को निर्धारित करने हेतु सत्यता-सारणी विधि की व्याख्या करने के पूर्व संक्षेप में युक्ति की वैधता-अवैधता के अर्थ को भी स्पष्ट कर लेना अनिवार्य प्रतीत होता है ।

9.3.1 वैधता (Validity)

वैधता किसी युक्ति का अन्तरस्थ गुण है । युक्ति वैध या अवैध होते हैं । यदि युक्ति के आधार वाक्य और निष्कर्ष में उचित तार्किक संबंध है तो उस युक्ति को वैध की संज्ञा दी जाती है । वैधता की मूल शर्त्त है कि आधार वाक्य से उसका निष्कर्ष आपादित होता है । यह आपादान उचित रूप में तभी संभव होता है जब कि यह होना संभव नहीं हो कि आधार वाक्य सत्य हों तथा निष्कर्ष असत्य । वैधता की परिभाषा यह कहकर दिया जाता है कि, "एक युक्ति वैध तब होती है जबकि आधारवाक्य की सत्यता निष्कर्ष की सत्यता को अनिवार्यत: आपादित करती हो ।" वस्तुत: एक युक्ति की वैधता उसके तार्किक बनावट और आकार पर निर्भर करती है ।

9.3.2 अवैधता (Invalidity)

आधार वाक्य और निष्कर्ष के बीच उचित तार्किक संबंध नहीं रहने पर युक्ति अवैध होती है । यदि किसी युक्ति या युक्ति-आकार में आधार वाक्य सत्य हों लेकिन बिना किसी असंगति के उसके निष्कर्ष असत्य हों तो युक्ति या युक्ति-आकार अवैध कही जाती हैं । अत: एक वैद्य-युक्ति के लिए आवश्यक है कि निष्कर्ष अपने आधार वाक्य से तार्किकत: निष्पादित होता हो, लेकिन ऐसा नहीं होने पर युक्ति अवैद्य कहलायेगी ।

9.3.3 सत्यता-सारणी विधि :

एक युक्ति या युक्ति-आकार की वैधता और अवैधता की स्थिति से परिचित हो जाने के बाद अब हम सत्यता-सारणी विधि के द्वारा उनकी वैधता एवं अवैधता को निर्धारित करने की प्रक्रिया की निम्नलिखित रूप में विवेचना प्रस्तुत करेंगे ।

सत्यता-सारणी एक विशिष्ट प्रकार की विधि है जिसके द्वारा दिये गये प्रकथन-आकारों का प्रतीकात्मक तर्कशास्त्र में सत्यता-मूल्य निर्धारित किया जाता है । इस विधि के अन्तर्गत प्रथमत: दिये गये प्रकथन-आकार के निर्मायक सरल परवर्ती (Variable) प्रकथनों का पृथक-पृथक स्तम्भ बनाया जाता है । फिर क्रम से पुन: यदि कोई यौगिक निर्मायक है तो उनका भी स्तम्भ बनाकर अन्त में मुख्य संबंधक को या पूरे प्रकथन-आकार को लिख लेंगे । किसी युक्ति-आकार में जितने Variables के प्रयोग किये गये हों उसे देख लेंगे । जिस युक्ति-आकार में एक Variable हो उस युक्ति-आकार में 2 rows पंक्तियों में सत्यता-मूल्य निर्धारित किया जाएगा । यदि परवर्ती (Variable) प्रकथन दो होंगे तो 2×2=4 के आधार पर सत्यता की चार पंक्तियाँ तथा यदि 3 या 4 हो तो क्रमश: पंक्तियाँ आठ या सोलह हो जायेंगी । प्रकथन-आकार का स्तम्भ और सत्यता की पंक्तियाँ निर्धारित कर लेने के बाद परवर्ती निर्मायक प्रकथन (क्रम से p, q, r, s, t....) के प्रथम स्तम्भ में आधा 'T' का तथा आधा 'F' का मान भरेंगे उसके बाद वाले परवर्ती में प्रथम परवर्ती के आधा में 'T' तथा F भर देंगे । यदि परवर्ती तीन चार हों तो क्रम से सत्यता-असत्यता का मूल्य आधा करते जाएंगे । यदि पंक्तियाँ चार आती हैं तो प्रथम में TT तथा FF तथा दूसरे में TF तथा TF लिखेंगे । यही कार्य पंक्तियों के आठ या सोलह होने पर करेंगे । अब प्रकथन आकार के मुख्य संबंधक के नियम का प्रयोग कर पूरे प्रकथन-आकार के सत्यता-मूल्य को जान सकते हैं ।

I. M. Copi के अनुसार, "An argument form is said to be valid when it has no subsitution instance with true premisses and false conclusion."

(Symbolic Logic, Page–21)

उदाहरणस्वरूप :

(i) P⊃ q

P

∴ q

आ० वा०-II	निष्कर्ष	आधार वाक्य-I
P	q	P⊃q
T√	T√	T√
T	F	F
F	T	T
F	F	T

उपरोक्त युक्ति-आकार में परवर्ती प्रकथन P तथा q हैं अत: पंक्तियाँ 2 × 2 = 4 होंगी । परवर्ती P की चार पंक्तियों में TT तथा दो में FF भर देंगे । दूसरा स्तंभ 'q' में क्रम से TF TF भर देंगे तथा सोपाधिक प्रकथन P ⊃ q की पंक्तियों में दूसरी पंक्ति में F भरंगे क्योंकि सोपाधिक प्रकथन एक ही स्थिति में 'F' होता है जब उसका पूर्ववर्ती T हो तथा अनुवर्ती F हो । अन्य सभी पंक्ति में T होगा । प्रथम पंक्ति में ही केवल ऐसा देखने को मिल रहा है कि दोनों आधार वाक्य T है तथा निष्कर्ष भी T है अत: युक्ति-आकार वैध है । एक भी स्थापन उदाहरण ऐसा देखने को नहीं मिला कि आ० वा० T हों तथा निष्कर्ष F हों । इसे Modus Ponens (M.P) कहा गया है ।

(ii) P ⊃ q

~q

∴ ~p

		नि०	आ०वा०-II	आ० वा०-I
p	q	~p	~q	p ⊃ q
T	T	F	F	T
T	F	F	T	F
F	T	T	F	T
F	F	T√	T√	T√

उपरोक्त युक्ति वैध है, क्योंकि सत्यता-सारणी की किसी भी पंक्ति में एक भी स्थापन उदाहरण नहीं है कि आधार वाक्य सत्य तथा निष्कर्ष असत्य हों । चतुर्थ पंक्ति में दोनों आ० वा० सत्य हैं तथा निष्कर्ष भी सत्य हैं । हम उन्हीं पंक्ति को देखेंगे जिसके सभी आधार वाक्य 'T' हो । लेकिन जिस पंक्ति में आ० वा० में T तथा F दोनों दिखाई दे, उस पंक्ति में निष्कर्ष की स्थिति देखने की जरूरत नहीं है । इसे Modus Tollens (M.T) कहा गया है ।

(iii) p v q

~p

∴ q

	नि०	आ०वा०-II	आ० वा०-I
p	q	~p	pvq
T	T	F	T
T	F	F	T
F	T√	T√	T√
F	F	T	F

उपरोक्त युक्ति-आकार वैध है । सत्यता-सारणी के द्वारा यह स्पष्ट हुआ कि तृतीय पंक्ति में दोनों आधार वाक्य सत्य हैं तथा निष्कर्ष भी सत्य हैं । कोई भी स्थापन उदाहरण ऐसा देखने को नहीं मिला कि आधार वाक्य सत्य हों एवं निष्कर्ष असत्य हो । इसे Disjunctive syllogism (D.S) कहा गया है ।

(iv) P ⊃ q

q ⊃ r

∴ p ⊃ r

			आ०वा०-I	आ०वा०-II	नि०
P	q	r	p ⊃ q	q ⊃ r	p ⊃ r
T	T	T	T√	T√	T√
T	T	F	T	F	F
T	F	T	F	T	T
T	F	F	F	T	F
F	T	T	T√	T√	T√
F	T	F	T	F	T
F	F	T	T√	T√	T√
F	F	F	T√	T√	T√

उपरोक्त युक्ति-आकार वैध है । क्योंकि सत्यता-सारणी से स्पष्ट है कि प्रथम, पाँचवा, सप्तम तथा अष्टम पंक्ति में आधार वाक्य सत्य हैं तो निष्कर्ष भी सत्य हैं । हमें कोई भी ऐसा दृष्टान्त देखने को नहीं मिलता कि आधार वाक्य सत्य हों एवं निष्कर्ष असत्य हो । इसे Hypothetical Syllogism (H.S) कहा गया है ।

अब प्रश्न उठता है कि सत्यता-सारणी के द्वारा अवैध युक्ति-आकार की पहचान कैसे संभव है ? या किसी भी युक्ति-आकार की पहचान कैसे संभव है ? या किसी भी युक्ति-आकार को अवैध कब कहा जाएगा ?

किसी भी युक्ति-आकार को अवैध तब कहा जाएगा जब उसमें कम से कम एक भी स्थापन उदाहरण ऐसा देखने को मिले कि आधार वाक्य सत्य हो एवं निष्कर्ष असत्य । I. M. Copi के अनुसार "An invalid argument form is one that has at least one substitution instance with true premisses and a false conclusions".

(Symbolic Logic, P-21)

उदाहरणस्वरुप :

(i) $P \supset q$

q

$\therefore P$

इस युक्ति आकार में दो परवर्ती प्रकथनों का प्रयोग हुआ है अत: पंक्तियाँ $2 \times 2 = 4$ होगी तथा स्तम्भ परवर्ती के अनुसार निम्न प्रकार के होंगे–

निष्कर्ष	आ०वा०II	आ०वा०I
P	q	$p \supset q$
T√	T√	T√
T	F	F
(F)	T√	T√
F	F	T

यह युक्ति-आकार अवैध है क्योंकि सत्यता-सारणी की तृतीय पंक्ति में दोनों आधार वाक्य सत्य हैं तथा निष्कर्ष असत्य हैं । हम जानते हैं कि किसी भी युक्ति-आकार में एक भी स्थापना उदाहरण ऐसा देखने को मिले कि आधार वाक्य सत्य हो एवं निष्कर्ष असत्य हों तो युक्ति-आकार अवैध कहलाती हैं । अरस्तू के अनुसार भी यह युक्ति अवैध है क्योंकि इसमें 'अनुवर्ती भाव दोष' है ।

(ii) $P > q$

$\sim P$

$\therefore \sim q$

इस युक्ति-आकार में भी दो परवर्ती प्रकथनों का प्रयोग हुआ है, अत: पंक्तियाँ $2 \times 2 = 4$ होंगी तथा स्तम्भ परवर्ती के अनुसार निम्न प्रकार के होंगे–

		आ० वा०-II	नि०	आ०वा०-I
p	q	~p	~q	P > q
T	T	F	F	T
T	F	F	T	F
F	T	T√	(F)	T√
F	F	T√	T√	T√

यह युक्ति-आकार अवैध है क्योंकि सत्यता सारणी की तृतीय पंक्ति में एक स्थापन उदाहरण ऐसा देखने को मिल रहा है कि दोनों आधार वाक्य सत्य हैं तथा निष्कर्ष असत्य हैं । अरस्तू के अनुसार भी यह युक्ति अवैध है क्योंकि इसमें 'पूर्ववर्ती निषेध' है ।

(iii) $P \vee q$

P

$\therefore \sim q$

इस युक्ति-आकार में भी दो Variables का प्रयोग किया गया है इसलिए $2 \times 2 = 4$ पंक्तियाँ होंगी तथा स्तम्भ परवर्ती के अनुसार निम्न होंगे–

आ० वा०-II		नि०	आ०वा०-I
P	q	~q	p v q
T√	T	Ⓕ	T√
T√	F	T√	T√
F	T	F	T
F	F	T	F

यह युक्ति-आकार अवैध है क्योंकि प्रथम पंक्ति में एक स्थापन उदाहरण ऐसा देखने को मिल रहा है कि दोनों आधार वाक्य सत्य हैं तथा निष्कर्ष असत्य है । अरस्तू ने भी इसे अवैध माना है क्योंकि यह 'विकल्प को स्वीकार करने का दोष है ।

(iv) $(p \supset q) . \quad (r \supset s)$

$\sim P \vee \sim r$

$\sim q \vee \sim s$

इस युक्ति-आकार में चार Variables (P, q, r, s) का प्रयोग किया गया है इसलिए $2 \times 2 \times 2 \times 2 = 16$ पंक्तियाँ होंगी तथा स्तम्भ परवर्ती के अनुसार निम्न होंगे–

							नि०	आ०वा०-II			आ०वा०-I	
P	q	r	s	~p	~q	~r	~s	~qv~s	~pvr~r	p⊃q	r⊃s	p⊃q).(r⊃s)
T	T	T	T	F	F	F	F	F	F	T	T	T
T	T	T	F	F	F	F	T	T	F	T	F	F
T	T	F	T	F	F	T	F	Ⓕ	T√	T	T	T√
T	T	F	F	F	F	T	T	T√	T√	T	T	T√
T	F	T	T	F	T	F	F	T	F	F	T	F
T	F	T	F	F	T	F	T	T	F	F	F	F
T	F	F	T	F	T	T	F	T	T	F	T	F
T	F	F	F	F	T	T	T	T	T	F	T	F
F	T	T	T	T	F	F	F	Ⓕ	T√	T	T	T√
F	T	T	F	T	F	F	T	T	T	T	F	F
F	T	F	T	T	F	T	F	Ⓕ	T√	T	T	T√
F	T	F	F	T	F	T	T	T√	T√	T	T	T√
F	F	T	T	T	T	F	F	T√	T√	T	T	T√

F	F	T	F	T	T	F	T	T	T	T	F	F
F	F	F	T	T	T	T	F	T√	T√	T	T	T√
F	F	F	F	T	T	T	T	T√	T	T	T	T√

यह युक्तिआकार अवैध है क्योंकि सत्यता-सारणी की तृतीय, नौवी तथा ग्यारहवीं पंक्ति में आधारवाक्य सत्य हैं तथा निष्कर्ष असत्य हैं ।

9.4 सारांश

उपयुक्त विवेचना के आधार पर यह सारांश के रूप में कहा जा सकता है कि किसी भी युक्ति की वैधता एवं अवैधता के निर्धारण की अनेक विधियाँ हैं, जिसमें सत्यता-सारणी विधि भी एक है । इस विधि के द्वारा भी किसी युक्ति-आकार की वैधता या अवैधता का निर्धारण किया जा सकता है । किसी भी युक्ति आकार को अवैध तब कहा जाता है जब एक भी स्थापन उदाहरण ऐसा देखने को मिले कि आधार वाक्य सत्य हों एवं निष्कर्ष असत्य हों । किसी भी युक्ति आकार के वैध होने की सीधी शर्त्त यह है कि यदि आधार प्रतिज्ञप्तियाँ सत्य हों तो निष्कर्ष भी अनिवार्य रूप से सत्य हों। किसी भी युक्ति-आकार की वैधता एवं अवैधता की जाँच सत्यता-सारणी के माध्यम से की जा सकती है ।

9.5 पाठ में प्रयुक्त शब्द

सत्यता-सारणी विधि

वैधता-अवैधता

युक्ति-आकार

आपादित

पूर्ववर्ती प्रकथन

अनुवर्ती भाव दोष

पूर्ववर्ती निषेध दोष

हेत्वाश्रित-न्याय

वैकल्पिक न्याय

9.6 अभ्यास के लिए प्रश्न

9.6.1 वस्तुनिष्ठ प्रश्न

(i) युक्ति-आकार एक ही स्थिति में अवैध होता है ।

(अ) जब उसके आधार वाक्य सत्य हों एवं निष्कर्ष असत्य

(ब) जब उसके आधार वाक्य सत्य हों एवं निष्कर्ष असत्य

(स) जब उसके आधार वाक्य एवं निष्कर्ष दोनों असत्य हों

(द) जब उसके आधारवाक्य एवं निष्कर्ष दोनों सत्य हों

उत्तर : (अ)

(ii) किसी भी युक्ति-आकार की सत्यता-सारणी में एक परवर्ती (Variable) के लिए

(अ) एक पंक्ति का प्रयोग होगा

(ब) दो पंक्तियों का प्रयोग होगा

(स) चार पंक्तियों का प्रयोग होगा

(द) आठ पंक्तियों का प्रयोग होगा

उत्तर : (ब)

9.6.2 लघु उत्तरीय प्रश्न

(i) वैधता और अवैधता से आप क्या समझते हैं ?

(ii) कोई भी युक्ति-आकार कब अवैध होता है ?

9.6.3 दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

(i) किस प्रकार सत्यता-सारणी विधि के द्वारा युक्ति-आकार की वैधता-अवैधता का निर्धारण किया जाता है ?

9.7 प्रस्तावित पाठ

(i) आइ० एम० कापी : प्रतीकात्मक तर्कशास्त्र

(ii) डॉ० केदारनाथ तिवारी : प्रतीकात्मक तर्कशास्त्र : एक सरल परिचय

✠✠✠

प्रकथन और प्रकथन–आकार

पाठ संरचना

10.1 उद्देश्य
10.2 विषय-प्रवेश
10.3 मुख्य विषय की व्याख्या
10.3.1 प्रकथन
10.3.2 प्रकथन-आकार
10.4 सारांश
10.5 पाठ में प्रयुक्त शब्द
10.6 अभ्यास के लिए प्रश्न
10.6.1 वस्तुनिष्ठ प्रश्न
10.6.2 लघु उत्तरीय प्रश्न
10.6.3 दीर्घ उत्तरीय प्रश्न
10.7 प्रस्तावित पाठ

10.1 उद्देश्य

प्रस्तुत पाठ का उद्देश्य प्रकथन और प्रकथन-आकार के स्वरूप को स्पष्ट करना है । अनुमान युक्तियों के माध्यम से होता है तथा प्रकथन युक्ति के मूल घटक होते हैं । अर्थात् युक्ति प्रकथनों के समूह होते हैं । जो संबंध युक्ति तथा युक्ति-आकार के बीच होता है वहीं संबंध प्रकथन तथा प्रकथन-आकार के बीच होता है । जब किसी प्रकथन के लिए परवर्ती प्रतीक (p, q, r, s, t.....) का प्रयोग किया जाता है तो उसे प्रकथन-आकार कहते हैं ।

10.2 विषय प्रवेश

तर्कशास्त्र का मूल विषय अनुमान है, अनुमान के स्वरूप तथा उससे संबंधित विधियों एवं नियमों का निर्धारण और विवेचना करना तर्कशास्त्र का मुख्य कार्य है । अनुमान युक्तियों के माध्यम से होता है । प्रकथन अनुमान के संदर्भ में प्रयुक्त युक्तियों के मूल घटक होते हैं । अत: प्रकथनों के संबंध में ज्ञान आवश्यक है । सामान्यत: तर्कशास्त्रियों द्वारा प्रकथन, प्रतिज्ञाप्ति या तर्कवाक्य का प्रयोग एक ही अर्थ में किया जाता है । I. M. Copi ने भी अपनी पुस्तक Symbolic Logic में इसी सामान्य परम्परा का निर्वाह करते हुए प्रकथन और प्रतिज्ञप्ति शब्दों का प्रयोग पर्यायवाची अर्थ में किया है । प्रत्येक प्रकथन की अपनी एक विशिष्ट बनावट होती है जिसे प्रकथन-आकार (Statement form) कहते हैं । जब किसी प्रकथन के लिए Variables symbol का प्रयोग किया जाता है तो वह प्रकथन-आकार कहलाता है ।

10.3 मुख्य-विषय की व्याख्या

प्रस्तुत पाठ में प्रकथन-तथा प्रकथन आकार इन दोनों अवधारणाओं का पृथक-पृथक विस्तृत स्पष्टीकरण अनिवार्य है ।

10.3.1 प्रकथन (Statement) :

यह स्पष्ट है कि अनुमान की अभिव्यक्ति युक्तियों के माध्यम से ही होती है । प्रकथन युक्ति के मुख्य घटक हैं। एक प्रकथन अपने प्रकथन-आकार का प्रतिस्थापन उदाहरण होता है । I.M.Copi के अनुसार : "----------any statement of certain form is said to be a substitution instances of that statement form." अब प्रश्न उठता है कि प्रकथन की परिभाषा क्या है ? प्रकथन को यह कहकर परिभाषित किया जा सकता है कि, ''जो किसी के द्वारा किसी के विषय में कहा जाये, वही प्रकथन है ।'' या ''जब किसी निर्णय को भाषा में व्यक्त किया जाता है तो उसे तर्कवाक्यं कहते हैं ।' जैसे–'सभी मनुष्य मरणशील हैं ।' या 'कलम लाल है ।' इत्यादि प्रकथन हैं । यहाँ मनुष्यों या कलम के विषय में कुछ कहा गया है । अपने इस अर्थ में प्रकथन प्रतिज्ञप्ति का समानार्थी हो जाता है । प्रकथन के समानार्थी हो जाता है । प्रकथन की समानार्थी प्रतिज्ञप्ति को स्पष्ट करते हुए स्टेबिंग ने कहा है–प्रतिज्ञप्ति वह है जिसे स्वीकार, अस्वीकार, संदेह या माना जा सकता है ।–''A proposition is anything that is believed, disbelieved, daubted or supposed."

इसे दूसरे शब्दों में कहा जा सकता है कि अर्थपूर्ण रूप से सत्य या असत्य कहे जाने वाले कथन को प्रतिज्ञप्ति कहते हैं । वह विचार जो किसी भाषा में अभिव्यक्त किया गया हो, वाक्य कहलाता है । लेकिन यहाँ महत्त्वपूर्ण रूप से उल्लेखनीय है कि सभी वाक्यों को प्रकथन नहीं माना जा सकता । वाक्य को केवल अभिव्यक्ति तक ही पूर्ण माना जा सकता है लेकिन प्रकथन को अर्थपूर्ण तथा सत्य-असत्य के योग्य होना पड़ता है । प्रकथन स्वीकार्य या अस्वीकार्य रूप से व्यक्त अर्थपूर्ण वाक्य होता है किन्तु समस्त वाक्य प्रकथन की कोटि में नहीं रखे जा सकते । जैसे–प्रश्नवाचक वाक्य–क्या वह पटना में है ? इच्छार्थक वाक्य–भगवान आपको सुखी रखें, आज्ञाबोधक वाक्य–तुम पढ़ो और विस्मयादिबोधक वाक्य-ओह ! क्या सुन्दर फुल है । इसलिए वाक्य तर्कवाक्यों या प्रकथनों की अपेक्षा अधिक व्यापक है। सभी प्रकथन वाक्य हैं पर सभी वाक्य तार्किक वाक्य नहीं ।

प्रकथन केवल निर्णय को व्यक्त करते हैं पर वाक्य हमारी किसी भी मानसिक प्रक्रिया को, जैसे–संवेग, भाव, विचार आदि को । प्रकथन का उद्देश्य है, सत्य की प्राप्ति । इसलिए वे सत्य या असत्य हो सकते हैं पर व्याकरण का संबंध वाक्यों की रचना की शुद्धता से है, इसलिए वाक्य शुद्ध या अशुद्ध हो सकते हैं । वह वाक्य जो व्याकरण की दृष्टि से शुद्ध हैं, जैसे– मनुष्य घोड़ा है, वह असत्य हो सकता है । यह कथन असत्य है, क्योंकि वास्तव में मनुष्य घोड़ा नहीं है ।

प्रकथन केवल वर्त्तमान काल में व्यक्त रहता है परन्तु वाक्य सभी काल में । इसलिए भी वाक्य का क्षेत्र प्रकथन से अधिक व्यापक होता है ।

10.3.2 प्रकथन-आकार (Statement form) :

जो संबंध एक युक्ति तथा युक्ति-आकार के बीच होता है, वहीं संबंध प्रकथन तथा प्रकथन-आकार के बीच होता है । प्रकथन-आकार केवल ढाँचे मात्र होते हैं तथा उस विशिष्ट ढाँचे में ढले विभिन्न प्रकथन उस प्रकथन-आकार के विभिन्न प्रतिस्थापित दृष्टान्त । प्रकथन-आकार से तात्पर्य किसी प्रकथन के विशिष्ट तार्किक-आकार से है । इसके संबंध में उल्लेखनीय है कि प्रकथन-आकार तथ्य निरपेक्ष्य होते हैं तथा इनकी संरचना प्रतिज्ञप्ति चर (Variables) से होती है ।

I.M. Copi ने प्रकथन-आकार को परिभाषित करते हुए कहा है कि, ''A statement form to be any sequence of symbols containing statement variables, such that when statements are substituted

for the statement variables, the same statement being substituted for every occurrence of the same statement variable througout–the result is a statement." (Symbolic logic, P—27)

अब स्वभावत: प्रश्न उठता है कि प्रकथन चर (Statement variables) क्या है ? प्रकथन चर वास्तव में वे प्रतीक हैं जिनका प्रकथन आकार में प्रयोग का अपना कोई निश्चित स्थान नहीं होता है तथा इन्हें किसी के बदले कहीं भी प्रयोग में लाया जा सकता है । इन्हें प्रतिज्ञप्ति चिन्ह भी कहा जा सकता है । Copi ने अपनी पुस्तक Symbolic logic में अंग्रेजी माला के Small latters–p, q, r, s, t - - - - को प्रकथन चर के रूप में प्रयुक्त किया है ।

इन प्रकथन चरों के प्रयोग से प्रकथन-आकारों का निर्माण होता है । इस निर्माण में कुछ शब्द मौलिक घटक का काम करते हैं । इन्हीं शब्दों के द्वारा इन प्रकथन चरों को निश्चित संबंधों से संबंधित कर एक प्रकथन आकार की रचना की जाती है । ये शब्द हैं–'और' 'यदि तो', 'या-तो' 'नहीं' ..... आदि । इन शब्दों से संबंधित होने पर निम्नलिखित प्रकथन-आकारों की प्राप्ति होती है, उदाहरणस्वरूप :

(i)	कलम लाल है और पेपर उजला है	–प्रकथन
	p और q	–प्रकथन आकार
	p . q	–प्रतीकात्मक रूप (संयोजक प्रकथन आकार)
(ii)	If there is Sun, there is light	–प्रकथन
	p > q	–प्रकथन-आकार
(iii)	Ram is either wise or selfish	—प्रकथन
	p v q	–प्रकथन-आकार (वियोजक प्रकथन आकार)
(iv)	Ram is not wise	–प्रकथन
	~ P	–प्रकथन-आकार (निषेधात्मक प्रकथन आकार)

उपरोक्त उदाहरण में 'कलम लाल है और पेपर उजला है, संयोजक प्रकथन है जिसके दो संयुक्त, 'कलम लाल हैं तथा दूसरा 'पेपर उजला है' । प्रथम संयुक्त के लिए p चर तथा दूसरा के लिए q चर का प्रयोग किया गया है 'और' संबंधक के लिए '.' का प्रयोग किया गया है । अत: 'p . q' एक संयोजक प्रकथन आकार है । लेकिन कलम लाल है कि लिए 'R' तथा पेपर उजला है के लिए 'W' प्रतीक का प्रयोग किया जाए तो 'R. W' प्रकथन का प्रतीकात्मक रूप हुआ । इसे प्रकथन ही कहा जाएगा, प्रकथन-आकार नहीं । यह प्रकथन आकार तभी कहला सकता है जब प्रकथन चरों (p, q, r, s, t.....) का प्रयोग किया जाए ।

10.4 सारांश

उपर्युक्त विवेचना के आधार पर यह निष्कर्ष के रूप में कहा जा सकता है कि तर्कशास्त्र की विषय वस्तु अनुमान है । अनुमान युक्तियों के माध्यम से होता है । प्रकथनों के समूह को युक्ति कहा जाता है । जब किसी निर्णय को भाषा में व्यक्त किया जाता है तो उसे प्रकथन कहते हैं । प्रकथन और वाक्य में भेद होता है । सभी प्रकथन वाक्य होते हैं परन्तु सभी वाक्य प्रकथन नहीं होते । जब किसी प्रकथन के लिए Variables प्रतीक का प्रयोग किया जाता है तो उसे प्रकथन-आकार कहा जाता है । I. M. Copi ने प्रतीकात्मक तर्कशास्त्र के अन्तर्गत Variables प्रतीक के रूप में क्रम से p, q, r, s, t.....आदि को स्वीकार किया है । कोई भी प्रकथन या तो सत्य होता है या असत्य ।

10.5 पाठ में प्रयुक्त शब्द

प्रकथन

प्रकथन-आकार

प्रकथन चर

वाक्य

प्रतीक

प्रतिस्थापन उदाहरण

सत्यता-असत्यता

शुद्धता-अशुद्धता

तथ्य-निरपेक्ष

10.6 अभ्यास के लिए प्रश्न

10.6.1 वस्तुनिष्ठ प्रश्न :

(i) प्रकथन-आकार की प्राप्ति के लिए प्रयोग में लाते हैं

(अ) Variables symbol.

(ब) Constant variables

(स) अ तथा ब दोनों

(द) उपरोक्त में से कोई नहीं ।

उत्तर : (ब)

(ii) कोई भी प्रकथन

(अ) सिर्फ सत्य होता है

(ब) सिर्फ असत्य होता है

(स) सत्य या असत्य हो सकते हैं

(द) शुद्ध या अशुद्ध हो सकते हैं ।

उत्तर : (स)

(iii) कोई भी प्रकथन

(अ) अपने प्रकथन-आकार का प्रतिस्थापन उदाहरण है ।

(ब) भाषा में व्यक्त किया गया निर्णय है ।

(स) अर्थपूर्ण रूप से सत्य या असत्य कहे जाने वाले कथन हैं ।

(द) उपरोक्त सभी ।

उत्तर : (द)

10.6.2 **लघु उत्तरीय प्रश्न :**

(i) प्रकथन के स्वरूप को स्पष्ट करें ।

(ii) प्रकथन तथा वाक्य में अन्तर स्पष्ट करें ।

10.6.3 **दीर्घ उत्तरीय प्रश्न**

(i) प्रकथन तथा प्रकथन-आकार को सोदाहरण स्पष्ट करें ।

10.7 प्रस्तावित पाठ

(i) आई० एम० कापी : प्रतीकात्मक तर्कशास्त्र

(ii) डॉ० केदारनाथ तिवारी : प्रतीकात्मक: तर्कशास्त्र एक सरल परिचय ।

✠✠✠

पुनरुक्ति, व्याघातक तथा आपात्तिक

पाठ संरचना

11.1 उद्देश्य

11.2 विषय-प्रवेश

11.3 मुख्य विषय की व्याख्या

- 11.3.1 पुनरुक्ति
- 11.3.2 व्याघातक
- 11.3.3 आपात्तिक

11.4 सारांश

11.5 पाठ में प्रयुक्त शब्द

11.6 अभ्यास के लिए प्रश्न

- 11.6.1 वस्तुनिष्ठ प्रश्न
- 11.6.2 लघु उत्तरीय प्रश्न
- 11.6.3 दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

11.7 प्रस्तावित पाठ

11.1 उद्देश्य

प्रस्तुत पाठ का उद्देश्य पुनरुक्ति, व्याघातक तथा आपात्तिक प्रतिज्ञप्तियों के स्वरूप को स्पष्ट करना है । प्रतीकात्मक तर्कशास्त्र मूलतः आकारिक तर्कशास्त्र है, यहाँ प्रतिज्ञप्तियों या प्रकथनों को एक विशेष आकार या ढाँचे में व्यवस्थित कर प्रकथनों में व्यक्त विषयों के संबंध में आकारिक सत्यता का अन्वेषण और निर्धारण किया जाता है । परम्परागत तर्कशास्त्र की भांति यहाँ भी प्रतिज्ञप्तियों एवं प्रकथनों की प्रधानता होती है किन्तु यहाँ भाषायी अस्पष्टता एवं शब्दों की अनेकार्थकता से बचने हेतु प्रतिज्ञप्तियों तथा अन्य सम्बन्धकों को प्रतीक के रूप में उसके अर्थ को रूढ़ अथवा निश्चित कर प्रस्तुत किया जाता है । Prof. I. M. Copi ने एक दृष्टि से प्रतिज्ञप्तियों के तीन भेद बतलाया है–प्रथम, वे जो अनिवार्य रूप से सत्य होती हैं, दूसरी, वे जो अनिवार्य रूप से असत्य होती हैं तथा तीसरी, वे जो कभी सत्य होती हैं और कभी असत्य । पहले प्रकार की प्रतिज्ञप्तियों को पुनरुक्ति, दूसरे प्रकार की प्रतिज्ञप्तियों को व्याघातक तथा तीसरे प्रकार की प्रतिज्ञप्तियों को आपात्तिक कहते हैं । अर्थात् चर प्रकथनों (p, q, r s, t.....को विभिन्न संबंधकों ('.' , 'v', '⊃' '⊂', '≡' etc) के द्वारा संयुक्त कर प्रकथन-आकार (Statement form) का रूप प्रदान किया जाता है, पुनरुक्ति, व्याघातक तथा आपात्तिक सत्यता के दृष्टिकोण से वर्गीकृत प्रकथन-आकारों के तीन मुख्य प्रकार हैं ।

11.2 विषय–प्रवेश

Prof. I. M. Copi की अपनी पुस्तक Symbolic Logic में प्रतिज्ञप्ति तथा प्रकथनों के बीच कोई वास्तविक अन्तर नहीं है । अत: पुनरुक्ति, आपत्तिक एवं व्याघाती की विवेचना में प्रतिज्ञप्ति एवं प्रकथन दोनों का ही प्रयोग होता है, यद्यपि प्रो० कापी ने स्वयं इनकी व्याख्या प्रकथन एवं प्रकथन आकारों के रूप में की है । सत्यता-सारणी में मुख्य संबंध क के मूल्य के अनुसार यौगिक प्रतिज्ञप्ति अथवा प्रकथनों के तीन प्रकार सामने आते हैं, एक वह जो अनिवार्यत: सत्य होती है, दूसरा वह जो अनिवार्यत: असत्य होती है तथा तीसरा वह जो कभी सत्य और कभी असत्य होती है । इसमें पहले प्रकार की प्रतिज्ञप्तियों को पुनरुक्ति, दूसरे प्रकार को व्याघातक तथा तीसरे प्रकार को आपात्तिक कहा जाता है। उदाहरण के लिए, 'भाई पुरुष होता है, 'कुँवारा अविवाहित होता है' 'या तो वर्षा हो रही है या वर्षा नहीं हो रही है' आदि पुनरुक्ति है । 'कुँवारा विवाहित होता है,' 'लाल वस्तु अलाल होती है,' 'वर्षा हो रही है और वर्षा नहीं हो रही है' आदि आत्म विरोधी हैं । 'मोहन ईमानदार है' या तो वह ईमानदार है या तेज,' यह मेरी पुस्तक है तथा वह तुम्हारी कलम है', यह आपत्तिक प्रकथन है ।

उपरोक्त उदाहरणों के विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि 'भाई पुरुष होता है' 'कुँवारा अविवाहित होता है' आदि प्रकथन, जिन्हें पुनरुक्ति कहा गया है, की असत्यता के संबंध में सोचा भी नहीं जा सकता है क्योंकि इनके उद्देश्य पद में ही विधेय पद की सत्यता निहित होती है । 'भाई पुरुष होता है' तथा 'कुँवारा अविवाहित होता है' ये दोनों ऐसी प्रतिज्ञप्तियाँ हैं जो अपने अन्दर व्यवहृत शब्दों के अर्थ के चलते ही ऐसी हैं कि उनके असत्य होने के बारे में हम सोच ही नहीं सकते । ये उदाहरण हमारे समक्ष कुछ परिभाषाएँ प्रस्तुत करती हैं, अनुभवजन्य तथ्य के संबंध में कुछ नहीं कहते, इसलिए अनुभव द्वारा इनकी असत्यता की सिद्धि का कोई प्रश्न ही नहीं उठता । 'वर्षा हो रही है और वर्षा नहीं हो रही है, 'लाल वस्तु अलाल है' आदि प्रकथन अपने विशिष्ट आकार के चलते ऐसे हैं कि उनकी सत्यता कल्पनातीत है, यथार्थत: ये आत्मविरोधी स्थिति का वर्णन करते हैं । पुन: 'राम ईमानदार है,' 'यह मेरी पुस्तक है तथा वह तुम्हारी पुस्तक है' प्रकथन की सत्यता-असत्यता के पीछे कोई अनिवार्यता नहीं, बल्कि आनुभविक सत्यापनीयता होती है । अनुभव के एक विशेष संदर्भ में वे सत्य तथा असत्य भी हो सकती हैं ।

11.3 मुख्य विषय की व्याख्या

पुनरुक्ति, व्याघातक तथा आपत्तिक प्रकथनों के संबंध में विवेचित उपरोक्त तथ्य को प्रतीकात्मक उदाहरणों के माध्यम से स्पष्ट रूप से व्याख्यायत किया जा सकता है ।

11.3.1 पुनरुक्ति (Tautology) :

प्रतीकात्मक तर्कशास्त्र में केवल सत्यता फलित यौगिक या सरल प्रकथनों का प्रयोग होता है जिनकी सत्यता-असत्यता उसके घटक सरल प्रकथन या शब्दों के सत्यता मूल्य के द्वारा निर्धारित होती है । पुनरुक्ति के उदाहरण रूप में प्रस्तुत प्रकथन 'यदि गुलाब लाल है, तो गुलाब लाल है' सत्यता फलित मिश्र प्रकथन होगा, अब इसकी घटक प्रतिज्ञप्ति के स्थान पर चाहे कोई भी परिवर्ती प्रकथन रखें, उनसे निर्मित मिश्र प्रकथन अनिवार्यत: सत्य ही होगा । यदि 'गुलाब लाल है को P प्रतीक के द्वारा व्यक्त करें तो इस यौगिक प्रकथन का प्रतीकात्मक रूप 'P ⊃ P' होगा । ये प्रकथन-आकार अनिवार्यत: सत्य सिद्ध होते हैं, इनकी असत्यता की कल्पना भी नहीं की जा सकती क्योंकि इन दोनों प्रकथनों में निर्मायक सरल प्रतिज्ञप्ति पहले की पुनरावृत्ति होती है ।

आकारिक तर्कशास्त्र में पुनरुक्तियों का बड़ा महत्त्व है, चूँकि वे अनिवार्यत: सत्य होती हैं और कोई भी आकारिक विज्ञान वैसे सत्यों की ही खोज करता है जो अनिवार्यत: सत्य हों । अर्थात् जो प्रतिज्ञप्तियाँ अपने आकार के आधार पर ही पुनरुक्ति सिद्ध होती हैं वे सत्यता-फलित प्रतिज्ञप्तियाँ होती हैं और हम जानते हैं कि ऐसी प्रतिज्ञप्तियों के सत्यता-मूल्य का निर्धारण उनकी घटक-प्रतिज्ञप्तियों के सत्यता-मूल्यों के द्वारा होता हैं । चूँकि पुनरुक्ति वैसी प्रतिज्ञप्ति है

जो अनिवार्यत: सत्य होती है, इसलिए कोई भी सत्यता-फलित मिश्र प्रतिज्ञप्ति पुनरुक्ति तभी और सिर्फ तभी होगी जब उसकी घटक प्रतिज्ञप्तियों के सत्यता-मूल्यों के हर संभव योग की स्थिति में उसका सत्यता-मूल्य 'सत्य' ही निर्धारित हो। अर्थात् हम कह सकते हैं कि कोई भी प्रतिज्ञप्ति-आकार तभी और सिर्फ तभी पुनरुक्ति होगा जब उसके प्रतिज्ञप्ति-परिवर्तियों के सत्यता-मूल्यों के किसी भी संभव योग की स्थिति में उसका सत्यता-मूल्य 'सत्य' ही निर्धारित होगा ।

उदाहरण के लिये हमें जाँचना हो कि प्रतिज्ञप्ति-आकार PV ~ P पुनरुक्ति है या नहीं, इसे सत्यता-सारणी के द्वारा स्पष्ट किया जा सकता है । इस प्रतिज्ञप्ति आकार में एक ही प्रतिज्ञप्ति-परिवर्ती है–'P' जिसके सिर्फ दो ही सत्यता-मूल्य संभव हो सकते हैं–'T' अथवा 'F' । इसी आधार पर यदि 'PV ~ P ' की सत्यता-सारणी हम बनायें तो वह निम्नलिखित होगी–

P	~P	PV ~ P
T	F	T
F	T	T

इस सत्यता-सारणी में स्पष्ट रूप से देखने को मिल रहा है कि P प्रकथन के हर संभव सत्यता मूल्य PV ~ P का सत्यता-मूल्य सत्य ही निर्धारित होता है, जैसा कि सत्यता-सारणी के अंतिम स्तम्भ की सभी पंक्तियों से स्पष्ट है । अत: 'PV ~ P' पुनरुक्ति है ।

11.3.2 व्याघातक (Contradiction) :

व्याघातक प्रकथनों के उदाहरण भी प्रयुक्त शब्दों के द्वारा नहीं बल्कि अपने आकार के चलते विरोध को व्यक्त करता है । जैसे–शिक्षक पढ़ा रहा है और शिक्षक नहीं पढ़ा रहे हैं । यदि 'शिक्षक पढ़ा रहे हैं, को 'P' प्रतीक के द्वारा व्यक्त करें तो इस मिश्र प्रकथन का प्रतीकात्मक रूप होगा–'P' ~ P . । 'P . ~ P' के किसी भी उदाहरण में सत्य होने की कल्पना नहीं की जा सकती । व्याघातक प्रकथन प्रत्येक स्थिति में अपने प्रकथन-आकार के संबंध असत्य मूल्य को ही व्यक्त करता है ।

वह प्रकथन या प्रतिज्ञप्ति-आकार जिसका तार्किक रूप असत्य हो, व्याघात हो, व्याघातक कहा जाता है । दूसरे शब्दों में, जिस प्रतिज्ञप्ति या प्रकथन की सत्यता-सारणी के अंतिम स्तम्भ की सभी पंक्तियों में सत्यता-मूल्य 'असत्य' निर्धारित होता है, व्याघातक प्रकथन-आकार कहा जाता है । इसे निरपेक्ष असत्य या तार्किक असत्य भी कहा जाता है ।

जब सत्यता-सारणी में अंतिम पंक्ति में प्रत्येक बार सिर्फ 'F' ही आता हो तो हम समझेंगे कि संबंधित प्रतिज्ञप्ति आकार आत्म-विरोध का उदाहरण है, चूँकि हम जानते हैं कि आत्म-विरोध अनिवार्य रूप से असत्य होता है ।

उदाहरण के लिए हमें जाँचना हो कि प्रतिज्ञप्ति-आकार 'P. ~ P' व्याघातक है या नहीं, इसे सत्यता-सारणी के द्वारा स्पष्ट किया जा सकता है । इस प्रतिज्ञप्ति-आकार में एक ही प्रतिज्ञप्ति परिवर्ती है 'P' जिसके सिर्फ दो ही सत्यता-मूल्य संभव हो सकता है 'T' अथवा 'F' । इसी आधार पर यदि P . ~ P की सत्यता-सारणी हम बनायें तो वह निम्नलिखित होगी–

P	~P	P . ~ P
T	F	F
F	T	F

इस सारणी से स्पष्ट होता है कि 'P . ~ P' प्रकथन-आकार व्याघातक है क्योंकि अंतिम स्तम्भ की सभी पंक्तियों में इसका सत्यता-मूल्य असत्य निर्धारित हुआ है । अत: उपरोक्त प्रकथन-आकार व्याघातक है ।

11.3.3 आपातिक (Contingent) :

आपातिक प्रकथन अनुभव सापेक्ष होते हैं, अत: इनकी सत्यता-असत्यता के पीछे कोई तार्किक अनिवार्यता नहीं होती है । इनकी सत्यता-असत्यता अनुभव के द्वारा निर्धारित होती है । उदाहरणस्वरूप, 'यह मेरी पुस्तक है और वह तुम्हारी पुस्तक है' यौगिक प्रतिज्ञप्ति की निर्मायक प्रतिज्ञप्तियों के बीच अनिवार्यता का नहीं वरन् सांयोगिक संबंध होता है । अत: इनका सत्यता-मूल्य आनुभाविक सत्यता के द्वारा ही स्पष्ट होता है, इनमें व्यवहृत पदों या प्रकथनों के विश्लेषणों से नहीं अतएव, ये कभी सत्य और कभी असत्य होती है । 'यह मेरी पुस्तक है, को 'P' तथा 'यह तुम्हारी पुस्तक है' को 'q' प्रतीक के द्वारा व्यक्त करें तो इस मिश्र प्रकथन का प्रतीकात्मक रूप 'p.q' होगा, जो अनिवार्यत: सत्य या असत्य नहीं बल्कि कभी सत्य और कभी असत्य होगा ।

वैसे प्रकथन या प्रतिज्ञप्ति-आकार जो न पुनरुक्ति हो, और न व्याघाती, आपातिक कहे जाते हैं । इसकी व्याख्या में कहा जा सकता है कि वह प्रतिज्ञप्ति या प्रकथन-आकार जिसका सत्यता-मूल्य सत्य और असत्य निर्धारित हो, आपातिक प्रकथन कहे जाते हैं । उदाहरणस्वरूप, 'या तो राम ईमानदार है या वह चतुर है', 'यदि सूर्य है तो प्रकाश है', 'कलम लाल है और पेपर उजला है', ये सभी आपातिक प्रकथन हैं । इनके प्रतिस्थापित प्रकथन-आकार की सत्यता-सारणी द्वारा जाँच की जाये तो परिणाम सत्य और असत्य दोनों आता है । उपरोक्त उदाहरण का प्रतीकात्मक दृष्टान्त क्रमश: $p \vee q$, $p \supset q$ एवं $p.q$ होगा । यहाँ दो परिवर्ती प्रकथन का प्रयोग हुआ है, P तथा q । अत: सत्यता-मूल्य की चार पंक्तियाँ होगी ।

(i) $p \vee q$ प्रतिज्ञप्ति - आकार की सत्यता-सारणी

p	q	$p < q$	
T	T	T	(1)
T	F	T	(2)
F	T	T	(3)
F	F	F	(4)

उपरोक्त प्रकथन-आकार आपातिक हैं क्योंकि सत्यता-मूल्य सारणी के अंतिम स्तम्भ के (1), (2) तथा (3) में T है तथा (4) में F है ।

(ii) $p \supset q$ प्रतिज्ञप्ति-आकार की सत्यता-सारणी

p	q	$p \supset q$	
T	T	T	(1)
T	F	F	(2)
F	T	T	(3)
F	F	T	(4)

उपरोक्त प्रतिज्ञप्ति आकार आपातिक हैं, क्योंकि सत्यता-मूल्य सारणी के अंतिम स्तम्भ के (1), (3), (4) में T है तथा (2) में F है ।

(iii) $p.q$ प्रतिज्ञप्ति-आकार की सत्यता-सारणी

p	q	p.q	
T	T	T	(1)
T	F	F	(2)
F	T	F	(3)
F	F	F	(4)

उपरोक्त प्रतिज्ञप्ति-आकार आपातिक है, क्योंकि सत्यता-मूल्य सारणी के अंतिम स्तम्भ के (1) में T है तथा (2), (3), (4) में F है ।

अत: कहा जा सकता है कि वह प्रकथन-आकार जिसका कुछ प्रतिस्थापित दृष्टान्त सत्य और कुछ असत्य हो आपातिक प्रकथन कहा जाता है ।

11.4 सारांश

अत: उपरोक्त विवेचना के आधार पर सारांशत: कहा जा सकता है कि पुनरुक्ति, व्याघाती तथा आपातिक प्रतिज्ञप्ति के तीन रूप हैं । प्रतिज्ञप्ति या प्रकथन-आकार के मुख्य संबंधक के सत्यता-मूल्य के आधार पर यह कहा जा सकता है कि (i) वे जो अनिवार्य रूप से सत्य होती हैं, (ii) वे जो अनिवार्य रूप से असत्य होती हैं (iii) वे जो कभी सत्य होती हैं और कभी असत्य । पहले प्रकार की प्रतिज्ञाप्तियों को पुनरुक्ति, दूसरे प्रकार की प्रतिज्ञाप्तियों को आत्म विरोध या व्याघाती तथा तीसरे प्रकार की प्रतिज्ञप्तियों को आपातिक प्रतिज्ञप्ति कहते हैं ।

11.5 पाठ में प्रयुक्त शब्द

प्रतिज्ञप्ति-आकार

सत्यता-मूल्य

सत्यता सारणी

पुनरुक्ति

व्याघाती

आपातिक

परिवर्तित प्रकथन

11.6 अभ्यास के लिए प्रश्न

11.6.1 वस्तुनिष्ठ प्रश्न :

(i) पुनरुक्ति प्रतिज्ञप्ति :

(अ) इसकी सत्यता अनिवार्य होती है ।

(ब) इसकी असत्यता अनिवार्य होती है ।

(स) यह कभी सत्य और कभी असत्य होता है ।

(द) ऊपरोक्त में से कोई नहीं ।

उत्तर : (अ)

(ii) व्याघाती प्रतिज्ञप्ति :

(अ) इसकी सत्यता अनिवार्य होती है ।

(ब) इसकी असत्यता अनिवार्य होती है ।

(स) यह कभी सत्य और कभी असत्य होता है ।

(द) उपरोक्त में से कोई नहीं ।

उत्तर : (ब)

(iii) आपातिक प्रतिज्ञप्ति

(अ) इसकी सत्यता अनिवार्य होती है ।

(ब) इसकी असत्यता अनिवार्य होती है ।

(स) यह कभी सत्य और कभी असत्य होता है ।

(द) ऊपरोक्त में कोई नहीं ।

उत्तर : (स)

11.6.2 लघु उत्तरीय प्रश्न :

(i) पुनरुक्ति प्रतिज्ञप्ति को स्पष्ट करें ।

(ii) व्याघाती प्रतिज्ञप्ति को स्पष्ट करें ।

(iii) आपातिक प्रतिज्ञप्ति को स्पष्ट करें ।

11.6.3 दीर्घ उत्तरीय प्रश्न :

(i) पुनरुक्ति, व्याघाती तथा आपातिक प्रतिज्ञप्तियों को सोदाहरण स्पष्ट करें ।

11.7 प्रस्तावित पाठ

(i) आई० एम० कापी : प्रतीकात्मक तर्कशास्त्र

(ii) डॉ० केदार नाथ तिवारी : प्रतिकात्मक तर्कशास्त्र : एक सरल परिचय ।

✠✠✠

वस्तुगत एवं तार्किक समता या तुल्यता

पाठ संरचना

12.1 उद्देश्य
12.2 विषय-प्रवेश
12.3 मुख्य विषय की व्याख्या
12.3.1 वस्तुगत समतुल्यता
12.3.2 तार्किक समतुल्यता
12.4 सारांश
12.5 पाठ में प्रयुक्त शब्द
12.6 अभ्यास के लिए प्रश्न
12.6.1 वस्तुनिष्ठ प्रश्न
12.6.2 लघु उत्तरीय प्रश्न
12.6.3 दीर्घ उत्तरीय प्रश्न
12.7 प्रस्तावित पाठ

12.1 उद्देश्य

प्रस्तुत पाठ का मुख्य उद्देश्य वस्तुगत एवं तार्किक समतुल्यता के स्वरूप पर प्रकाश डालना है । दो प्रकथनों के बीच एक विशेष प्रकार के संबंध को समतुल्यता का संबंध कहा गया है । इस संबंध से संबंधित होने पर एक विशेष प्रकार के मिश्र प्रकथन की प्राप्ति होती है, जिसे समतुल्य प्रकथन की संज्ञा दी गयी है । प्रतीकात्मक तर्कशास्त्र के अन्तर्गत दो प्रकार की समतुल्यता का उल्लेख किया गया है–वस्तुगत एवं तार्किक समतुल्यता ।

12.2 विषय–प्रवेश

तर्कशास्त्र युक्ति पर आधारित विद्या है । युक्ति प्रतिज्ञप्तियों से निर्मित होती है । इसलिए तर्कशास्त्र में प्रकथन या प्रतिज्ञप्तियों का विशेष महत्त्व होता है । कोई भी प्रतिज्ञप्ति या तो सत्य होती है या असत्य । बनावट के दृष्टिकोण से प्रतिज्ञप्ति के दो प्रकार होते हैं–सरल एवं मिश्रित । मिश्रित प्रतिज्ञप्ति का निर्माण सरल प्रतिज्ञप्तियों को विभिन्न सम्बन्धों के द्वारा संयुक्त कर बनाया जाता है । ये संबंधक हैं–'और', 'यदि' तो, 'या तो', 'नहीं', 'यदि और केवल यदि' ।

यह स्पष्ट है कि प्रतीकात्मक तर्कशास्त्र परम्परागत तर्कशास्त्र की ही नींव पर विकसित हुआ है । परम्परागत तर्कशास्त्र और प्रतीकात्मक तर्कशास्त्र में गुणात्मक अन्तर नहीं है । अपितु केवल मात्रा का अन्तर है । प्रतीकात्मक

तर्कशास्त्र के प्रतीक किसी युक्ति की तार्किक बनावट को सरलता से स्पष्ट कर देते हैं जो साधारण भाषा के प्रयोग से अस्पष्ट रहता है । प्रतीकात्मक तर्कशास्त्र में प्रतिज्ञप्तियों के लिए अंग्रेजी भाषा के p, q, r, s, t..... अक्षरों को प्रतीक के रूप में प्रयुक्त किया जाता है तथा सरल प्रतिज्ञप्तियों को जोड़कर मिश्रित रूप देने के क्रम में प्रयुक्त विभिन्न संबंधकों के लिए क्रमशः निम्नलिखित प्रतीक चिन्हों का प्रयोग किया जाता है–

(i) 'और' के लिए '.' (Dott) प्रतीक का तथा इनसे बने संयुक्त वाक्य को संयोजक वाक्य (conjunctive statement) कहा जाता है ·

(ii) 'या तो' (Either, or) के लिए Wedge 'v' प्रतीक का व्यवहार होता है तथा उससे निर्मित वाक्य को वियोजक वाक्य (Disjunctive statement) कहा जाता है ।

(iii) 'यदि तब' (If ----------then) के लिए Horse shoe' ⊃ प्रतीक का व्यवहार किया जाता है तथा इससे निर्मित मिश्र वाक्य को सोपाधिक वाक्य (Conditional statement) कहा जाता है ।

(iv) 'यदि और केवल यदि (If and only if) के लिए 'Three bar', '≡' का प्रयोग किया जाता है तथा इससे निर्मित मिश्रित प्रतिज्ञप्ति को समतुल्य प्रतिज्ञप्ति (Equivalent statement) कहा जाता है ।

(v) 'नहीं' (Not) के लिए Tilde '~' प्रतीक का प्रयोग किया जाता है तथा इससे निर्मित वाक्य को निषेधात्मक प्रतिज्ञाप्ति कहा जाता है ।

प्रस्तुत पाठ के अन्तर्गत हम समतुल्य प्रकथन-आकार के स्वरूप तथा इसके प्रमुख प्रकारों की विस्तृत व्याख्या प्रस्तुत करेंगे ।

12.3 मुख्य-विषय की व्याख्या

12.3.1 वस्तुगत समतुल्य (Material Equivalence) :

जब दो प्रकथनों के सत्यता-मूल्य समान हों अर्थात् जब दोनों एक साथ सत्य अथवा असत्य हों, तो ऐसे प्रकथनों को 'वस्तुगत समतुल्य' अथवा 'सत्यता-मूल्य में समतुल्य प्रकथन कहते हैं । I. M. Copi के शब्दों में, "Two statements are said to be materially equivalent when they have the same truth value, when they are either both true or both false."

—Symbolic Logic, P–28.

इस समतुल्यता को Three bar '≡' प्रतीक द्वारा व्यक्त किया जाता है । यहाँ यह भी उल्लेखनीय है कि वस्तुगत समतुल्यता एक सत्यता-फलित संबंधक है जिसे निम्न सत्यता-सारणी के द्वारा व्यक्त किया जा सकता है–

p	q	p ≡ q
T	T	T
T	F	F
F	T	F
F	F	F

जब दो प्रकथन वस्तुगत रूप में समतुल्य होते हैं तो वे एक दूसरे को वस्तुगत रूप में आपादित करते हैं । इसे उपयुक्त सत्यता-सारणी द्वारा स्पष्टता पूर्वक स्थापित किया जा सकता है । उपर्युक्त सत्यता-सारणी में हमने देखा कि पहली तथा अंतिम पंक्ति में p तथा q दोनों प्रकथनों का सत्यता-मूल्य समान है अर्थात् एक में जहाँ दोनों सत्य है, वहीं दूसरे में दोनों ही असत्य हैं । इन दोनों ही स्थितियों में प्रकथन एक दूसरे को आपादित करते हैं, अतः उन्हें वस्तुगत समतुल्यता माना जाएगा ।

12.3.2 तार्किक समतुल्यता (Logical Equivalence) :

वस्तुगत समतुल्यता के ही समान तार्किक समतुल्यता की बात भी सत्यता फलित मिश्र कथन के संदर्भ में की जाती है । I. M. Copi के शब्दों में–

"Two statements are said to be logically equivalent when the biconditional that expresses their material equivalence is a tautology."

—Symbolic Logic, Fifth edition, P—29.

अर्थात् दो प्रकथन तार्किक रूप से समतुल्य हैं, यदि उसकी समता का प्रकथन एक पुनरुक्ति (Tautology) हो। I. M. Copi ने इसे स्पष्ट करने के लिए 'द्विनिषेध के सिद्धान्त' (The principle of double negation) का उदाहरण लिया है, जो प्रतीक रूप में 'P ≡ ~~P' के रूप में दव्युपाधिक (Biconditional) रूप में व्यक्त होता है । निम्न सत्यता-सारणी के द्वारा द्विनिषेधक वाक्य एक पुनरुक्ति होता है तथा वह 'तार्किक समतुल्य प्रकथन' सिद्ध होता है :–

P ≡ ~~ P

P	~P	~~P	P ≡ ~ ~ P
T	F	T	T
F	T	F	T

उपरोक्त प्रतिज्ञप्ति आकार में तार्किक समतुल्यता है क्योंकि यह पुनरुक्ति है । अर्थात् सत्यता-सारणी के अंतिम कॉलम की सभी पंक्तियों में सत्यता-मूल्य केवल सत्य निर्धारित हुआ है ।

यदि P किसी प्रकथन का प्रतीक हो तथा q किसी दूसरे प्रकथन का, तो p को q के साथ तर्कत: तुल्य तभी समझा जाता है यदि और केवल यदि p ≡ q पुनरुक्ति हो । उदाहरण के लिए ~ (p.q) प्रकथन-आकार (~pv ~ q) प्रकथन-आकार के साथ तर्कत: तुल्य है । क्योंकि ~ (p.q) ≡ (~ pv ~ q) एक पुनरुक्ति है, इसे निम्न सत्यता-सारणी के द्वारा स्पष्ट किया जा सकता है ।

P	q	~p	~q	p.q	~ (p.q)	~pv ~ q	~(p.q) ≡ (~pv~q)
T	T	F	F	T	F	F	T
T	F	F	T	F	T	T	T
F	T	T	F	F	T	T	T
F	F	T	T	F	T	T	T

उपरोक्त प्रकथन-आकार तर्कत: समतुल्य है, क्योंकि सत्यता-सारणी के अंतिम कॉलम की सभी पंक्तियों में सत्यता-मूल्य केवल सत्य निर्धारित हुआ है । अर्थात् पुनरुक्ति है ।

[(p. q) ⊃ r] ≡ [p ⊃ (q ⊃ r)] प्रकथन आकार के दोनों प्रकथनों का सत्यता-मूल्य भी समान है इसे भी सत्यता-सारणी के द्वारा स्पष्ट किया जा सकता है ।

p	q	r	p.q	q⊃r	(p.q)⊃ r	q ⊃ (p⊃r)	[(p.q) ⊃ r] = [p (q⊃ r)]
T	T	T	T	T	T	T	T
T	T	F	T	F	F	F	T
T	F	T	F	T	T	T	T
T	F	F	F	T	T	T	T
F	T	T	F	T	T	T	T

F	T	F	F	F	T	T	T
F	F	T	F	T	T	T	T
F	F	F	F	T	T	T	T

यह तर्कत: समतुल्य प्रकथन है, क्योंकि सत्यता सारणी के अंतिम कॉलम की सभी पंक्तियों में सत्यता-मूल्य केवल सत्य निर्धारित हुआ है, अर्थात् पुनरुक्ति है ।

लेकिन $(p \supset q) \equiv \sim p \supset \sim q)$ तर्कत: समतुल्य प्रकथन नहीं है, इसे सत्यता सारणी के द्वारा स्पष्ट किया जा सकता है ।

p	q	~p	~q	p⊃q	~p⊃ ~ q	$(p \supset q) \equiv (\sim p \supset \sim q)$
T	T	F	F	T	T	T
T	F	F	T	F	T	F
F	T	T	F	T	F	F
F	F	T	T	T	T	T

उपरोक्त प्रकथन-आकार तर्कत: समतुल्य नहीं है, क्योंकि यह पुनरुक्ति नहीं है । उपरोक्त सत्यता-सारणी के अंतिम कॉलम की दूसरी तथा तृतीय पंक्ति में देखा जा सकता है ।

12.4 सारांश

उपरोक्त विवेचना के आधार पर सारांशत: कहा जा सकता है कि 'यदि और केवल यदि' के लिए 'Three bar' '≡' का प्रयोग किया जाता है तथा इससे निर्मित मिश्रित प्रकथन को समतुल्य प्रकथन कहा जाता है । प्रतीकात्मक तर्कशास्त्र के अन्तर्गत दो प्रकार की समतुल्यता का उल्लेख किया गया है—वस्तुगत समतुल्यता तथा तार्किक समतुल्यता । जब दो प्रकथनों का सत्यता-मूल्य समान हो अर्थात् जब दोनों एक साथ सत्य अथवा असत्य हों, तो ऐसे प्रकथनों को 'वस्तुगत समतुल्यता' अथवा 'सत्यता-मूल्य' में समतुल्य प्रकथन' कहते हैं । लेकिन दो प्रकथन तार्किकत: समतुल्य तभी कहलाता है जब उसकी समता का प्रकथन एक पुनरुक्ति हो ।

12.5 पाठ में प्रयुक्त शब्द

वस्तुगत समतुल्यता

तार्किक समतुल्यता

समता का प्रकथन

पुनरुक्ति

'यदि और केवल यदि'

सत्यता-फलित संबंधक

12.6 अभ्यास के लिए प्रश्न

12.6.1 वस्तुनिष्ठ प्रश्न :

(i) 'यदि और केवल यदि' संबंधकों के द्वारा निर्मित मिश्रित प्रतिज्ञप्ति को कहा जाता है

(अ) संयोजक प्रतिज्ञप्ति

(ब) वियोजक प्रतिज्ञप्ति

(स) समतुल्य प्रतिज्ञप्ति

(द) सोपाधिक प्रतिज्ञप्ति

उत्तर : (स)

(ii) जब दो प्रकथनों की सत्यता-मूल्य समान हों अर्थात् जब दोनों एक साथ सत्य अथवा असत्य हों, तो ऐसे प्रकथन को कहा जाता है ।

(अ) वस्तुगत समतुल्यता

(ब) तार्किक समतुल्यता

(स) आकारिक समतुल्यता

(द) ऊपरोक्त में से कोई नहीं ।

उत्तर : (अ)

(iii) तार्किक समतुल्यता तभी होता है जब वह

(अ) पुनरुक्ति हो

(ब) व्याघाती हो

(स) आपातिक हो

(द) ऊपरोक्त सभी ।

उत्तर : (अ)

12.6.2 लघु उत्तरीय प्रश्न :

(i) वस्तुगत समतुल्यता को सोदाहरण स्पष्ट करें ।

(ii) तार्किक समतुल्यता को सोदाहरण स्पष्ट करें ।

12.6.3 दीर्घ उत्तरीय प्रश्न :

(i) वस्तुगत एवं तार्किक समतुल्यता के स्वरूप को स्पष्ट करें ।

12.7 प्रस्तावित पाठ

(i) आइ० एम० कापी : प्रतीकात्मक तर्कशास्त्र

(ii) डॉ० केदारनाथ तिवारी : प्रतीकात्मक तर्कशास्त्र : एक सरल परिचय

✠✠✠

शब्दार्थ (Word – Meaning)

पाठ संरचना

13.1 उद्देश्य
13.2 विषय-प्रवेश
13.3 मुख्य विषय की व्याख्या
13.3.1 शब्दार्थ के स्वरूप
13.3.2 शब्दार्थ और वस्तुओं का संबंध
13.3.3 शब्दों के सामान्य प्रयोग का नियम
13.4 सारांश
13.5 पाठ में प्रयुक्त शब्द
13.6 अभ्यास के लिए प्रश्न
13.6.1 वस्तुनिष्ठ प्रश्न
13.6.2 लघु उत्तरीय प्रश्न
13.6.3 दीर्घ उत्तरीय प्रश्न
13.7 प्रस्तावित पाठ

13.1 उद्देश्य

प्रस्तुत पाठ का मुख्य उद्देश्य शब्दार्थ के स्वरूप पर प्रकाश डालना है । जॉन हॉस्पर्स ने अपनी पुस्तक 'An Introduction to Philosophical Analysis' के प्रथम अध्याय में शब्दार्थ के स्वरूप पर प्रकाश डाला है । भाषा हमारे विचारों के आदान-प्रदान का प्रमुख साधन है । भाषा शब्दों से बनती हैं अर्थात् वाक्य शब्दों से बनता है, शब्द वाक्य की इकाई है । अत: यह जानना बहुत आवश्यक है कि शब्द क्या है, शब्द का निर्माण कैसे होता है, इसके विभिन्न अर्थ क्या हो सकते हैं, इसकी परिभाषा क्या है इत्यादि ।

13.2 विषय – प्रवेश

हम सभी जानते हैं कि हमारे विचारों के आदान-प्रदान का प्रमुख साधन 'भाषा' है । John Hospors के शब्दों में, "Among human beings, language is the principal instrument of communication. Any language is composed of words; which are combined to form sentences."—An Introduction to Philosophical Analysis, Page—2. अर्थात् भाषा के निर्माण में शब्दों का विशेष योगदान रहता है, क्योंकि भाषा शब्दों से बनती हैं,

जिनका योग कर वाक्य बनता है । अत: वाक्य शब्दों से बनता है, शब्द वाक्य की इकाई है । शब्द की परिभाषा के रूप में हम यह कह सकते हैं कि यह अर्थ की सबसे छोटी इकाई है । शब्द अक्षरों के योग से बनता है (A word is formed by the composition of letters). अक्षर शब्द की सबसे छोटी इकाई है । शब्द और अक्षर में पूर्ण एवं अंश का संबंध है । जिस प्रकार ईंटों को जोड़कर मकान बनाया जाता है उसी प्रकार अक्षरों को जोड़कर शब्द बनते हैं । जैसे–'कलम' शब्द, 'क', 'ल', 'म' तीन अक्षरों के योग से बना है । किन्तु जहाँ 'कलम' शब्द का अर्थ होता है, वहीं जिन अक्षरों से उस शब्द का निर्माण होता है उनका कोई अर्थ नहीं होता है । यौगिक शब्दों में भी 'शब्द' ही अर्थ की इकाई होता है जैसे–पुस्तकालय, धर्मशाला ये दोनों ही शब्द दो शब्दों के मेल से बने हैं । परन्तु यहाँ भी अर्थ की इकाई शब्द ही हैं । इस प्रकार, अक्षर केवल शब्दों के निर्माता हैं ।

अब स्वभावत: प्रश्न उठता है कि क्या शब्द केवल एक ध्वनि या अंकित चिन्ह है ? इसके उत्तर में हम यह कह सकते हैं कि शब्द वह ध्वनि या अंकित चिन्ह है जिसका कोई अर्थ होता है (A word, no doubt, spoken noise or a set of written marks but with a meaning) शब्द के लिए अर्थ का होना आवश्यक है किन्तु इसका यह अर्थ नहीं है कि जिस चीज का भी अर्थ हो वह शब्द नहीं होता है । गणित के चिन्ह (+, –, × , ÷ इत्यादि) का भी अर्थ होता है, परन्तु वे शब्द नहीं होते हैं । 'घंटी' बजने का भी विभिन्न अर्थ होता है, लेकिन वे भी शब्द नहीं होते हैं जैसे–एक प्रकार की घंटी बजने का अर्थ है कि चर्च में प्रार्थना का समय हो गया है, मकान के बाहर लगी स्वीच के दबाने से जो घंटी बजती है तो उसका अर्थ है कि बाहर में कोई व्यक्ति है, फोन की घंटी बजने का भी अपना विशेष अर्थ है, किन्तु इन सारे को शब्द नहीं माना जाएगा । उन्हें चिन्ह (sign) कहा जाता है ।

चिन्ह दो प्रकार के होते हैं–प्राकृतिक तथा रूढ़ । शब्द प्राकृतिक चिन्ह नहीं है वरन् रूढ़ चिह्न है । प्राकृतिक चिन्ह के उदाहरणस्वरूप हम कह सकते हैं जैसे–आकाश में काले बादल बारिश का चिन्ह है, ये प्राकृतिक चिन्ह हैं क्योंकि ये प्रकृति में पाये जाते हैं । मनुष्यों ने इन्हें नहीं बनाया है ।

मनुष्यों ने 'शब्दों को अर्थ प्रदान किया है । कुछ ध्वनियों का मनुष्य कई अर्थ लगा देता है और उस ध्वनि का वह अर्थ रूढ़ हो जाता है । विभिन्न ध्वनियों का भिन्न भाषाओं में एक ही अर्थ होता है । जैसे–अंग्रेजी का 'Cat' फ्रेंच में 'Chat' और जर्मन में 'katze' इस प्रकार अलग-अलग ध्वनियों का अर्थ सैकड़ों वर्षों से विकसित होता आया है । हमने उसे सीखा है । हम उस परम्परा या अभ्यास को सीखते हैं । अत: शब्द रूढ़ चिन्ह है, प्राकृतिक चिन्ह नहीं ।

हम पाते हैं कि प्राकृतिक चिन्हों में तथा वे जिनका चिह्न है दोनों से कारणता का संबंध होता है या साम्य का संबंध । घने बादलों एवं वर्षा में कारणता का संबंध है । किसी शहर के नक्शों में और उस शहर में साम्य है । पर कुछ चिह्नों में प्रकृति एवं रूढ़ तत्त्व दोनों ही रहते हैं । मान लें, रोड के किनारे एक सांकेतिक चिन्ह है जो मोटर चालक को यह संकेत देता है कि आगे बच्चों का स्कूल है । अत: धीमें जाएँ । यह संकेत कहीं तो 'स्कूल' लिखकर दिया जाता है या कहीं बच्चों के स्कूल का चित्र बनाकर । 'स्कूल' शब्द लिखकर यदि स्कूल का संकेत दिया जाए तो यह चिन्ह पूर्णत: रूढ़ है और जब स्कूल का चित्र बना दिया जाए तो यह प्राकृतिक चिन्ह कहलाएगा । पर इतना होते हुए भी उस चिन्ह का कोई अर्थ नहीं रहेगा, यदि मोटरचालक इसे सीखे नहीं । अत: उस चित्र और बच्चों के स्कूल में प्राकृतिक संबंध होते हुए भी अर्थ को सीखना पड़ता है, जिसे मनुष्य ने बनाया है । इस प्रकार, शब्द जिनमें ध्वनि और अर्थ का साम्य होता है, उनके उस अर्थ को जो मनुष्य ने दिया है, सीखना पड़ता है ।

13.3.2 शब्द और वस्तुओं का संबंध (Relation of words to things)

प्रारंभ में लोगों का यह विश्वास था कि शब्द और जिस वस्तुओं के लिए उन शब्दों का प्रयोग होता है, उनमें प्राकृतिक संबंध है । लेकिन वस्तुत: शब्दों तथा जिन वस्तुओं के लिए उन शब्दों का प्रयोग होता है उनके बीच कोई प्राकृतिक संबंध नहीं है । शब्द का अर्थ किसी व्यक्ति द्वारा दिया जाता है, उसकी खोज नहीं की जाती ।

हॉस्पर्स के अनुसार, शब्द तथा उनसे जिन वस्तुओं का संकेत मिलता है, उनमें वैसा ही संबंध है जैसा संबंध बोतल के ऊपर चिपके हुए लेबुल और बोतल के अन्दर रखी हुई वस्तु में होता है । जिस प्रकार, लेबुल केवल यही

ज्ञात कराता है कि बोतल में है क्या, किन्तु बोतल के अन्दर रखी वस्तु के साथ उसका कारणता तथा साम्य का कोई प्राकृतिक संबंध नहीं रहता है । उसी प्रकार शब्द भी रूढ़ चिन्ह हैं जिनमें कोई प्राकृतिक संबंध नहीं होता है । जिस प्रकार, विभिन्न लेबुल विभिन्न भाषाओं में लिखे रहते हैं और इन्हें अलग-अलग भाषा के लोग बराबर रूप में समझ भी लेते हैं क्योंकि वे लेबुल पर लिखे अक्षर के अर्थ को जानते हैं, उसी प्रकार अलग-अलग भाषाओं में लिखे गये वे शब्द के अर्थ को उस भाषा को जानने वाले लोग आसानी से समझ लेते हैं । जिस प्रकार लेबुल मात्र यह संकेत करता है कि बोतल में क्या है तथा उसके साथ उसका कोई आन्तरिक संबंध नहीं होता है । उसी प्रकार शब्द भी मात्र संकेतक है तथा जिस वस्तु की ओर वे संकेत करते हैं, उससे उसका कोई आन्तरिक संबंध नहीं होता है ।

यद्यपि शब्द रूढ़ चिन्ह होते हैं, जिनका वस्तुओं के साथ कोई संबंध या साम्य नहीं होता है, फिर भी हम गलत शब्दों का प्रयोग नहीं कर सकते हैं या किसी भी वस्तु को किसी भी नाम से संबंधित नहीं कर सकते हैं । उदाहरणस्वरूप–हम जिस वस्तु पर बैठते हैं उसे कुर्सी के स्थान पर पंखा संबोधित नहीं कर सकते हैं ।

13.3.3 शब्दों के सामान्य प्रयोग का नियम (The rule of common usage) :

शब्दों के सामान्य प्रयोग के नियम का पालन करना आवश्यक है क्योंकि जिस प्रयोग का प्रचलन हो गया है, उसे वैसे ही प्रयोग करने से सरलता एवं सुविधा मिलती है । किन्तु, यदि किसी शब्द के प्रचलित प्रयोग से विपरीत अर्थ में प्रयोग किया गया तो लोगों को उस नये अर्थ से परिचित करा देना आवश्यक है । वैज्ञानिक क्षेत्रों में शब्दों का प्रयोग विशेष अर्थ में होता है ।

परन्तु शब्दों के सामान्य प्रयोग के नियम का अपवाद भी होता है । शब्दों के प्रयोग में हम हमेशा सामान्य प्रयोग के नियम को नहीं मान सकते हैं क्योंकि कुछ परिस्थितियों में इसका पालन कठिन हो जाता है । कभी ऐसा भी हो सकता है कि हमें अपने विचारों को व्यक्त करने के लिये कोई भी उचित शब्द नहीं मिलता है । ऐसी परिस्थिति में हम कोई शब्द गढ़ लेते हैं या एक नया मनमाना चिन्ह ढूंढ़ लेते हैं जिसका अपनी भाषा में कोई नाम नहीं है । इसके पश्चात् जिस शब्द को हमने गढ़ा है यदि लोग उसे प्रयोग में लाने लगते हैं तो यह रूढ़ चिह्न हो जाएगा और सामान्य प्रयोग में आने लगेगा । गणितज्ञ कासनर को 10^{100} को सूचित करने के लिए उचित शब्द नहीं मिल पा रहा था तो उसने अपने पोते से इस विषय में पूछा । पोतेने कहा 'Googol' । आज गणित की भाषा में 'Googol' 10^{100} के लिए प्रयुक्त हो गया है ।

कभी-कभी ऐसा भी होता है कि हम सामान्य प्रयोग से हटकर किसी शब्द का प्रयोग इसलिए करना चाहते हैं क्योंकि जिस वस्तु के लिए उसका प्रयोग होता है । उसके लिए पहले से दूसरा शब्द है । उदाहरणस्वरूप, कुछ लोग 'ईश्वर' शब्द का प्रयोग सम्पूर्ण विश्व के लिये करते हैं जबकि सामान्यत: ईश्वर शब्द का प्रयोग अतिप्राकृतिक सत्ता के लिये किया जाता है ।

कभी-कभी किसी शब्द के सामान्य प्रयोग से हटकर नये अर्थ में उस शब्द का प्रयोग लोगों को अप्रमाणित निष्कर्षों को मनवाने के लिये किया जाता है । यदि कोई कहता है कि संसार में कुछ भी भौतिक नहीं है, केवल चित्त है तो लोग इसका विरोध करेंगे । किन्तु, जब वह यह बताता है कि जिसे हम भौतिक पदार्थ कहते हैं उनका भी 'चित्त' शब्द से संकेत किया जा सकता है, यदि चित्त को व्यापक अर्थ में लिया जाए । इस प्रकार, वह कोई नयी बात कहकर हमारे सामने रखता है, वह शब्द का एक जाल है ।

कभी-कभी ऐसा भी होता है कि किसी शब्द के सामान्य प्रयोग में किसी वस्तु का संकेत होता है पर उसका प्रयोग ऐसी अनिश्चितता या अस्पष्टता से किया जाता है कि हम उससे असंतुष्ट रहते हैं, ऐसी स्थिति में उसी प्रकार से उसका प्रयोग करना लाभदायक प्रतीत नहीं होता है ।

13.4 सारांश

सारांशत: कहा जा सकता है कि 'भाषा' हमारे विचारों के आदान-प्रदान का प्रमुख साधन है । भाषा का निर्माण शब्दों के द्वारा होता है । शब्दों के अर्थ के द्वारा ही भाषा का अर्थ समझा जा सकता है । अक्षर शब्द की सबसे छोटी इकाई है । शब्द के लिये अर्थ का होना आवश्यक है । मनुष्यों ने शब्दों को अर्थ प्रदान किया है । अत: शब्द रूढ़ चिन्ह है, प्राकृतिक चिन्ह नहीं । शब्द भी मात्र संकेतक हैं तथा जिस वस्तु की ओर वे संकेत करते हैं, उससे उसका कोई आन्तरिक संबंध नहीं होता ।

13.5 पाठ में प्रयुक्त शब्द

शब्दार्थ

भाषा

अक्षर

प्राकृतिक चिन्ह

रूढ़ चिन्ह

कारणता का संबंध

13.6 अभ्यास के लिये प्रश्न

13.6.1 वस्तुनिष्ठ प्रश्न :

(i) अर्थ की सबसे छोटी इकाई है

(अ) भाषा

(ब) शब्द

(स) अक्षर

(द) ऊपरोक्त सभी

उत्तर : (ब)

(ii) हास्पर्स के अनुसार किसी भी शब्द का अर्थ है

(अ) प्राकृतिक चिन्ह

(ब) रूढ़ चिन्ह

(स) शब्द तथा वस्तु के बीच आन्तरिक संबंध

(द) ऊपरोक्त में से कोई नहीं ।

उत्तर : (ब)

13.6.2 लघु उत्तरीय प्रश्न :

(i) शब्द क्या है ? स्पष्ट करें ।

(ii) शब्द तथा वस्तु के बीच संबंध को स्पष्ट करें ।

13.6.3 **दीर्घ उत्तरीय प्रश्न :**

(i) हॉस्पर्स के आलोक में शब्दार्थ के स्वरूप को स्पष्ट करें । शब्द और वस्तुओं के बीच संबंध को स्पष्ट करें ।

13.7 प्रस्तावित पाठ

(i) जॉन हॉस्पर्स : दार्शनिक विश्लेषण परिचय

(ii) गोवर्द्धन भट्ट : दार्शनिक विश्लेषण परिचय

✠✠✠

'अर्थ' शब्द के विभिन्न अर्थ

पाठ संरचना

14.1 उद्देश्य

14.2 विषय-प्रवेश

14.3 मुख्य विषय की व्याख्या

14.3.1 'अर्थ' शब्द के विभिन्न अर्थ

14.3.2 अर्थ विषयक प्रश्नों का अर्थ

14.4 सारांश

14.5 पाठ में प्रयुक्त शब्द

14.6 अभ्यास के लिए प्रश्न

14.6.1 वस्तुनिष्ठ प्रश्न

14.6.2 लघु उत्तरीय प्रश्न

14.6.3 दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

14.7 प्रस्तावित पाठ

14.1 उद्देश्य

प्रस्तुत पाठ का उद्देश्य 'अर्थ' शब्द के विभिन्न अर्थ क्या होते हैं, इसके स्वरूप को स्पष्ट करना है । 'अर्थ' शब्द का प्रयोग विभिन्न अर्थ में किया जाता है जो निम्नलिखित हैं–संकेत, कारण, परिणाम, अभिप्राय, व्याख्या, प्रयोजन, आपादान, महत्त्व । किसी शब्द का प्रयोग कई अर्थों में होता है । ऐसे शब्द को अनेकार्थक कहा जाता है । प्राय: ऐसे शब्दों का अर्थ संदर्भ के अनुसार स्पष्ट किया जाता है । अर्थात् अर्थ सापेक्ष होता है, निरपेक्ष नहीं ।

14.2 विषय–प्रवेश

भाषा मनुष्य के विचारों, भावनाओं, संवेगों आदि के संज्ञापन का प्रमुख साधन है । भाषा के माध्यम से ही दार्शनिक विवेचन सम्पन्न हो सकते हैं तथा दार्शनिक सम्प्रदायों की स्थापना हो सकती है । यद्यपि भाषा का इतना अधिक महत्त्व है और इसके कुछ पहलुओं की चर्चा भी हुई है, फिर भी भाषा-विषयक समस्याओं की महत्ता गौण ही थी । उन्नीसवीं सदी के अन्त के समय तथा बीसवीं सदी की शुरूआत में तथा विशेषकर तार्किक भाववाद के आगमन के पश्चात् तत्वमीमांसीय प्रश्नों की महत्त्वहीनता सामने आई तथा भाषायी समस्याओं का हल प्रमुख हो गया और सारे प्रमुख दार्शनिकों ने भाषा, शब्द एवं अर्थ से संबंधित प्रश्नों की चर्चा करनी प्रारंभ कर दी । जैसा की Dr. Margaret

Chatterjee का कहना है–"Interest in language was futher stimulated in Cambridge by the publication of Ogden and Richard's book, The Meaning of Meaning.'

अब चूँकि भाषा ही दार्शनिकों की प्रमुख समस्या बन गयी है, अत: इनका लक्ष्य था ''भाषा, धारणाओं एवं विचारों के अर्थ का तार्किक स्पष्टीकरण'' (Logical classification of the meaning of language concept or thoughts) भाषा दर्शन तथा दार्शनिक विश्लेषण के क्षेत्र में 'अर्थ' तथा इसकी विभिन्न समस्याओं की चर्चा का विशेष महत्त्व हो गया है ।

14.3 मुख्य–विषय की व्याख्या

14.3.1 'अर्थ' शब्द के विभिन्न अर्थ :

जब किसी भी वस्तु 'क' किसी दूसरी वस्तु 'ख' का चिन्ह होती है, तो कहा जाता है कि 'क' का अर्थ है 'ख', पर चूँकि 'क' किसी वस्तु 'ख' का विभिन्न तरीके से चिन्ह हो सकता है, इसलिए 'क' विभिन्न तरीके से 'ख' का अर्थ हो सकता है । अत: एक प्रश्न यह उठता है कि शब्द का उसके अर्थ के साथ क्या संबंध हो सकता है । किन्तु इन संबंधों को जानने के पूर्व हमें यह देख लेना आवश्यक है कि अर्थ शब्द का प्रयोग कितने तरीकों से होता है। इस प्रकार, 'अर्थ', शब्द के विभिन्न अर्थ इस प्रकार होंगे–

(i) **संकेत (Indicator) :** 'अर्थ' शब्द का प्रयोग संकेत के अर्थ में किया जाता है, क्योंकि जब हम यह कहते हैं कि ''आकाश में काले बादलों का अर्थ है कि वर्षा होने वाली है ।'' इस वाक्य में 'अर्थ' शब्द का प्रयोग संकेत के लिए किया गया है अर्थात् काले बादलों का अर्थ है वर्षा का होना । अत: 'अर्थ' शब्द का प्रयोग संकेत के अर्थ में भी किया जाता है ।

(ii) **कारण (Cause) :** 'अर्थ' शब्द का प्रयोग कारण के अर्थ में किया जाता है । जब हम कहते हैं कि 'क' का अर्थ क्या है ? अथवा 'क' का कारण क्या है ? उदाहरणस्वरूप वर्षा का कारण क्या है ? यहाँ अर्थ शब्द का प्रयोग कारण के संदर्भ में हैं, अर्थात् बादल ही वर्षा का कारण है ।

(ii) **परिणाम (Effect) :** कभी-कभी 'अर्थ' शब्द का प्रयोग परिणाम के लिए भी किया जाता है । कई बार जब हम यह कहते हैं कि 'क' का अर्थ 'ख' है तो इसकी व्याख्या हम इस प्रकार कर सकते है 'ख' 'क' का परिणाम है या 'क' का परिणाम 'ख' है । यदि हम यह कहते हैं कि इसका अर्थ है अकाल या भूखमरी' अर्थात् इसका परिणाम अकाल और भूखमरी है । इस प्रकार, 'अर्थ' शब्द का प्रयोग कार्य या परिणाम के लिए भी किया जाता है ।

(iv) **अभिप्राय (Intention) :** कभी-कभी 'अर्थ' शब्द का प्रयोग अभिप्राय के लिए भी होता है । जैसे–जब हम यह कहते हैं–'मेरे कहने का अर्थ यह था' अर्थात् 'मेरे कहने का अभिप्राय यह था ।' या अगर मैं कहता हूँ ''मेरा अर्थ कपड़े धोने का था' अर्थात् 'मेरा अभिप्राय कपड़ा धोना था ।' इस प्रकार 'अर्थ' शब्द का प्रयोग अभिप्राय के लिए भी होता है ।

(v) **व्याख्या (Explanation) :** कभी-कभी 'अर्थ' शब्द का प्रयोग व्याख्या के लिये, भी किया जाता है, क्योंकि जब हम किसी घटना का 'अर्थ' पूछते हैं तो उसकी व्याख्या जानना चाहते हैं । ऐसा क्यों हुआ ? अर्थात् जवाब में व्याख्या या स्पष्टीकरण दिया जाता है । उदाहरणस्वरूप, जब हम कहते हैं कि 'प्रकृति में समरूपता है' तो इसकी हम व्याख्या चाहते हैं ।

(vi) **प्रयोजन (Purpose) :** 'अर्थ' शब्द प्रयोजन के लिए भी प्रयुक्त होता है । जैसे–रात में पढ़ने का अर्थ है, शांतिपूर्वक पढ़ना ।' अर्थात् रात में पढ़ने का प्रयोजन है शांतिपूर्वक पढ़ना । कभी-कभी 'प्रयोजन' का

अर्थ वही हो जाता है जो अभिप्राय का होता है ।

(vii) **आपादान (Implication) :** कभी-कभी 'अर्थ' शब्द आपादान के लिए प्रयुक्त होता है, जैसे–हम कहते हैं–यदि तुम मेहनत करोगे तो इसका अर्थ है तुम अच्छे अंक से पास करोगे । अर्थात् मेहनत से पढ़ना आपादित करता है अच्छे नम्बर से पास करना ।

(viii) **महत्त्व (Significance) :** कभी-कभी 'अर्थ' शब्द का प्रयोग महत्त्व के लिए भी किया जाता है । उदाहरणस्वरूप–तुम्हारे जीवन का महत्त्व क्या है ? अर्थात् तुम्हारे जीवन का अर्थ क्या है ? किन्तु 'महत्त्व' शब्द स्वयं अनेकार्थक है अत: यह जानना आवश्यक है कि 'महत्त्व' से पूछने वाले का क्या उद्देश्य है ।

यहाँ एक महत्त्वपूर्ण प्रश्न यह उठता है कि अर्थ शब्द के विभिन्न अर्थों के कारण जब अर्थ के संबंध में कोई प्रश्न उठता है तो हमेशा यह स्पष्ट नहीं होता है कि कौन सा अर्थ पूछा जा रहा है । अत: अर्थ विषयक प्रश्नों का अर्थ स्पष्ट होना आवश्यक है ।

14.3.2 अर्थ विषयक प्रश्नों का अर्थ

हॉस्पर्स के अनुसार जब किसी शब्द का अर्थ पूछा जा रहा हो तो यह स्पष्ट कर ही लेना चाहिए कि प्रश्न शब्द के अर्थ के विषय में है या उस वस्तु के विषय में जिसके लिए शब्द का प्रयोग किया जा रहा है । उदाहरणस्वरूप-जब हम यह कहते हैं; ''जीवन का अर्थ क्या है ?' यह तो बिल्कुल ही स्पष्ट है कि इस प्रश्न में जीवन शब्द का अर्थ नहीं पूछा जा रहा है वरन् जीवन की महत्ता उसके विभिन्न पहलुओं के विषय में प्रश्न किया जा रहा है । इस प्रकार, यदि कोई कहता है कि ''क्या तुम जानते हो, युद्ध का अर्थ क्या होता है ?'' यहाँ भी यह स्पष्ट है कि इस प्रश्न में वक्ता यह स्पष्ट करना चाह रहा है कि युद्ध का परिणाम क्या होता है, अर्थात् तोड़-फोड़, गरीबी भूखमरी आदि ।

अत: 'अर्थ' शब्द के प्रयोग के समय अर्थ विषयक प्रश्नों का स्पष्ट होना आवश्यक है ।

कुछ इसी प्रकार की कठिनाई उन प्रश्नों के संदर्भ में होते हैं जिनका संबंध ऐसे विषयों से होता है जैसे–काल, भूत, मनुष्य, दर्शनशास्त्र, आदि । यदि कोई पूछता है कि काल क्या है ? यहाँ पूछने वाला 'काल' शब्द का अर्थ नहीं पूछ रहा है । इस प्रश्न से यह स्पष्ट नहीं होता है कि शब्द का अर्थ पूछा जा रहा है या संकेत । इस प्रकार के सामान्य प्रश्नों के साथ यह कठिनाई है कि प्रश्न अस्पष्ट होते हैं । अत: स्पष्ट उत्तर के लिए प्रश्नों का स्पष्ट होना आवश्यक है ।

कई बार हम यह भी पाते हैं कि किसी शब्द का प्रयोग कई अर्थों में होता है । ऐसे शब्द को 'अनेकार्थक' कहा जाता है । प्राय: ऐसे शब्दों का अर्थ संदर्भ (Context) के अनुसार स्पष्ट किया जाता है । जैसे एक शब्द है 'सोना' जिसका अर्थ 'निद्रा' भी हो सकता है या एक कीमती धातु भी हो सकता है । अत: किसी शब्द के अर्थ को स्पष्ट रूप से समझने के लिए किस संदर्भ में इसका प्रयोग हुआ है, यह जान लेना आवश्यक है । अर्थात् किसी शब्द का अर्थ सापेक्ष होता है, निरपेक्ष नहीं ।

14.4 सारांश

उपयुक्त विवेचना के आधार पर सारांशत: कहा जा सकता है कि 'अर्थ' शब्द के कई अर्थ होते हैं अर्थात् किसी शब्द का अर्थ Contextual होता है क्योंकि किसी शब्द का प्रयोग किस अर्थ में हुआ है, यह जानने के लिए संदर्भ को जानना आवश्यक है । इसलिए किसी शब्द का अर्थ सापेक्ष होता है, निरपेक्ष नहीं । 'अर्थ' शब्द का प्रयोग कई तरीकों से होता है जैसे संकेत, कारण, कार्य, महत्त्व, अभिप्राय, व्याख्या, प्रयोजन, आपादान आदि ।

14.5 पाठ में प्रयुक्त शब्द

तार्किक भाववाद

तत्वमीमांसीय प्रश्न

संकेत

कारण

परिणाम

अभिप्राय

व्याख्या

प्रयोजन

आपादान

महत्त्व

अनेकार्थक

संदर्भ

14.6 अभ्यास के लिए प्रश्न

14.6.1 वस्तुनिष्ठ प्रश्न :

(i) किसी भी शब्द का अर्थ होता है–

(अ) निरपेक्ष

(ब) सापेक्ष

(स) संदर्भ-निरपेक्ष

(द) ऊपरोक्त में से कोई नहीं ।

उत्तर : (ब)

(ii) 'जीवन का अर्थ क्या है ?' यहाँ किस अर्थ में जीवन का प्रयोग किया गया है–

(अ) संकेत

(ब) कारण

(स) महत्त्व

(द) आपादान

उत्तर : (स)

14.6.2 लघु उत्तरीय प्रश्न :

(i) किसी भी शब्द का अर्थ संदर्भ पर निर्भर करता है' स्पष्ट करें ।

(ii) 'अर्थ' शब्द व्याख्या के लिए भी प्रयुक्त होता है, सोदाहरण स्पष्ट करें ।

14.6.3 दीर्घ उत्तरीय प्रश्न :

(i) 'अर्थ' शब्द के विभिन्न अर्थों की चर्चा करें ।

14.7 प्रस्तावित पाठ

(i)	जॉन हॉस्पर्स	:	दार्शनिक विश्लेषण परिचय
(ii)	गोबर्द्धन भट्ट	:	दार्शनिक विश्लेषण परिचय

✠✠✠

आलंकारिक एवं संवेगात्मक अर्थ

पाठ संरचना

15.1 उद्देश्य

15.2 विषय-प्रवेश

15.3 मुख्य विषय की व्याख्या

15.3.1 आलंकारिक अर्थ

15.3.2 संवेगात्मक अर्थ

15.4 सारांश

15.5 पाठ में प्रयुक्त शब्द

15.6 अभ्यास के लिए प्रश्न

15.6.1 वस्तुनिष्ठ प्रश्न

15.6.2 लघु उत्तरीय प्रश्न

15.6.3 दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

15.7 प्रस्तावित पाठ

15.1 उद्देश्य

प्रस्तुत पाठ का उद्देश्य आलंकारिक एवं संवेगात्मक अर्थ के स्वरूप से परिचित करवाना है । अर्थ तथा अर्थ विषयक प्रश्नों का दर्शनशास्त्र में विशेषकर भाषा-दर्शन अथवा दार्शनिक विश्लेषण के क्षेत्र में बहुत महत्त्वपूर्ण स्थान है ।

15.2 विषय – प्रवेश

अर्थ और अर्थ विषयक प्रश्नों का स्पष्टीकरण भाषा-दर्शन का मूल विषय है । जब कोई वस्तु 'क' किसी दूसरी वस्तु 'ख' का चिन्ह होता है, तो कहा जाता है कि 'क' का अर्थ है 'ख' । किन्तु अर्थ के भी विभिन्न पहलू होते हैं अर्थात् किसी शब्द की कई प्रकार की गुणवाचकता के प्रयोग करने से किसी व्यक्ति के मन में जो बातें सहचारी हैं अर्थात् मन में जो बातें आती हैं, उन्हें ही उस शब्द की गुणवाचकता कहते हैं । किन्तु, किसी शब्द का अर्थ एक चीज है और उस शब्द के श्रोताओं या पाठकों पर जो परिणाम होता है वह दूसरी चीज है । यद्यपि अर्थ और परिणाम एक दूसरे से भिन्न हैं फिर भी कई लोगों ने तथा कुछ दार्शनिकों ने भी कई प्रकार की गुणवाचकता की चर्चा की है तथा उसे अर्थ के अन्तर्गत रखा है । किसी भी शब्द की अनेक गुणवाचकताएँ हो सकती हैं किन्तु हम उनमें से दो मुख्य गुणवाचकताओं को देखेंगे और यह भी देखेंगे कि क्या उन्हें अर्थ कहा जा सकता है–

(i) आलंकारिक अर्थ

(ii) संवेगात्मक अर्थ

15.3 मुख्य विषय की व्याख्या

15.3.1 आलंकारिक अर्थ :

अपनी भाषा में हम कई बार अलंकारों का प्रयोग करते हैं । आलंकारिक अर्थ से हमारा तात्पर्य है भाषा में तथा वाक्यों में ऐसे शब्द का प्रयोग करना जिससे वाक्य सुनने में अच्छा लगे अथवा जिनमें वाक्यों की सुन्दरता निखर आए । उदाहरणार्थ, ''अवलोक रहा है बार-बार, नीचे जल में निज महाकार ।'' पंत की इन पंक्तियों का जो प्रभाव होता है वह 'पर्वत के नीचे पानी में बड़ी परछाई दिखाई दे रही है'' का नहीं है । और पंत का ही ''सुख-दुख के मधुर मिलन से यह जीवन हो परिपूरन'' इस कथन से भिन्न है कि ''जीवन में सुख और दुःख का समन्वय हो'' । इसी प्रकार महादेवी का ''बिकसते मुरझाने को फूल, उदय होता छिपने को चंद'' इस कथन से भिन्न है कि ''जगत में उत्थान और पतन का क्रम अनिवार्य है ।'' क्या इन युग्मों में से प्रत्येक में अर्थ-भेद है या केवल प्रभाव का अंतर ? यहाँ परिस्थिति बहुत कम स्पष्ट है । यह कहना आसान है कि ''यहाँ पंक्तियों के प्रत्येक जोड़े का अर्थ तो एक ही है, पर प्रभाव अलग-अलग है ।'' क्या यह सही है ? क्या अधिक सच यह कहना न होगा कि ''इन पंक्तियों के अलग-अलग प्रभाव हैं । क्योंकि अर्थ अलग-अलग हैं''? हम आलंकारिक भाषा में कहते हैं कि ''बोतल की गर्दन'' शाब्दिक अर्थ में तो केवल जीवित प्राणियों की गर्दन होती है । किन्तु आलंकारिक भाषा में हम बोतल की गर्दन की बात करते हैं । शाब्दिक रूप में हम कहते हैं, ''मैने जंगल में एक लोमड़ी देखी ।'' किन्तु आलंकारिक भाषा में हम कहते हैं, ''तुम एक लोमड़ी हो ।'' पहले वाक्य में लोमड़ी शब्द का प्रयोग एक पशु के लिए किया गया है और दूसरे वाक्य में लोमड़ी शब्द चालाकी का परिचायक है ।

ऊपर वर्णित उदाहरणों में हम पाते हैं कि शाब्दिक तथा आलंकारिक प्रयोगों के अर्थों में समानता होती है । बोतल की गर्दन कुछ तरीकों से जीवित प्राणियों की गर्दन के समान ही होती है । उसी प्रकार जब एक व्यक्ति को लोमड़ी कहते हैं, तो इसका तात्पर्य है कि उसमें कुछ लक्षण हैं जो लोमड़ी में पाये जाते हैं । इस प्रकार, यदि हम किसी शब्द का शाब्दिक अर्थ जानते हैं और उस शब्द के आलंकारिक प्रयोग को सुनते हैं तो हम उस शब्द के आलंकारिक अर्थ को भी आसानी से समझ सकते हैं । इसी प्रकार, हम कई प्रकार से भाषा में आलंकारिक प्रयोग करते हैं जैसे-हार्दिक-स्वागत, सत्य का एक दाना, भारी हृदय आदि ।

इस प्रकार, किसी भाषा में जो किसी शब्द का अर्थ होता है उससे आलंकारिक अर्थ निकालने की प्रवृत्ति रहती है । एक आधार अर्थ से कई आलंकारिक अर्थ इस प्रकार प्रस्फुटित होते हैं, जैसे एक वृक्ष की अनेक टहनियाँ ।

हमने यह भी देखा कि किसी शब्द का शाब्दिक अर्थ तथा आलंकारिक अर्थ में कुछ न कुछ समानता अवश्य होती है । शब्द के दोनों ही अर्थों का प्रयोग अति प्राचीन है तथा दोनों ही शब्द-कोष में पाए जाते हैं ।

15.3.2 संवेगात्मक अर्थ :

अब हम सर्वाधिक चर्चित और सर्वाधिक विवादास्पद प्रकार के संपृक्तार्थ पर आते हैं । कहा गया है कि किसी शब्द का संवेगात्मक अर्थ ''प्रिय या अप्रिय अनुभूति की वह वास है जो उसके चारों ओर मंडराती है ।'' (मॉनरो सी० बियर्डस्ली, ईस्थेटिक्स-न्यूयार्क हार्कोर्ट ब्रेस एंड वर्ल्ड 1958, पृ०-125) । किसी शब्द के विषय में जो अनुकूल या प्रतिकूल भावनाओं के लक्षण लगे रहते हैं या उस शब्द के प्रयोग से श्रोताओं अथवा पाठकों के मन में जो अनुकूल या प्रतिकूल भावनाएँ उत्पन्न होती हैं उसे ही उस शब्द का संवेगात्मक अर्थ कहा जाता है । कभी-कभी जिसे हमने शब्द का अर्थ (परिभाषा) कहा है वह ''संज्ञानात्मक अर्थ'' कहलाता है और श्रोताओं या पाठकों के ऊपर उसका प्रभाव (विशेषत: उसके द्वारा उभारी गई अभिवृत्तियाँ और अनुभूतियाँ) उसका ''संवेगात्मक अर्थ'' कहलाता है । इस प्रकार

'अंग्रेज और 'फिरंगी' का संज्ञानात्मक अर्थ एक ही होगा, पर इसके संवेगात्मक अर्थों में बहुत बड़ा अन्तर है । संवेगात्मक अर्थ में जो आता है वह उसका एक अंश, हालाँकि यह अंश महत्त्वपूर्ण होता है, मात्र होता है जो 'गौण अर्थ' में आता है । जो आदमी किसी को 'फिरंगी' कहता है वह न केवल उसे अंग्रेज बताता है बल्कि उसके प्रति प्रतिकूल भावना रखने वाला भी समझा जाएगा, जबकि उसे 'अंग्रेज' कहने में वह ऐसा नहीं समझा जाएगा ? इस प्रसंग में प्रतिकूल भावना स्वयं शब्दार्थ का ही अंग बन गई लगती है, क्योंकि इसका ऐसा प्रयोग लगभग सभी करते हैं । जो व्यक्ति दूसरे को 'फिरंगी' कहता है वह स्वयं अपनी भावना को भी उतना ही प्रकट करता है जितना उस अन्य व्यक्ति की राष्ट्रीयता को ।

हम यह पाते हैं कि भाषा के प्रयोग के दो प्रमुख उद्देश्य हैं--

(i) संज्ञात्मक, व्याख्यात्मक या शाब्दिक अर्थ

(ii) संवेगात्मक अर्थ

जब हम कहते हैं कि 'हाइड्रोजन एक गैस है' चूँकि यहाँ हाइड्रोजन के बारे में सिर्फ सूचना या ज्ञान दिया गया है, अत: यह संज्ञानात्मक अर्थ है ।

अत: जिसे हम शाब्दिक अर्थ कहते हैं वह संज्ञानात्मक अर्थ होता है तथा उस शब्द के प्रयोग से जो भावनायें मन में उत्पन्न होती हैं उसे संवेगात्मक अर्थ कहा जाता है । जैसे--'आदिवासी' और 'पहाड़ियों' शब्दों का संज्ञानात्मक अर्थ एक ही है पर उनके संवेगात्मक अर्थ भिन्न होंगे, क्योंकि उनका प्रभाव पाठकों और श्रोताओं पर, विशेष रूप से जो प्रवृत्तियाँ और भावनाएँ जागृत होंगी, वह भिन्न होगा ।

प्रश्न यह उठता है कि क्या संवेगात्मक अर्थ को भी अर्थ का अंश माना जाएगा । इस प्रश्न का उत्तर इस बात पर निर्भर करता है कि हम 'अर्थ' शब्द का प्रयोग किस प्रकार करते हैं । यदि 'अर्थ' शब्द के अन्तर्गत उस शब्द के प्रभाव को भी रखते हैं तो संवेगात्मक अर्थ भी उस शब्द का ही अंश है । किन्तु स्पष्टता के दृष्टिकोण से किसी शब्द का प्रभाव अर्थ उस शब्द के प्रभाव से भिन्न माना जाता है, क्योंकि एक ही शब्द का भिन्न व्यक्तियों पर भिन्न-भिन्न प्रभाव पड़ता है, किन्तु इसका यह अर्थ नहीं है कि उस शब्द के भिन्न-भिन्न अर्थ हैं । अत: शब्द के प्रभाव से शब्द का अर्थ बदलता नहीं है, 'समाजवाद' शब्द दो भिन्न राजनीतिक दलों में विभिन्न प्रकार का प्रभाव जागृत करता है पर इस शब्द का अर्थ एक ही है । ऐसे ही दो और शब्द है 'दलाल' और 'बीचवान' । जिनके संज्ञानात्मक अर्थ तो करीब-करीब एक ही हैं किन्तु दोनों शब्दों का श्रोताओं पर भिन्न-भिन्न प्रभाव पड़ता है ।

अत: क्या इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि संवेगात्मक अर्थ को अर्थ माना ही न जाए । हॉस्पर्स का कहना है कि यह शायद ही कभी होता है कि दो शब्दों के संवेगात्मक अर्थ संज्ञात्मक अर्थ से भिन्न हुए बिना ही स्वयं सिद्ध हो जाए । यदि 'आदिवासी' और 'जंगली' शब्दों के संवेगात्मक अर्थ भिन्न हैं तो उनके संवेगात्मक अर्थ में भी भिन्नता है । उसी प्रकार, 'चंचल' और 'शरारती' शब्दों के संवेगात्मक अर्थों में भिन्नता है तो उनके संज्ञात्मक अर्थ भी भिन्न हैं । अंग्रेजी में 'सहिष्णुता' और 'स्वीकृति' दोनों का सामान्य प्रयोग में संज्ञानात्मक अर्थ भिन्न है क्योंकि स्वीकृति शब्द अनुकूल भावनाओं का परिचायक है, लेकिन 'सहिष्णुता' नहीं । लेकिन यदि इन दोनों शब्दों को नजदीक से देखा जाए तो हम यह पायेंगे कि दोनों ही के संज्ञानात्मक अर्थ में भी भिन्नता है । 'सहिष्णुता' शब्द का अर्थ निषेधात्मक रूप में स्वीकृति अथवा नहीं चाहते हुए भी स्वीकार करना है, किन्तु 'स्वीकृति' का अर्थ है भावात्मक रूप में या हार्दिक रूप में स्वीकार करना ।

15.4 सारांश

सारांशत: कहा जा सकता है कि हॉस्पर्स ने अपनी पुस्तक 'दार्शनिक विश्लेषण' के प्रथम अध्याय में आलंकारिक एवं संवेगात्मक अर्थ की चर्चा की है । हॉस्पर्स ने आलंकारिक एवं संवेगात्मक अर्थ को भी अर्थ का अंश माना है ।

शाब्दिक अर्थ के साथ आलंकारिक एवं संवेगात्मक अर्थ के बीच काफी समानता है । आलंकारिक एवं संवेगात्मक अर्थों का प्रयोग प्राचीन काल से ही होता रहा है ।

15.5 पाठ में प्रयुक्त शब्द

संवेगात्मक अर्थ

आलंकारिक अर्थ

शाब्दिक अर्थ

संज्ञात्मक

व्याख्यात्मक

गुणवाचकता

भाषा–दर्शन

दार्शनिक विश्लेषण

समाजवाद

सहिष्णुता

स्वीकृति

15.6 अभ्यास के लिए प्रश्न

15.6.1 वस्तुनिष्ठ प्रश्न :

(i) भाषा में तथा वाक्यों में ऐसे शब्द का प्रयोग करना जिससे वाक्य सुनने में अच्छा लगे, उसे कहते हैं–

(अ) चित्रात्मक अर्थ

(ब) संवेगात्मक अर्थ

(स) आलंकारिक अर्थ

(द) ऊपरोक्त में से कोई नहीं ।

उत्तर : (स)

(ii) जिस शब्द के प्रयोग से श्रोताओं अथवा पाठकों के मन में अनुकूल या प्रतिकूल भावनाएँ उत्पन्न करती हैं उसे कहते हैं–

(अ) चित्रात्मक अर्थ

(ब) संवेगात्मक अर्थ

(स) आलंकारिक अर्थ

(द) ऊपरोक्त में से कोई नहीं

उत्तर : (ब)

15.6.2 लघु उत्तरीय प्रश्न :

(i) आलंकारिक अर्थ के स्वरूप को स्पष्ट करें ।

(ii) संवेगात्मक अर्थ के स्वरूप को स्पष्ट करें ।

15.6.3 दीर्घ उत्तरीय प्रश्न :

(i) शब्दों के आलंकारिक एवं संवेगात्मक अर्थों की चर्चा करें । क्या इनका संज्ञात्मक अर्थ के साथ कोई संबंध है ? स्पष्ट करें ।

15.7 प्रस्तावित पाठ

(i) जॉन हॉस्पर्स : दार्शनिक विश्लेषण परिचय

(ii) गोवर्द्धन भट्ट : दार्शनिक विश्लेषण परिचय ।

✠✠✠

परिभाषा का स्वरूप

पाठ संरचना

16.1 उद्देश्य
16.2 विषय-प्रवेश
16.3 मुख्य विषय की व्याख्या
16.3.1 शब्द और उसके अर्थ में संबंध
16.3.2 यंत्रों के रूप में शब्द
16.4 सारांश
16.5 पाठ में प्रयुक्त शब्द
16.6 अभ्यास के लिए प्रश्न
16.6.1 वस्तुनिष्ठ प्रश्न
16.6.2 लघु उत्तरीय प्रश्न
16.6.3 दीर्घ उत्तरीय प्रश्न
16.7 प्रस्तावित पाठ

16.1 उद्देश्य

प्रस्तुत पाठ का उद्देश्य परिभाषा के स्वरूप को स्पष्ट करना है । जब भी हम किसी शब्द की परिभाषा देते हैं तो हमें उस शब्द के प्रयोग की शर्तों के नियम का स्पष्टीकरण करना आवश्यक होता है । किसी भी पद की परिभाषा के द्वारा हम विधेय के स्थान पर उसकी गुणवाचकता को व्यक्त करते हैं ।

16.2 विषय-प्रवेश

हॉस्पर्स ने अपनी पुस्तक 'दार्शनिक विश्लेषण परिचय' के प्रथम अध्याय में परिभाषा के स्वरूप पर प्रकाश डाला है । किसी पद का स्पष्ट अर्थ और महत्त्व जानने के लिए ही परिभाषा का अध्ययन किया जाता है । इसलिए किसी पद की परिभाषा का लक्ष्य है उसका अर्थ स्पष्ट और निश्चित करना । शब्द के अर्थ को स्पष्ट रूप से जानना आवश्यक है क्योंकि भाषा शब्दों से बनती है, जिनके योग से वाक्य बनता है । भाषा मनुष्यों के लिए संज्ञापन का एक मुख्य साधन है। किसी शब्द या पद का अर्थ तभी स्पष्ट होता है जब उसकी गुणवाचकता या स्वभावबोध बता दिया जाए । जैसे 'मनुष्य' शब्द का स्वभावबोध 'विवेकशीलता' तथा 'पशुत्व' है । अत: 'मनुष्य विवेकशील प्राणी है । कहने से मनुष्य पद का अर्थ स्पष्ट हो जाता है । अत: किसी शब्द या पद का सम्पूर्ण स्वभावबोध स्पष्टतया व्यक्त करना ही उसकी परिभाषा है । परिभाषा एक विश्लेषणात्मक वाक्य है । उसमें जिस पद की परिभाषा देनी है, उसका विश्लेषण किया जाता है ।

अत: परिभाषा के द्वारा किसी शब्द के प्रयोग की शर्तों के नियम का स्पष्टीकरण किया जाता है ।

16.3 मुख्य विषय की व्याख्या

16.3.1 शब्द और उसके अर्थ में संबंध :

परिभाषा का स्वरूप तभी स्पष्ट होगा जब हम शब्दार्थ पर विचार कर लें । 'अर्थ' शब्द अनेकार्थक हैं । सर्वप्रथम हम यह देखेंगे कि किसी शब्द और उसके अर्थ में क्या संबंध है । शब्द और अर्थ के संबंध को लेकर मुख्य रूप से तीन सिद्धान्त पाये जाते हैं ।

(i) प्रत्यय सिद्धान्त : इस सिद्धान्त को माननेवाले दार्शनिकों का कहना है कि किसी शब्द के उच्चारण से मन में जो प्रतिमाएँ, भावनाएँ या प्रत्यय उत्पन्न होते हैं वे ही उस शब्द के अर्थ हैं । दूसरे शब्दों में जब किसी शब्द का उच्चारण होता है तो जो मानसिक प्रत्यय या भावनाएँ उत्पन्न होती हैं वे ही उस शब्द के अर्थ हैं । जैसे–'पुस्तक' शब्द कहने से जो प्रत्यय या प्रतिमायें मन में आती हैं वही पुस्तक शब्द का अर्थ है । इस मत के समर्थक पाश्चात्य दार्शनिक लॉक हैं । किन्तु यह मत उचित नहीं है । इसकी कई आलोचनाएँ भी हुई हैं ।

किसी शब्द के उच्चारण से जो प्रत्यय, भावनायें या प्रतिमाएँ मन में आती हैं उन्हें ही शब्द का अर्थ मान लेना उचित नहीं है । क्योंकि इसमें कई परेशानियाँ हैं, सर्वप्रथम, एक ही शब्द के उच्चारण से भिन्न-भिन्न व्यक्तियों के मन में भिन्न-भिन्न प्रतिमाएँ, भावनाएँ या प्रत्यय मन में आती हैं । उदाहरणस्वरूप–'पुस्तक' शब्द के उच्चारण से विभिन्न व्यक्तियों के मन में विभिन्न प्रतिमाएँ आ सकती हैं–उदाहरणस्वरूप, किसी के मन में कोई धार्मिक पुस्तक की प्रतिमा आ सकती है, तो किसी के मन में मोटी पुस्तक की प्रतिमा आ सकती है तो किसी के मन में पतली पुस्तक की प्रतिमा आ सकती है । अत: 'पुस्तक' शब्द के उच्चारण से विभिन्न व्यक्तियों के मन में विभिन्न प्रतिमाएँ उत्पन्न होती हैं। किन्तु 'पुस्तक' शब्द का अर्थ तो एक ही है ।

हम कह सकते हैं कि 'पुस्तक' शब्द के उच्चारण में भले ही भिन्न प्रतिमाएँ मन में उभरती हैं, पर एक ही मानसिक स्थिति सभी के मस्तिष्क में वर्त्तमान रहती है । वह स्थिति है, 'पुस्तक' शब्द का अर्थ क्या है और यही बात सामान्य है । 'पुस्तक' शब्द का क्या अर्थ है ? प्रत्यय-सिद्धान्त में इसका उत्तर नहीं मिलता है । अत: यह सिद्धांत मान्य नहीं है ।

(ii) व्यवहारवाद : कुछ विचारकों ने शब्द और उसके अर्थ को लेकर व्यवहारवाद का सिद्धान्त दिया है । इनके अनुसार किसी शब्द का अर्थ उस शब्द के श्रोताओं में निश्चित प्रकार का व्यवहार उत्पन्न करने की प्रवृत्ति हैं । दूसरे शब्दों में, हम पाते हैं कि जब किसी शब्द का उच्चारण किया जाता है तो श्रोताओं में निश्चित प्रकार का व्यवहार व्यक्त होता है या उसकी प्रवृत्ति होती है । शब्द की यह प्रवृत्ति ही उसका अर्थ है । उदाहरणस्वरूप, 'शेर' शब्द के उच्चारण से हम पाते हैं कि भिन्न-भिन्न व्यक्तियों के भिन्न-भिन्न प्रकार के व्यवहार होते हैं और व्यवहारवाद के अनुसार 'शेर' शब्द का अर्थ श्रोताओं में होने वाले व्यवहार में निहित हैं । किन्तु व्यवहारवाद को भी उचित नहीं माना गया है और इसकी कई आलोचनाएँ भी हुई हैं–

सर्वप्रथम यह कहा गया है कि एक शब्द के उच्चारण विभिन्न व्यक्तियों में भिन्न-भिन्न प्रकार के व्यवहार उत्पन्न करते हैं, जैसे–'सांप' शब्द को सुनकर बच्चों के व्यवहार में एक प्रकार की प्रतिक्रिया होगी और बड़ों के व्यवहार में दूसरे प्रकार की । क्या इसका यह मतलब हुआ कि 'सांप' शब्द का अर्थ विभिन्न व्यक्तियों के लिए अलग-अलग होगा ? दूसरा, कई ऐसे भी शब्द हैं, जिसको सुनकर लोगों में किसी भी प्रकार की कोई प्रतिक्रिया नहीं होती है तो क्या इसका यह अर्थ है कि उस शब्द का कोई अर्थ ही नहीं है ?

एक अन्य महत्त्वपूर्ण बात यह है कि जब तक हम किसी शब्द के अर्थ को पूर्ण रूप से नहीं जानेंगे, जब तक

हमें शब्द के प्रयोग के पूर्ण संदर्भ का ज्ञान नहीं होगा तब तक हममें शब्द को सुनकर किसी भी प्रकार की प्रतिक्रिया नहीं होगी ।

इस प्रकार व्यवहारवाद के सिद्धान्त में कई खामियाँ हैं । अत: यह सिद्धान्त भी संतोषजनक नहीं हैं ।

(iii) निर्देशात्मक सिद्धान्त : रसेल तथा इस मत के अन्य विचारकों के अनुसार कोई भी शब्द विश्व की किसी वस्तु की ओर संकेत करता है । अत: शब्द के अर्थ को जानने के लिए हमें यह पता लगाना आवश्यक है कि उस शब्द का प्रयोग किस वस्तु की ओर संकेत करने के लिए किया जाता है । उदाहरणस्वरूप, 'बाघ' शब्द से सभी बाघ का संकेत मिलता है । 'दौड़ना' शब्द दौड़ने की प्रक्रिया की ओर संकेत करता है । निर्देशात्मक सिद्धांत के अनुसार किसी शब्द का अर्थ निर्धारित करने के लिए हमें उस वस्तु का पता लगाना आवश्यक है जिसके लिए उस शब्द का प्रयोग किया जाता है ।

निर्देशात्मक सिद्धांत को भी नहीं माना गया है क्योंकि इसमें भी कई खामियाँ हैं । इस सिद्धांत की भी आलोचना कई आधारों पर की गयी हैं ।

सर्वप्रथम यह सिद्धांत बहुत ही सीमित शब्दों पर ही लागू होता है । यह सिद्धान्त केवल व्यक्तिवाचक शब्दों पर ही लागू होता है । उदाहरणस्वरूप, यदि हम अपने भाई को 'रमेश' अपने कुत्ते को 'पोली' और अपने तोते को 'मीठू' कहते हैं तो उनका संकेत हम व्यक्तिवाचक नामों के द्वारा करते हैं, क्योंकि उनका प्रयोग एक ही वस्तु के संकेत के लिए होता है । इस प्रकार, ''एक शब्द, एक वस्तु'-इसका प्रयोग केवल व्यक्तिवाचक नामों के लिए होता है । उदाहरणस्वरूप, जब हम यह कहते हैं कि ''वह है मेरा घर 'कमला निवास', तो इससे यह स्पष्ट हो जाता है कि 'कमला निवास' मेरे घर का नाम है और मैं उस नाम के द्वारा अपने घर की ओर संकेत करता हूँ ।

किन्तु अधिकांश शब्द ऐसे होते हैं जिनसे वस्तुओं का संकेत बिल्कुल ही नहीं मिलता है । जैसे–विस्मयबोधक शब्द, अहा ! ओह ! आदि शब्द किसी का भी संकेत नहीं करते । इनका कुछ अर्थ तो अवश्य ही होगा परन्तु न तो वे किसी वस्तु का 'न किसी गुण का' न किसी क्रिया का संकेत करते हैं । ये शब्द हमारी भावनाओं को व्यक्त करते हैं किन्तु ये किसी विशेष भावना की ओर संकेत नहीं करते हैं । संयोगसूचक शब्द, 'और', 'अथवा', 'किन्तु' आदि शब्द भी किसी वस्तु की ओर संकेत नहीं करते हैं । ये शब्द संयोजक हैं तथा इनका अर्थ किसी वाक्य के प्रयोग से स्पष्ट हो जाता है ।

कुछ ऐसे भी शब्द होते हैं जो संकेत करते तो हैं पर उनका संकेत तथा उनका अर्थ एक समान नहीं होता है । उदाहरणस्वरूप, पुरुषवाचक सर्वनाम जैसे–'मैं' शब्द का संकेत बराबर बदलता रहता है, जब मैं शब्द का प्रयोग रमेश करता है तो यह रमेश की ओर संकेत करता है जब मैं शब्द का प्रयोग मोहन करता है तो यह मोहन की ओर संकेत करता है । इस प्रकार, मैं शब्द का संकेत बराबर बदलता रहता है । इसके विपरीत हम यह भी देखते हैं कि दो भिन्न अर्थ वाले शब्द एक ही वस्तु की ओर संकेत करते हैं । जैसे–'महात्मा गाँधी', 'राष्ट्रपिता', अथवा 'बापू' यद्यपि भिन्न अर्थवाले शब्द हैं, परन्तु सबका संकेत एक ही व्यक्ति की ओर है । इस प्रकार, निर्देशात्मक सिद्धान्त भी संतोषजनक सिद्धान्त नहीं है ।

16.3.2 यंत्रों के रूप में शब्द :

कुछ विचारकों के अनुसार यह कहने की अपेक्षा कि शब्द किसी वस्तु की ओर संकेत करते हैं हम यह कह सकते हैं कि शब्द का कार्य एक यंत्र की भांति है जो संज्ञापन की प्रक्रिया में उपयोगी सिद्ध होता है । जिस प्रकार, यंत्रों के बक्स में रहनेवाले विभिन्न यंत्र विभिन्न प्रकार के कार्य करते हैं, उसी प्रकार विभिन्न प्रकार के शब्द किसी भाषा में विभिन्न प्रकार की क्रिया करते हैं । जब हमें भाषा में प्रयोग होने वाले शब्दों के कार्यों का स्पष्ट रूप से ज्ञान हो जाता है तब हमें उस शब्द के अर्थ का भी पूर्ण रूप से ज्ञान हो जाता है ।

इस प्रकार, जब हमें शब्दों के कार्यों का ज्ञान हो जाता है तब हमें शब्द के अर्थ का भी पूर्ण रूप से ज्ञान हो जाता है । हम पाते हैं कि संज्ञाएँ एक प्रकार का कार्य करती हैं, तो सर्वनाम दूसरे प्रकार का, विशेषण तीसरे प्रकार का,

इत्यादि, इस प्रकार, प्रत्येक शब्द का अपना कार्य होता है । जब हमें शब्दों के प्रयोग के नियम का ज्ञान हो जाता है तो हमें यह भी ज्ञान हो जाता है कि किन परिस्थितियों में किसी शब्द का प्रयोग करना है । हमें यह भी ज्ञान हो जाता है कि किस परिस्थिति में कब किसी शब्द का प्रयोग करना है और कब नहीं । हम यह जान लेते हैं कि किन परिस्थितियों में 'घोड़ा' शब्द किस वस्तु के लिए प्रयोग में लाया जाता है तब हम 'घोड़ा' शब्द का अर्थ जान लेते हैं । जिस प्रकार घोड़ा को घोड़ा कहना आवश्यक है उसी प्रकार अन्य वस्तुओं को घोड़ा नहीं कहना आवश्यक है । उसी प्रकार का प्रयोग 'सोने का पर्वत' शब्द या 'उड़नखटोला' शब्द का प्रयोग संसार की सभी वस्तु के लिए नहीं किया जा सकता है लेकिन चूँकि हमें उन शब्दों का अर्थ मालूम है, अत: यदि ऐसा कोई पदार्थ देखने में आया तो हम उसके लिए शब्द का प्रयोग कर सकते हैं । इसी प्रकार, 'शीघ्रता', 'हाहा' आदि शब्दों का भी अर्थ हम तभी जान सकते हैं जब हमें उनके कार्यों का ज्ञान हो ।

इस प्रकार, भाषा में प्रयोग होने वाले प्रत्येक शब्द का अपना कार्य होता है और हम किसी शब्द का अर्थ तभी जानते हैं जब हमें उसके प्रयोग के नियम का ज्ञान हो अर्थात् हमें उन सभी परिस्थितियों का ज्ञान हो, जिसमें कि शब्द का प्रयोग किया जा सके ।

किन्तु जब हम यह कहते हैं कि 'अर्थ प्रयोग है, तो हमें बहुत ही अधिक सावधानी बरतनी चाहिए क्योंकि इसके साथ कई कठिनाइयाँ भी हैं । सर्वप्रथम, एक ही शब्द के कई प्रयोग हो सकते हैं विभिन्न प्रयोगों में कौन-सा प्रयोग उस शब्द का अर्थ निर्धारित करता है इसका निश्चय व्यक्ति तभी कर सकता है जब उस शब्द के अर्थ को जाने ।

कभी-कभी ऐसा भी होता है कि कोई व्यक्ति किसी भाषा को नहीं जानता है किन्तु वह उस भाषा के शब्द को किसी अवसर पर सुनता है तो अनुमान करता है कि ऐसे ही अवसर पर उस शब्द का प्रयोग होता है, हॉलांकि वह उस शब्द का अर्थ नहीं जानता है । जैसे–ऐसा देखने को मिलता है कि जब कोई व्यक्ति किसी शुभ काम के लिए निकलता है तो उसे लोग 'गुड लक' कहते हैं । यदि कोई व्यक्ति इस शब्द के अर्थ को नहीं जानता है फिर भी वह अनुमान कर लेता है कि ऐसे अवसरों पर ''गुड लक' शब्द का प्रयोग होता है । इस प्रकार, यह कहकर कि 'अर्थ प्रयोग है' हम लापरवाही नहीं कर सकते हैं ।

16.4 सारांश

ऊपरोक्त विवेचना के आधार पर सारांशत: कहा जा सकता है कि जब हम किसी शब्द की परिभाषा देते हैं तो हमें उस शब्द के प्रयोग की शर्त्तों के नियम का स्पष्टीकरण करना आवश्यक होता है । वस्तुत: जब किसी शब्द को परिभाषित किया जाता है तो अन्य शब्दों का प्रयोग होता है । परिभाष्य और परिभाषित शब्दों के बीच तादात्म्य का संबंध होता है । किसी भी शब्द की परिभाषा के द्वारा हम विधेय के स्थान पर उसके आवश्यक एवं सार गुण को व्यक्त करते हैं ।

16.5 पाठ में प्रयुक्त शब्द

संज्ञापन

गुणवाचकता या स्वभाव बोध

शब्दार्थ

प्रत्यय सिद्धान्त

व्यवहारवाद

निर्देशात्मक सिद्धान्त

अर्थ प्रयोग

16.6 अभ्यास के लिए प्रश्न

16.6.1 वस्तुनिष्ठ प्रश्न :

(i) किसी पद की परिभाषा में रहता है :

(अ) मात्र उस पद की जाति

(ब) मात्र उस पद का विभेदक

(स) मात्र उस पद का व्यक्तिबोध

(द) उस पद का जाति तथा विभेदक

उत्तर : (द)

(ii) किस पद की परिभाषा निर्भर हैं

(अ) उस पद के वर्णन पर

(ब) मात्र उसकी जाति पर

(स) मात्र उसके विभेदक पर

(द) उसकी सम्पूर्ण गुणवाचकता पर

उत्तर : (द)

16.6.2 लघु उत्तरीय प्रश्न :

(i) शब्द और उसके अर्थ के बीच संबंध को लेकर विभिन्न सिद्धान्तों की समीक्षात्मक व्याख्या करें।

(ii) हॉस्पर्स के आलोक में यंत्रों के रूप में शब्द का क्या अर्थ है ? स्पष्ट करें ।

16.6.3 दीर्घ उत्तरीय प्रश्न :

(i) परिभाषा के स्वरूप की व्याख्या करें ।

16.7 प्रस्तावित पाठ

(i) जॉन हॉस्पर्स : दार्शनिक विश्लेषण परिचय

(ii) गोवर्द्धन भट्ट : दार्शनिक विश्लेषण परिचय

तुल्यार्थक शब्दों के द्वारा परिभाषा

पाठ संरचना

17.1 उद्देश्य

17.2 विषय-प्रवेश

17.3 मुख्य विषय की व्याख्या

- 17.3.1 तुल्यार्थक शब्दों के द्वारा परिभाषा
- 17.3.2 परिभाषक लक्षण
- 17.3.3 परिभाषक लक्षण और अनुषंगी लक्षण
- 17.3.4 परिभाषक लक्षणों में परिवर्त्तन
- 17.3.5 परिभाषा एवं अस्तित्व
- 17.3.6 परिभाषा की परिधि

17.4 सारांश

17.5 पाठ में प्रयुक्त शब्द

17.6 अभ्यास के लिए प्रश्न

- 17.6.1 वस्तुनिष्ठ प्रश्न
- 17.6.2 लघु उत्तरीय प्रश्न
- 17.6.3 दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

17.7 प्रस्तावित पाठ

17.1 उद्देश्य

प्रस्तुत पाठ का उद्देश्य तुल्यार्थक शब्दों के द्वारा परिभाषा को कैसे स्पष्ट करते हैं, इस पर प्रकाश डालना है । वस्तुतः 'परिभाषा' शब्द का अर्थ है–तुल्यार्थक शब्दों के द्वारा परिभाषा । परिभाषा का विस्तार पारिभाष्य के अर्थात् जिस पद की परिभाषा की गई है उसके विस्तार के बराबर होता है । अर्थात् पारिभाष्य और परिभाषित को एक दूसरे से स्थानापन्न किया जा सकता है ।

17.2 विषय–प्रवेश

हॉस्पर्स ने अपनी पुस्तक 'दार्शनिक विश्लेषण परिचय' के प्रथम अध्याय के अन्तर्गत परिभाषा के स्वरूप पर प्रकाश डाला है । पूर्व के अध्याय में यह स्पष्ट हो चुका है कि किसी शब्द को परिभाषित करने के लिए हमें उस शब्द

के प्रयोग की शर्त्तों का स्पष्टीकरण करना आवश्यक है । जब किसी शब्द को परिभाषित किया जाता है तो अन्य शब्दों का प्रयोग होता है उनका अर्थ मूल शब्द के तुल्य होता है । ऐसा करने से अर्थ में अन्तर नहीं होता है । किसी परिभाषा में उद्देश्य-पद और विधेय पद का विस्तार बराबर होता है, न कि कम और बेसी । जैसे मनुष्य विवेकशील प्राणी है । इसमें 'मनुष्य' पद का विस्तार 'विवेकशील प्राणी' पद के बराबर है । जितने व्यक्ति मनुष्य कहे जाते हैं उतने ही विवेकशील प्राणी । लेकिन जब परिभाषा का विस्तार पारिभाष्य से अधिक हो तब अतिव्याप्त परिभाषा का दोष होगा। जैसे, मनुष्य एक प्राणी है, इसमें परिभाषा 'प्राणी' का विस्तार पारिभाष्य 'मनुष्य' से अधिक है । जब परिभाषा का विस्तार पारिभाष्य के विस्तार से कम हो तब वह अव्याप्त परिभाषा है । जैसे–'मनुष्य साम्य विवेकशील प्राणी है ।' इसलिए, तुल्यार्थक शब्दों के द्वारा ही परिभाषा को व्यक्त किया जाता है ।

17.3 मुख्य विषय की व्याख्या

17.3.1 तुल्यार्थक शब्दों के द्वारा परिभाषा :

परिभाषा शब्द का यही अर्थ है अर्थात् तुल्यार्थक शब्दों के द्वारा परिभाषा । यदि हम किसी वाक्य में 'महात्मा गाँधी' के स्थान पर 'राष्ट्रपिता' शब्द का प्रयोग करें तो हम पायेंगे कि उस वाक्य का अर्थ परिवर्तित नहीं होगा, क्योंकि 'राष्ट्रपिता' शब्द 'महात्मा गाँधी' शब्द के तुल्य है । उसी प्रकार 'एक मीटर' शब्द अर्थ में 'सौ सेंटीमीटर' के तुल्य है । किन्तु यदि किसी शब्द के एक से अधिक अर्थ हो तो उस शब्द को प्रयुक्त करने के उतने नियम होंगे, जितने उस शब्द के अर्थ । जैसे–'यार्ड' शब्द अर्थ में 'तीन फीट' के तुल्य है किन्तु 'यार्ड' शब्द के कई और अर्थ हैं जैसे 'रेलवेयार्ड' आदि । अत: 'यार्ड' शब्द का प्रयोग 'तीन फीट' के तुल्य अर्थ में तभी होगा जब इसे लम्बाई का माप माना जाए । अत: यदि किसी शब्द के एक से अधिक अर्थ हों तो उस शब्द को प्रयुक्त करने के उतने नियम होंगे । कभी-कभी किसी शब्द के तुल्यार्थक एक शब्द होता है जैसे 'भानु' का तुल्यार्थक शब्द 'सूर्य' है । पर ऐसे शब्द कम ही है जिनका बिल्कुल एक ही अर्थ हो । इस प्रकार, बिल्कुल पर्यायवाची शब्द अर्थात् ऐसे शब्द जो परिभषित किए जानेवाले शब्द के तुल्यार्थक हों, कम हैं । लेकिन कुछ शब्द ऐसे हैं जिसका तुल्यार्थ शब्द या शब्द समूह नहीं है । उदाहरणस्वरूप, वैसे जो शब्द हमारे इन्द्रियानुभव को व्यक्त करते हैं, जैसे–'लाल', 'काला', 'सुख', 'दु:ख' आदि के तुल्यार्थक न कोई एक शब्द है और न ही कोई शब्द समूह । ऐसे शब्दों के अर्थ की व्याख्या तभी हो सकती है जब हम अगले व्यक्ति के उस अनुभव से ज्ञात करवाएं जिसका उस शब्द के द्वारा बोध होता है । ऐसे शब्दों को निर्देशात्मक परिभाषा शब्दों के द्वारा उसकी परिभाषा नहीं दी जा सकती है ।

'काल', 'सम्बन्ध', 'सत्ता', जैसे कुछ ऐसे अमूर्त्त शब्द हैं, जिनके तुल्यार्थ दूसरा कोई शब्द नहीं है । अत: ऐसे शब्दों की परिभाषा तुल्यार्थक शब्दों से नहीं होती है । ये ऐसे शब्द हैं जो इतने व्यापक होते हैं कि उन्हें उनसे अधिक व्यापक रूप से परिभाषित नहीं किया जा सकता है ।

17.3.2 परिभाषक लक्षण :

जब हम किसी शब्द के अर्थ को स्पष्ट करते हैं, तो हमें इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि कौन सा वह लक्षण है जिसके द्वारा वह शब्द परिभाषित होगा । हॉस्पर्स के शब्दों में, किसी वस्तु, गुण, संबंध, या क्रिया के वे लक्षण जिनके अभाव में वह शब्द जो उसके लिए प्रयुक्त होता है वह प्रयुक्त न हो, उस वस्तु के परिभाषक लक्षण हैं । 'तीन भुजाओं का होना, त्रिभुजों का परिभाषक लक्षण है क्योंकि कोई भी आकार तीन भुजाओं के अभाव में नहीं होगा । उसी प्रकार ''स्याही से लिखने की सामग्री, कलम का परिभाषक लक्षण है, क्योंकि इस लक्षण के अभाव में किसी भी सामग्री को कलम नहीं कहा जाएगा । पर कलम का रंग जैसे–लाल रंग या काला रंग कलम का परिभाषक लक्षण नहीं क्योंकि इसके अभाव में भी कलम के लिए कलम शब्द का प्रयोग किया जा सकता है ।

जब हम परिभाषक लक्षणों की बात करते हैं तो हमें यह ध्यान रखना चाहिए कि यह लक्षण वहीं लागू होता है जहाँ कोई शब्द किसी वस्तु, गुण, संबंध या क्रिया के लिए प्रयोग में आता है । संयोजक शब्द जैसे–'और', 'परन्तु',

'अथवा' एवं विस्मयादि बोधक शब्द जैसे–ओह ! आह ! आदि किसी वस्तु के लिए प्रयुक्त नहीं होते, अत: इनके कोई परिभाषक लक्षण नहीं हैं ।

इस प्रकार, कोई लक्षण परिभाषक है या नहीं इसकी परीक्षा हम इस प्रकार कर सकते हैं । हमें यह देखना है कि किसी वस्तु के लिए जिस शब्द का प्रयोग होता है, उस वस्तु में यदि उसके किसी लक्षण का अभाव हो तब भी क्या वह शब्द उस वस्तु के लिए प्रयुक्त हो सकता है ? यदि नहीं तो वह लक्षण परिभाषक लक्षण है और यदि हाँ, तो वह लक्षण उस वस्तु का आनुषंगी लक्षण है । जैसे–'तीन भुजाओं का होना' त्रिभुज का परिभाषक है लेकिन 'समबाहु होना' त्रिभुज का अनुषंगी लक्षण है ।

परिभाषक लक्षण 'जिसके बिना नहीं' है । क्या कोई वस्तु 'ख' होगी यदि उसमें 'क' लक्षण नहीं हो ? यदि इसका अन्तर 'नहीं' हो तो 'क' लक्षण का होना (इसके बिना नहीं) 'ख' का परिभाषक लक्षण है ।

हम पाते हैं कि संसार में वस्तुओं के अनेक वर्ग हैं जिनके कुछ परिभाषक लक्षण सामान्य होते हैं–'ठोस' होने का लक्षण टेबुल, कुर्सी, पेड़ आदि में सामान्य है । पर इसका यह अर्थ नहीं है कि सब की परिभाषा तभी एक हो सकती है जब उसके सभी परिभाषक लक्षण एक होंगे । किन्तु अधिकांशत: ऐसा होता नहीं है ।

17.3.3 परिभाषक लक्षण और अनुषंगी लक्षण :

किसी वस्तु के परिभाषक लक्षण वैसे लक्षण हैं जिसके अभाव में वह शब्द किसी वस्तु के लिए लागू नहीं होगा। किन्तु अनुषंगी लक्षण वैसे लक्षण हैं जिनके अभाव में कोई शब्द, किसी वस्तु के लिए लागू हो सकता है । जैसे–'तीन भुजाओं का होना, 'दो भुजाएँ', और 'बंद रहना' त्रिभुज के परिभाषक लक्षण हैं, क्योंकि इसके अभाव में त्रिभुज शब्द किसी आकार के लिए लागू नहीं होगा । किन्तु भुजाओं की लम्बाई 'तीन ईंच होना' त्रिभुज का अनुषंगी लक्षण है क्योंकि यदि भुजाएँ तीन ईंच लंबी नहीं भी हैं तो भी त्रिभुज शब्द उसके लिए लागू होगा ।

अनुषंगी लक्षण दो प्रकार के होते हैं–आकस्मिक तथा सर्वव्यापी । जब किसी वस्तु में कोई लक्षण आकस्मिक हो अर्थात् कभी हो और कभी नहीं हो तो उसे आकस्मिक अनुषंगी लक्षण कहते हैं, जैसे–रोना-हँसना मनुष्य का आकस्मिक अनुषंगी रूप में अनुषंगी होते हैं जैसे–भाषा का प्रयोग मनुष्य का सर्वव्यापी अनुषंगी लक्षण है । अत: यदि कोई लक्षण 'अ' अन्य लक्षणों (क, ख, ग आदि) के साथ सदा पाया जाए तो हम उसे अर्थात् 'अ' को भी परिभाषिक लक्षण मानेंगे। एक प्रश्न यह उठता है कि यदि 'अ', सदा 'क' 'ख' 'ग' 'घ' का अनुषंगी है पर यदि 'अ' का अभाव हो तो क्या वह वस्तु जिस नाम से पुकारी जाती है, पुकारी जाएगी ? यदि उस लक्षण के अभाव में भी वह वस्तु वही पुकारी जाएगी, तब वह लक्षण अनुषंगी है और यदि नहीं, तो परिभाषक ।

17.3.4 परिभाषक लक्षणों में परिवर्त्तन :

हॉस्पर्स के अनुसार वैसे लक्षण जो सदा अनुषंगी रहते हैं, उनकी प्रवृत्ति परिभाषक हो जाने की होती है । किन्तु इसका यह अर्थ नहीं है कि कोई लक्षण एक ही समय परिभाषक तथा अनुषंगी दोनों है । इसका केवल यही अर्थ है कि भाषा के इतिहास में ऐसे कई शब्द हैं जिनके लक्षण परिवर्तित होते रहते हैं और हो सकता है कि इस परिवर्त्तन के फलस्वरूप कोई अनुषंगी से परिभाषक हो जाए । जैसे पहले 'ह्वेल' शब्द का प्रयोग उन जीवों के लिए होता था जिनमें कुछ लक्षण हैं–'क', 'ख' 'ग' होते हैं, किन्तु बाद में पाया गया कि इन लक्षणों के अतिरिक्त स्तनपायी होने का लक्षण भी ह्वेल का लक्षण है, अब जो स्तनपायी नहीं है, वह ह्वेल नहीं है ।

कभी ऐसा भी होता है कि जो लक्षण परिभाषक है उसकी जगह पर अनुषंगी ही परिभाषक हो जाता है । जब तक 'हैजा' रोग के कारणों का पता नहीं चला था तब तक कै, दस्त आदि लक्षणों को हैजा का परिभाषक लक्षण माना जाता था । किन्तु जब हैजे के कारण का पता चला तो 'हैजा के कीटाणु' को हैजा का परिभाषक लक्षण माना जाने लगा ।

अत: यह तो स्पष्ट है कि चिकित्सा तथा तकनीकी क्षेत्रों में किसी घटना के कारण को परिभाषा में समाहित कर लिया जाता है । किन्तु, कुछ तकनीकी शब्दों के कारण बताकर परिभाषित किया जाता है, उससे यह नहीं सोच लेना है कि सभी शब्दों की परिभाषा इसी प्रकार से हो सकती है । भौतिक विज्ञान के अनुसार 'लाल' शब्द की परिभाषा प्रकाश-तरंग की लम्बाई के रूप में की जाती है । किन्तु साधारण लोगों के लिए तो यह परिभाषा संतोषजनक नहीं है क्योंकि उन्हें प्रकाश तरंगों का ज्ञान नहीं है । साधारण लोगों के लिए 'लाल' शब्द एक विशेष रंग की छाप के लिए प्रयुक्त होता है क्योंकि उन्हें प्रकाश तरंगों का ज्ञान नहीं है । साधारण लोगों के लिए 'लाल' शब्द एक विशेष रंग की छाप के लिए प्रयुक्त होता है–चाहे जो भी उसका कारण हो । अत: प्रकाश-तरंग 'लाल' का परिभाषक लक्षण नहीं अनुषंगी लक्षण है । इसी प्रकार, मनोवैज्ञानिकों ने 'दु:ख' को 'तान्त्रिछोर की उत्तेजना तथा 'उदासी' को दमित बोध के रूप में परिभाषित किया है । अत: किसी वस्तु के कारण को उसकी परिभाषा मानना उचित नहीं है ।

अधिकतर जब हम किसी वस्तु के लक्षण का उल्लेख करते हैं तो हम यह स्पष्ट नहीं करते हैं कि जिस लक्षण का हम उल्लेख कर रहें हैं वह परिभाषक है या अनुषंगी जिसके फलस्वरूप हम दूसरों को भी भ्रम में डाल देते हैं । परिभाषक लक्षण किसी पद के आंशिक अर्थ या परिभाषा का कथन है किन्तु अनुषंगी लक्षण का कथन किसी तथ्य का कथन है, उस पद के विषय में नहीं बल्कि उस वस्तु के विषय में जिसका वह पद नाम है । जैसे–इस्पात लोहे का मिश्र धातु है । इस्पात पुल बनाने में काम आता है । पहले वाक्य में परिभाषक लक्षण का कथन है तथा दूसरे वाक्य में अनुषंगी लक्षण का कथन है । इसलिए पहला वाक्य 'इस्पात' शब्द के आंशिक अर्थ का कथन है पर दूसरा उस वस्तु के विषय में किसी तथ्य का कथन है ।

17.3.5 परिभाषा एवं अस्तित्व :

जब हम किसी वस्तु के परिभाषक लक्षण की चर्चा करते हैं, तो हम किसी भी प्रकार यह नहीं प्रमाणित करते हैं कि उस वस्तु का अस्तित्व है या नहीं । यद्यपि कोई एक शब्द के विभिन्न लक्षणों 'क' 'ख' 'ग' का उल्लेख कर भी लेता है तो भी उसने यह नहीं प्रदर्शित कर दिया है कि विश्व में किसी ऐसी वस्तु का अस्तित्व है जिसके 'क' 'ख' 'ग' जैसे लक्षण हैं ।

17.3.5 परिभाषा की परिधि :

जब हम सामान्य प्रयोग के किसी शब्द की परिभाषा देते हैं तो हमें तीन प्रमुख बातों का ध्यान रखना चाहिए ।

परिभाषा को अतिव्यापक नहीं होना चाहिए । उदाहरणस्वरूप यदि 'घोड़ा' शब्द को केवल जानवर या पशु के रूप में परिभाषित किया गया तो यह अतिव्यापक परिभाषा होगी । परिभाषा को संकीर्ण बनाने के लिए कुछ अन्य परिभाषक लक्षणों को जोड़ना होगा ।

किसी शब्द की परिभाषा अतिसंकीर्ण नहीं होनी चाहिए । यदि वृक्ष की परिभाषा यह करें कि 'वृक्ष' एक हरे पत्ते वाला 30 फीट ऊँचा पौधा है तो यह अतिसंकीर्ण परिभाषा होगी क्योंकि इस परिभाषा के अनुसार ऐसे वृक्ष जो कम ऊँचे हैं या जिनमें पत्तियाँ नहीं हैं या हरी नहीं हैं, उन्हें वृक्ष नहीं कहा जा सकता है ।

17.4 सारांश

उपरोक्त विवेचना के आधार पर यह सारांशत: कहा जा सकता है कि हम किसी पद की परिभाषा तभी दे सकते हैं जब उसकी यथार्थ एवं संभाव्य स्थितियों का ज्ञान रहे । परिभाषित करने में जिन शब्दों का प्रयोग होता है उसका अर्थ मूल शब्द के तुल्य होता है । ये शब्द ऐसे होते हैं कि परिभाष्य और परिभाषित को एक दूसरे से स्थानापन्न किया जा सकता है । किसी भी वस्तु में दो प्रकार के लक्षण पाये जाते हैं–परिभाषक लक्षण तथा अनुषंगी लक्षण । किसी वस्तु के परिभाषक लक्षण वैसे लक्षण हैं जिसके अभाव में वह शब्द किसी वस्तु के लिए लागू नहीं होगा । किन्तु अनुषंगी लक्षण

वैसे लक्षण हैं जिनके अभाव में कोई शब्द किसी वस्तु के लिए लागू हो सकता है ।

17.5 पाठ में प्रयुक्त शब्द

तुल्यार्थक शब्द

परिभाषा

परिभाषक लक्षण

अनुषंगी लक्षण

सर्वव्यापी

अस्तित्व

परिधि

अतिव्यापक

अतिसंकीर्ण

17.6 अभ्यास के लिए प्रश्न

17.6.1 वस्तुनिष्ठ प्रश्न :

(i) ''किसी वस्तु के वैसे लक्षण जिसके अभाव में वह शब्द किसी वस्तु के लिए लागू नहीं होगा'' उसे कहते हैं–

(अ) अनुषंगी लक्षण

(ब) परिभाषक लक्षण

(स) आकस्मिक लक्षण

(द) ऊपरोक्त में से कोई नहीं ।

उत्तर : (ब)

(ii) ''किसी वस्तु के वैसे लक्षण जिसके अभाव में कोई शब्द किसी वस्तु के लिए लागू हो सकता है' उसे कहते हैं–

(अ) अनुषंगी लक्षण

(ब) परिभाषक लक्षण

(स) तुल्यार्थक शब्द

(द) ऊपरोक्त में से कोई नहीं ।

उत्तर : (अ)

(iii) 'ऑक्सीजन एक गैस है' यह

(अ) एक अतिव्याप्त परिभाषा है

(ब) यह अतिसंकीर्ण परिभाषा है

(स) ऊपर्युक्त दोनों में से कोई नहीं है

(द) यह पूर्ण परिभाषा है

उत्तर : (अ)

17.6.2 लघु उत्तरीय प्रश्न :

(i) परिभाषक लक्षण को सोदाहरण स्पष्ट करें ।

(ii) अनुषंगी लक्षण को सोदाहरण स्पष्ट करें ।

(iii) परिभाषा की परिधि क्या है ? स्पष्ट करें ।

17.6.3 दीर्घ उत्तरीय प्रश्न :

(i) तुल्यार्थक शब्दों के द्वारा परिभाषा संबंधी विचार हॉस्पर्स के आलोक में स्पष्ट करें ।

17.7 प्रस्तावित पाठ

(i) जॉन हॉस्पर्स : दार्शनिक विश्लेषण परिचय

(ii) गोबर्द्धन भट्ट : दार्शनिक विश्लेषण परिचय

✠✠✠

स्वनिर्मित एवं सूचनात्मक परिभाषाएँ

पाठ संरचना

18.1 उद्देश्य

18.2 विषय-प्रवेश

18.3 मुख्य विषय की व्याख्या

18.3.1 स्वनिर्मित एवं सूचनात्मक परिभाषा

18.3.2 परिभाषा का आधारभूत लक्षण

18.4 सारांश

18.5 पाठ में प्रयुक्त शब्द

18.6 अभ्यास के लिए प्रश्न

18.6.1 वस्तुनिष्ठ प्रश्न

18.6.2 लघु उत्तरीय प्रश्न

18.6.3 दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

18.7 प्रस्तावित पाठ

18.1 उद्देश्य

प्रस्तुत पाठ का उद्देश्य स्वनिर्मित तथा सूचनात्मक परिभाषा के स्वरूप पर प्रकाश डालना है । जब हम किसी शब्द की परिभाषा देने का प्रयत्न करते हैं तो हम किसी नई परिभाषा का निर्माण करते हैं अर्थात् हम स्वनिर्मित परिभाषा देते हैं । लेकिन जब हम यह सूचना देते हैं कि सामान्य लोग इस शब्द की परिभाषा यह कहकर देते हैं तो उसे सूचनात्मक परिभाषा कहेंगे ।

18.2 विषय – प्रवेश

जब हम किसी शब्द को परिभाषित करते हैं तो वास्तव में हम उस शब्द के अर्थ की ओर संकेत करते हैं । किसी भी शब्द का स्वयं में कोई अर्थ नहीं होता है । शब्द तो एक मनमाना चिन्ह हैं, जिसको मनुष्यों के द्वारा अर्थ प्रदान किया जाता है । अब यहाँ एक प्रश्न उठता है कि जब हम किसी शब्द के अर्थ की ओर संकेत करते हैं तो हम वास्तव में करते क्या हैं ? इस प्रश्न के उत्तर में दो बातों में से एक करते हैं–या तो (i) हम यह कहते हैं कि हम इस शब्द का क्या अर्थ लगाने जा रहे हैं या

(ii) हम इस बात की सूचना देते हैं कि अन्य लोग अर्थात् उस भाषा को प्रयोग करने वाले लोग उस शब्द का क्या अर्थ लगाते हैं ।

पहला स्वनिर्मित अर्थ है या स्वनिर्मित परिभाषा तथा दूसरे में हम सूचना देते हैं कि लोग उस शब्द का प्रयोग किस अर्थ में करते हैं तो यह सूचनात्मक परिभाषा या कोशीय परिभाषा कहलाती है ।

18.3 मुख्य विषय की व्याख्या

18.3.1 स्वनिर्मित तथा सूचनात्मक परिभाषा :

प्राय: जब हम किसी शब्द की परिभाषा देते हैं तो हम सूचनात्मक परिभाषा का ही प्रयोग करते है । शब्द कोष से भी हमें शब्द की सूचनात्मक परिभाषा ही मिलती है । अत: हम शब्दों के लिए नए अर्थ नहीं गढ़ते हैं । दूसरी ओर, हम तो केवल लोगों के द्वारा शब्द को दिए गए अर्थ की सूचना देते हैं । जब हम यह कहते हैं कि 'त्रिभुज तीन सीधी रेखाओं से घिरा समतल आकार है' तो हम यह सूचना देते हैं कि हिन्दी भाषा-भाषी त्रिभुज का वही अर्थ लगाते हैं जो 'तीन सीधी रेखाओं से घिरा समतल आकार' का है । यह तो कोई स्वनिर्मित अर्थ नहीं है । हम केवल यह सूचना देते हैं कि इसका प्रयोग लोग किस प्रकार करते हैं ।

इस प्रकार, यद्यपि आमतौर पर हम सूचनात्मक परिभाषा देते हैं फिर भी कई बार हमें स्वनिर्मित परिभाषा की आवश्यकता पड़ती है । यदि कोई शब्द अनेकार्थक हो अर्थात् उस शब्द के अनेक अर्थ हों तो और उसके अनेक अर्थों में किसी एक अर्थ में हम उस शब्द का प्रयोग करना चाहें । सच पूछा जाय तो यहाँ हम उस शब्द के किसी नए अर्थ का निर्माण नहीं कर रहे हैं बल्कि केवल यह संकेत कर रहे हैं कि उस शब्द के विभिन्न अर्थों में किस अर्थ का प्रयोग कर रहे हैं ।

यदि हमारा विश्वास है कि किसी प्रचलित शब्द का कोई स्पष्ट अर्थ नहीं है तो हम उस शब्द का एक और निश्चित अर्थ का निर्माण करते हैं । उदाहरणस्वरूप, यदि हम 'गणतंत्र' शब्द की परिभाषा अथवा उसका निश्चित अर्थ बतलाते हैं तो हम यह नहीं कहते हैं कि यहाँ लोग किस अर्थ में इसका प्रयोग करते हैं बल्कि यह कि यह अर्थ अन्य प्रयोगों की अपेक्षा अधिक निश्चित है ।

यदि हमारे मन में कोई अर्थ है जिसके लिए हम पाते हैं कि कोई शब्द उस भाषा में नहीं है, तो हम नये शब्द का निर्माण करते हैं । यह विशुद्ध स्वनिर्माण है, सूचनात्मक नहीं है, क्योंकि इसके पहले उस शब्द को किसी ने उस अर्थ में प्रयुक्त नहीं किया था ।

इस प्रकार, स्वनिर्मित तथा सूचनात्मक परिभाषाओं का भेद बहुत ही सूक्ष्म है । वह परिभाषा जो आज स्वनिर्मित है प्रचलित होने के बाद सूचनात्मक हो जाती है ।

कुछ लोगों के अनुसार, परिभाषाएँ न सत्य होती हैं न असत्य होती हैं क्योंकि जब हम किसी शब्द की परिभाषा देते हैं तो हम यह बतलाते हैं कि हम अमुक अर्थ में उस शब्द का प्रयोग कर रहे हैं । ऐसा करने में सत्यता अथवा असत्यता का प्रश्न नहीं उठता है । दूसरे शब्दों में यदि हम यह कहते हैं कि किसी विशेष शब्द का प्रयोग हम किसी विशेष अर्थ में कर रहे हैं तो यहाँ सत्यता अथवा असत्यता का प्रश्न ही नहीं उठता है ।

किन्तु कुछ लोगों के अनुसार परिभाषा असत्य अथवा सत्य हो सकती है । यदि कोई यह कहता है कि 'कलम एक छड़ी है' या 'सेव एक सब्जी है' तो ये असत्य परिभाषाएँ हैं ।

सच पूछा जाय तो दोनों ही विचार सही हैं क्योंकि एक का प्रयोग स्वनिर्मित परिभाषाओं के लिए होता है और दूसरे का प्रयोग सूचनात्मक परिभाषाओं के लिए होता है । स्वनिर्मित परिभाषा में हम यह कहते हैं कि अमुक शब्द का प्रयोग हम अमुक अर्थ में करते हैं । यहाँ सत्यता एवं असत्यता का प्रश्न नहीं उठता है ।

किन्तु, जहाँ हम सूचना देते हैं कि किसी शब्द का प्रयोग कैसे होता है तो हमारी सूचना सत्य या असत्य हो सकती है । यदि हम कहें कि 'मनुष्य चार पैरों वाला प्राणी है' तो यह असत्य परिभाषा होगी । अत: सूचनात्मक परिभाषाएँ सत्य एवं असत्य हो सकती हैं क्योंकि ये शब्द प्रयोग की सूचना देती हैं ।

18.3.2 परिभाषा का आधारभूत लक्षण :

हम पाते हैं कि कई शब्द विशेषकर वैज्ञानिक शब्दों की परिभाषाएँ बहुत ही बदल गयी है । हम पाते हैं कि 'टी० बी०', 'हैजा' या 'निमोनिया' शब्दों की परिभाषा जैसी कि 19वीं शताब्दी में दी जाती थी जब इनके कीड़ों का अन्वेषण नहीं हुआ था तथा अन्वेषण के बाद जो इसकी परिभाषा दी जाती है उसमें बहुत अधिक अन्तर है । प्रश्न यह उठता है कि दोनों परिभाषाओं में कौन सी परिभाषा श्रेष्ठ है तथा हमें किसे चुनना चाहिए । वर्त्तमान परिभाषा को या उसे जो उन्नीसवीं शताब्दी में दी जाती थी ? दोनों परिभाषाओं में कौन सी परिभाषा मौलिक है ?

यदि परिभाषा का लक्ष्य मात्र वस्तुओं की पहचान करना है तब तो उत्तर सरल है । यदि परिभाषा के द्वारा संकेत की गयी वस्तु की पहचान हो जाती है, तो हमारे लक्ष्य की पूर्ति हो जाती है । उदाहरणस्वरूप, 'लाल' शब्द की परिभाषा का लक्ष्य होता है कि वे जिन वस्तुओं की ओर संकेत करते हैं, उन्हें पहचान लिया जाए । किन्तु, वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दों के संदर्भ में ऐसा नहीं कहा जा सकता है । इन शब्दों की परिभाषा में हमारी ज्ञान की प्रगति की झूलक मिलती है । मानव जीवन का लक्ष्य ज्ञान की प्राप्ति करना ही तो है । उदाहरणार्थ, आदिम काल से ही मनुष्य शब्द की कई परिभाषा दी गयी है । कुछ लोगों ने मनुष्य को 'पंखविहीन दो पैर वाला प्राणी' कहा या 'हँसनेवाला प्राणी' कहा है। किन्तु हम पाते हैं कि पक्षियों को भी दो पैर होते हैं तथा एक पैर वाला मनुष्य भी मनुष्य कहलाता है । इसके अतिरिक्त हम यह भी पाते हैं कि कुछ भेड़िए भी हँसते है। अत: हँसना, दो पैरों वाला होना, यह सब मनुष्य के आकस्मिक लक्षण हैं । फिर कुछ लोगों ने मनुष्य को 'एक सौन्दर्यबोधशील प्राणी कहा है, 'सौन्दर्य बोधशील' तो ऐसा लक्षण है जो केवल मनुष्यों में पाया जाता है । किन्तु यह एक सर्वव्यापी अनुषंगी लक्षण है, परिभाषक लक्षण नहीं । यदि मनुष्यों में इस लक्षण के अभाव की कल्पना की जाए तो भी मनुष्य ही कहा जाएगा ।

अरस्तू ने मनुष्य की परिभाषा देते हुए कहा ''मनुष्य एक विवेकशील प्राणी है ।'' इसका यह अर्थ नहीं है कि सभी मनुष्य विवेकशीलता प्रदर्शित करते हैं । इसका केवल यह तात्पर्य है कि सभी मनुष्य इसे प्रदर्शित करने में सक्षम है तथा मनुष्य को छोड़ और कोई भी जानवर विवेकशील नहीं है । यद्यपि हमें विवेकशीलता को आगे भी परिभाषित करना है फिर भी 'विवेकशील' ही मनुष्य का आधारभूत लक्षण है । इसलिए, अरस्तू ने 'मनुष्य को विवेकशील प्राणी कहा है।' आधारभूत लक्षण ही परिभाषक होता है ।

18.4 सारांश

उपर्युक्त विवेचना के आधार पर यह सारांशत: कहा जा सकता है कि जब हम किसी शब्द की परिभाषा देने का प्रयत्न करते हैं तो हम पाते हैं कि यह कोई आसान काम नहीं है, वरन यह एक अत्यन्त ही कठिन एवं जटिल कार्य है। किसी शब्द की नयी परिभाषा का निर्माण करना अथवा स्वनिर्मित परिभाषाएँ देना आसान अथवा सरल है, पर अन्य लोगों के लिए इसका कोई महत्त्व नहीं होगा । अन्य लोगों के लिए इसका महत्त्व तभी होगा जब उन्हें वह मान्य हो और उनका सामान्य प्रयोग होने लगे । वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दों के साथ कठिनाइयाँ कम हैं क्योंकि उनके निर्माण के समय उनका निश्चित अर्थ निर्धारित कर दिया जाता है । अधिक कठिनाई उन शब्दों के संबंध में है जो किसी भाषा के सर्व प्रचलित शब्द हैं–जैसे–टेबुल, पंखा, दौड़ना आदि । इन शब्दों की सूचनात्मक परिभाषा देना अथवा शब्दों के द्वारा उनके अर्थ को स्पष्ट रूप से परिभाषित करना कठिन है । इस प्रकार, जब हम किसी शब्द की परिभाषा देने का प्रयत्न करते हैं तो हम किसी नई परिभाषा का निर्माण करते हैं या स्वनिर्मित परिभाषा देते हैं अथवा हम यह सूचना देते हैं कि सामान्य लोग उस शब्द की परिभाषा कैसे देते हैं अथवा जो लोग उस भाषा का प्रयोग करते हैं उस शब्द का क्या अर्थ

लगाते हैं । पहले को स्वनिर्मित परिभाषा और दूसरे को सूचनात्मक परिभाषा कहते हैं ।

18.5 पाठ में प्रयुक्त शब्द

स्वनिर्मित परिभाषा

सूचनात्मक परिभाषा

कोशीय परिभाषा

विवेकशील प्राणी

सौन्दर्यबोध शील

परिभाषक

18.6 अभ्यास के लिए प्रश्न

18.6.1 वस्तुनिष्ठ प्रश्न :

(i) जब हम किसी शब्द की नई परिभाषा का निर्माण करते हैं तो उसे कहते हैं–

(अ) सूचनात्मक परिभाषा

(ब) स्वनिर्मित परिभाषा

(स) कोशीय परिभाषा

(द) ऊपरोक्त में से कोई नहीं ।

उत्तर : (ब)

(ii) शब्द कोष के द्वारा प्राप्त किसी शब्द की परिभाषा को कहते हैं–

(अ) सूचनात्मक

(ब) स्वनिर्मित

(द) अ तथा ब दोनों

(स) ऊपरोक्त में से कोई नहीं ।

उत्तर : (अ)

18.6.2 लघु उत्तरीय प्रश्न :

(i) स्वनिर्मित परिभाषा पर प्रकाश डालें ।

(ii) सूचनात्मक या कोशीय परिभाषा को स्पष्ट करें ।

18.6.3 दीर्घ उत्तरीय प्रश्न :

(i) स्वनिर्मित एवं सूचनात्मक परिभाषा के स्वरूप को स्पष्ट करें ।

18.7 प्रस्तावित पाठ

(i) जॉन हॉस्पर्स : दार्शनिक विश्लेषण परिचय

(ii) गोबर्द्धन भट्ट : दार्शनिक विश्लेषण परिचय

✠✠✠

वस्तुवाचकता के द्वारा परिभाषा

पाठ संरचना

19.1 उद्देश्य

19.2 विषय-प्रवेश

19.3 मुख्य विषय की व्याख्या

19.3.1 वस्तुवाचकता का अर्थ एवं स्वरूप

19.3.2 वस्तुवाचकता के द्वारा परिभाषा

19.3.3 सामान्य शब्दों की आवश्यकता

19.3.4 वर्गीकरण

19.4 सारांश

19.5 पाठ में प्रयुक्त शब्द

19.6 अभ्यास के लिए प्रश्न

19.6.1 वस्तुनिष्ठ प्रश्न

19.6.2 लघु उत्तरीय प्रश्न

19.6.3 दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

19.7 प्रस्तावित पाठ

19.1 उद्देश्य

प्रस्तुत पाठ का उद्देश्य वस्तुवाचकता के द्वारा परिभाषा के महत्त्व पर प्रकाश डालना है । किसी शब्द से जिस वस्तु का संकेत मिलता है, उसे शब्द की वस्तुवाचकता कहा जाता है । वस्तुवाचकता के द्वारा भी हमें किसी शब्द को परिभाषित करने में मदद मिलती है । इसलिए वस्तुवाचकता के स्वरूप को स्पष्ट करना आवश्यक है ।

19.2 विषय-प्रवेश

जब भी हम किसी शब्द की परिभाषा देने की चेष्टा करते हैं, तो हमेशा यह संभव नहीं होता है कि ऐसे शब्द का उल्लेख करें जो अर्थ में उस शब्द के तुल्य हो । कभी-कभी तो तुरन्त ही वैसे शब्द ढूँढ़ना जो अर्थ में उस शब्द के तुल्य हो, यह संभव नहीं हो पाता है । किन्तु कुछ सोच-विचार के बाद ऐसे शब्द मिल जाते हैं । किन्तु कभी तो ऐसा होता है कि ऐसे शब्द मिलते ही नहीं हैं । दोनों ही स्थिति में उस शब्द से जिस वस्तु और वस्तुओं का संकेत मिलता है, उसे बता देना उस शब्द को परिभाषित करने की अपेक्षा अधिक सरल होता है । किसी भी शब्द से उन

सभी व्यक्तियों या वस्तुओं का बोध होता है जो उन नामों से जाने जाते हैं, उन्हें ही उस शब्द की वस्तुवाचकता कहा जाता है अर्थात् वे सभी पदार्थ जिनका किसी शब्द से संकेत मिलता है, उस शब्द की वस्तुवाचकता हैं । संसार में जितने मनुष्य हैं–मानव वर्ग–मनुष्य पद की वस्तुवाचकता के अन्दर हैं, क्योंकि उन्हें 'मनुष्य' कहा जाता है । इसी प्रकार सभी कलम 'कलम' पद की वस्तुवाचकता के अन्तर्गत हैं । सभी घोड़े 'घोड़ा' पद की वस्तुवाचकता के अन्तर्गत है । किसी पद के वस्तुवाचकता को उस पद का विस्तार, परिधि या क्षेत्र भी कहा जाता है । किसी पद की वस्तुवाचकता से यह पता चलता है कि उस पद से समझे जानेवाले व्यक्तियों या द्रव्यों का विस्तार क्या है, इसलिए इसे विस्तार कहा जाता है। किसी पद की वस्तुवाचकता से यह भी पता चलता है कि उस पद से कितने व्यक्तियों का बोध होता है, इसलिए इसे पद की परिधि या क्षेत्र भी कहते हैं । इस प्रकार, वस्तुवाचकता के द्वारा शब्द को परिभाषित किया जा सकता है ।

19.3 मुख्य विषय की व्याख्या

19.3.1 वस्तुवाचकता का अर्थ एवं स्वरूप

वस्तुवाचकता से हमारा तात्पर्य उन शब्दों से है जिनका संकेत हमें उस शब्द के द्वारा मिलता है । उदाहरणस्वरूप, जब हम कहते हैं–'मनुष्य' तो यद्यपि हमें यह स्पष्ट ज्ञान नहीं होता है कि मनुष्य होने के लिए कौन से लक्षण आवश्यक हैं किन्तु हम 'मनुष्य' के कुछ उदाहरण तो दे सकते हैं, जैसे–मोहन, सोहन, हरि, सीता, गीता आदि । इस प्रकार वे सभी व्यक्ति जिन पर 'मनुष्य' शब्द लागू होता है, वे ही 'मनुष्य' शब्द की वस्तुवाचकता हैं । अर्थात् किसी शब्द की सम्पूर्ण वस्तुवाचकता है वे सभी वस्तुएँ जिन पर वह शब्द लागू होता है । 'पेड़' या 'वृक्ष' शब्द की वस्तुवाचकता के अन्तर्गत सभी वृक्ष आ जाएंगे । 'घोड़ा' शब्द की सम्पूर्ण वस्तुवाचकता के अन्तर्गत सम्पूर्ण घोड़ा वर्ग है ।

किन्तु, हम यह भी पाते हैं कि शब्द द्वारा जिन वस्तुओं का संकेत मिलता है उनमें प्राय: का नाम नहीं होता है। मनुष्य शब्द से जिन मनुष्यों का बोध होता है, उनके तो नाम होते हैं किन्तु सभी वृक्षों के अथवा प्रत्येक घर का कोई नाम नहीं होता है । उदाहरणस्वरूप, व्यक्तिवाचक नाम विशेष व्यष्टि का कोई नाम है । पंडित जवाहरलाल नेहरू व्यक्तिवाचक नाम है जो भारत वर्ष के प्रधानमंत्री का बोध कराता है । मेरा नाम मेरा बोध कराता है, जॉनी नाम मेरे कुत्ते का बोध कराता है । कभी-कभी किन्हीं समान वस्तुओं के समूह का कोई एक नाम दे दिया जाता है जैसे–बाँकीपुर क्लब, बिहार रेजीमेंट आदि । कई बार हम यह भी पाते हैं कि एक ही व्यक्तिवाचक नाम एक से अधिक वस्तुओं या व्यष्टियों को सूचित करता है । जैसे–'राम' शब्द एक से अधिक व्यक्तियों का नाम हो सकता है या किसी कुत्ते का भी। यद्यपि ये नाम एक से अधिक वस्तुओं को सूचित करता है, फिर भी वे व्यक्तिवाचक नाम ही हैं, क्योंकि वे किसी वर्ग को संबोधित नहीं करते हैं ।

सभी व्यष्टियों का एक व्यक्तिवाचक नाम दिया जा सकता है, पर सबका व्यक्तिवाचक नाम होता नहीं है । कुछ पालतू कुत्ते या बिल्लियों या पक्षियों का व्यक्तिवाचक नाम हो सकता है किन्तु सभी पशु पक्षियों का व्यक्तिवाचक नाम नहीं हो सकता है । कुछ निर्जीव पदार्थ जैसे–मकान, गाड़ी आदि के व्यक्तिवाचक नाम हो सकते हैं, पर सभी मकान या गाड़ियों के नाम नहीं होते । ये शब्द अनेक वस्तुओं को सूचित करते हैं, जिनमें कुछ सामान्य लक्षण होता है । अत: ये व्यक्तिवाचक नाम नहीं हैं ।

19.3.2 वस्तुवाचकता के द्वारा परिभाषा :

यहाँ एक प्रश्न उठता है कि वस्तुवाचकता का परिभाषा के साथ क्या संबंध है ? जब हमसे किसी शब्द की परिभाषा पूछा जाता है तो हम उस शब्द की वस्तुवाचकता बता देते हैं । उदाहरणस्वरूप, जब हमसे 'मनुष्य' शब्द की परिभाषा पूछी जाती है तो हम कहते हैं–मोहन, सोहन, राम, गीता, सीता आदि । कभी वस्तुवाचकता के वर्गों का भी उल्लेख कर देते हैं जैसे–यदि हमें पक्षी की परिभाषा देनी होती है तो हम कहते हैं तोता, मैना इत्यादि । यदि श्रोता को उन शब्दों का (राम, श्याम, मोहन, तोता, मैना आदि) के अर्थ का पता हो तो उसे उन सामान्य शब्दों का जैसे–मनुष्य,

पक्षी का अर्थ पता चल जाएगा । अत: हॉस्पर्स का कहना है कि, "As a way of finding out what a word means denotation will do as a first approximation only."

(An Introduction to Philosophical Analysis, P–42)

यदि हम यह जान लें कि कोई वस्तु विशेष के लिए कौन से लक्षण का होना आवश्यक है तो हम यह पता लगाकर कि वह परिभाषक लक्षण किसी वस्तु में है या नहीं, उस वस्तु को वह वस्तु-विशेष कह सकते हैं । यदि शब्दों का एक ही पद नाम हो तो उनकी वस्तुवाचकता एक ही होगी किन्तु यदि वस्तुवाचकता एक ही हो तो भी दो पदनाम हो सकते हैं जैसे–'कौआ' और 'काला कौआ' । दोनों दो पदनाम हैं परन्तु दोनों की वस्तुवाचकता एक ही है, क्योंकि सभी कौए काले हैं । दोनों की वस्तुवाचकता को एक जानना तभी संभव हुआ जब उस परिभाषक लक्षण 'कालापन' को हमने जाना जिसका होना कौआ होने के लिए आवश्यक है ।

कुछ ऐसे भी शब्द हैं जैसे–'परी', 'स्वर्ण-पर्वत' जो पदनाम हैं पर किसी वस्तु विशेष को सूचित नहीं करते हैं। किन्तु कुछ ऐसे भी शब्द हैं जो किसी वस्तु को सूचित करते हैं पर पदनाम नहीं हैं, जैसे–व्यक्तिवाचक नाम । यद्यपि हम कुछ वस्तुओं के व्यक्तिवाचक नामों को जान लेते हैं, फिर भी हम उनके लक्षण को नहीं जान पाते हैं । जैसे–'गौरी' किसी औरत का भी नाम हो सकता है, किसी गाय या बकरी का भी नाम हो सकता है ।

यद्यपि वस्तुवाचकता द्वारा परिभाषित करने की कुछ हानियाँ हैं, फिर भी इसके महत्त्वपूर्ण लाभ भी हैं । हम पाते हैं कि कई शब्दों को लेकर यद्यपि लोग विरोधी परिभाषाएँ देते हैं, परन्तु उन शब्दों की वस्तुवाचकता या उस शब्द से किस वस्तु का संकेत मिलता है इससे लोगों में मतभेद नहीं रहता है । उदाहरणस्वरूप, 'मनुष्य' की परिभाषा क्या है ? अर्थात् कौन से लक्षण रहने से किसी को मनुष्य कहा जाएगा इसमें मतभेद हो सकता है, लेकिन उसकी वस्तुवाचकता बताने में अर्थात् 'यह मनुष्य है' और 'वह मनुष्य है' इसमें लोगों में मतभेद नहीं रहता है । इसलिए परिभाषा में वस्तुवाचकता का महत्त्व रहता है । उदाहरणार्थ, 'दर्शनशास्त्र' शब्द को ही लें । इस शब्द की वस्तुवाचकता को लेकर लोगों में उतना मतभेद नहीं है जितना कि उस शब्द की परिभाषा को लेकर लोगों में मतभेद हैं । दर्शनशास्त्र की परिभाषा को लेकर मतभेद होने के बावजूद सभी यह मानते हैं कि दर्शनशास्त्र की निम्नलिखित समस्याएँ हैं–परम सत की समस्या, ज्ञान की समस्या, नियतिवाद की समस्या, मानव-स्वतंत्रता की समस्या, शुभ तथा ईश्वर की समस्या आदि ।

19.3.3 सामान्य शब्दों की आवश्यकता :

कहा जाता है कि संसार में कोई दो पदार्थ बिल्कुल समान नहीं होते हैं । न केवल विभिन्न वर्गों के पदार्थ भिन्न होते हैं किन्तु एक ही वर्ग के पदार्थ भी एक समान नहीं होते हैं । यदि यह सत्य है तो प्रश्न उठता है कि सामान्य शब्द जैसे–कुर्सी, टेबुल, वृक्ष, आदि की आवश्यकता क्या है ? प्रत्येक के लिए व्यक्तिवाचक नाम क्यों न हो ? किन्तु कल्पना कीजिए कि संसार में यदि प्रत्येक वस्तु का अलग-अलग नाम हो तो कितने नाम हो जाएँगे और उन सबको स्मरण करना कितना कठिन हो जाएगा । यह तो किसी के लिए भी बिल्कुल असंभव होगा ।

कठिनाई केवल नामों को स्मरण करने की नहीं है, यह बिल्कुल ही अव्यावहारिक है । मान लीजिए कि कोई भी सामान्य शब्द नहीं हो और राम ने एक गाड़ी खरीदी और उसका नाम 'क' रखा और श्याम ने एक गाड़ी खरीदी उसका नाम 'ख' रखा । किन्तु, यदि मुझे भी एक कार खरीदनी है और मुझे आपसे प्रश्न पूछना है कि आपने अपनी कार कहाँ से खरीदी, तो मैं यह प्रश्न पूछ ही नहीं सकता क्योंकि, 'कार' नाम का कोई सामान्य शब्द नहीं है जो यह सूचित करें कि जो चीज अपने खरीदी है वही मैं भी खरीदना चाहता हूँ । इसलिए सामान्य शब्दों की आवश्यकता है जो समानता के आधार पर वस्तुओं को सूचित करें ।

सामान्य शब्दों से यह भी स्पष्ट होता है कि यद्यपि विभिन्न वस्तुओं का आपस में भेद है फिर भी उनमें कुछ सामान्य लक्षण हैं । एक मनुष्य दूसरे मनुष्य से भिन्न हो लेकिन फिर भी उनमें कुछ सामान्य लक्षण है जिसके कारण उन्हें मनुष्य कहा जाता है ।

सामान्य शब्दों से दूसरा लाभ यह है कि वे वस्तुओं के भेद मिटाते हैं और उनकी समानताओं पर बल देते हैं । दो वस्तुओं के लिए एक ही शब्द का प्रयोग हो सकता है, यद्यपि वे एक दूसरे से भिन्न हों । फिर भी हमें यह नहीं समझना चाहिए कि सामान्य शब्दों की वस्तुएँ सामान्य होती हैं । ''समान नाम, समान वस्तुएँ'' एक भ्रामक अनुमान है ।

19.3.4 वर्गीकरण

हमने देखा कि संसार में कोई दो वस्तुएँ बिल्कुल एक जैसी नहीं होती हैं । इसलिए यदि भेद के आधार पर पदार्थों को अलग-अलग वर्गों में रखा जाए तो प्रत्येक वर्ग में एक ही व्यष्टि होगी, क्योंकि दूसरी व्यष्टि तो कुछ न कुछ बातों में उससे भिन्न होगी ही । जैसे-मैंने एक लाल 'मारुति कार' खरीदी और आपने भी लाल मारुति कार खरीदी तो यद्यपि दोनों में कई समानता होगी । फिर भी उनमें कुछ न कुछ अन्तर अवश्य होगा । उन्हीं अन्तर या भेद के आधार पर हम वस्तुओं का वर्गीकरण करेंगे और दोनों कारों या गाड़ियों को अलग-अलग वर्गों में रखेंगे । मेरी गाड़ी का वर्ग नाम ''मेरी मारूति कार' और आपकी कार का 'आपकी मारूति कार' नाम होगा । इस प्रकार, प्रत्येक वर्ग नाम व्यक्तिवाचक नाम हो जाएगा ।

इसी प्रकार, संसार में किन्हीं दो वस्तुओं में सभी बातों का अन्तर भी नहीं होता है । इनमें अवश्य ही कुछ समानताएँ होती हैं जिसके आधार पर उन्हें एक ही वर्ग की सदस्यता मिलती है । जैसे यदि हम पूछें कि कुर्सी और टेबुल में क्या समानता है, तो हमें जवाब मिलेगा कि दोनों ही फर्नीचर हैं । फिर यदि यह पूछा जाए कि 'चिड़िया और मनुष्य में क्या समानता है ? तो हम कहेंगे कि दोनों ही जीव हैं । अत: कुछ स्वाभाविक लक्षणों के आधार पर विभिन्न व्यक्तियों को वर्ग नाम दिया जाता है जैसे-मनुष्य, पशु, कुर्सी आदि ।

इस प्रकार, पदार्थों में जितने सामान्य लक्षण हैं, सभी के आधार पर वर्गीकरण संभव है । इस प्रकार, संसार में अनेक वर्ग हो जाएंगे । वर्गों के चुनाव में प्रकृति हमें निर्देश देती है, आदेश नहीं देती है । प्रकृति निर्देश इस अर्थ में देती है कि हम प्रकृति में कुछ लक्षणों का बारम्बार संयोग पाते हैं जिसके आधार पर हम उनका नामकरण करते हैं । अब एक प्रश्न उठता है कि क्या वर्ग मनुष्यों द्वारा निर्मित है या प्राकृतिक है ? वर्ग प्रकृति में पाए जाते हैं क्योंकि सामान्य लक्षण प्रकृति में ही पाए जाते हैं । दूसरी ओर, वर्ग मानव निर्मित भी है क्योंकि वर्गीकरण की प्रक्रिया मनुष्य अपनी रुचि और आवश्यकता अनुसार करता है । हम अपनी आवश्यकता अनुसार सामान्य लक्षणों में से भिन्न समूहों को चुन कर वर्गीकरण कर लेते हैं ।

19.4 सारांश

सारांशत: कहा जा सकता है कि किसी भी पद की परिभाषा में वस्तुवाचकता का महत्त्वपूर्ण योगदान रहता है । किसी शब्द से जिस वस्तु का संकेत मिलता है उसे शब्द की वस्तुवाचकता कहा जाता है । जैसे 'मनुष्य' शब्द की वस्तुवाचकता संसार के सभी मनुष्य हैं । इसी वस्तुवाचकता के आधार पर इसके आवश्यक एवं सार गुणों को ध्यान में रखकर किसी शब्द को परिभाषित किया जाता है । इसलिए परिभाषा में वस्तुवाचकता का महत्त्व है ।

19.5 पाठ में प्रयुक्त शब्द

वस्तुवाचकता

गुणवाचकता

व्यक्तिवाचक नाम

वर्गीकरण

सामान्य लक्षण

पद

विस्तार

19.6 अभ्यास के लिए प्रश्न

19.6.1 वस्तुनिष्ठ प्रश्न :

(i) 'किसी भी शब्द से उन सभी व्यक्तियों या वस्तुओं का बोध होता है जो उन नामों से जाने जाते हैं' उन्हें कहा जाता है–

(अ) गुणवाचकता

(ब) वस्तुवाचकता

(स) भाववाचकता

(द) ऊपरोक्त में से कोई नहीं ।

उत्तर : (ब)

(ii) किसी पद का वस्तुवाचकता :

(अ) उसका विस्तार है

(ब) उसका गुण है

(स) उपर्युक्त दोनों है

(द) उपर्युक्त में से कोई नहीं है ।

उत्तर : (अ)

19.6.2 लघु उत्तरीय प्रश्न :

(i) वस्तुवाचकता क्या है ? स्पष्ट करें ।

(ii) वर्गीकरण क्या है ? स्पष्ट करें ।

19.6.3 दीर्घ उत्तरीय प्रश्न :

(i) परिभाषा में वस्तुवाचकता के महत्त्व पर प्रकाश डालें ।

19.7 प्रस्तावित पाठ

(i) जॉन हॉस्पर्स : दर्शनिक विश्लेषण परिचय

(ii) गोवर्द्धन भट्ट : दार्शनिक विश्लेषण परिचय ।

✠✠✠

गुणवाचकता के द्वारा परिभाषा

पाठ संरचना

20.1 उद्देश्य

20.2 विषय-प्रवेश

20.3 मुख्य विषय की व्याख्या

20.3.1 गुणवाचकता तथा अर्थ

20.3.2 प्रभावी परिभाषा

20.4 सारांश

20.5 पाठ में प्रयुक्त शब्द

20.6 अभ्यास के लिए प्रश्न

20.6.1 वस्तुनिष्ठ प्रश्न

20.6.2 लघु उत्तरीय प्रश्न

20.6.3 दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

20.7 प्रस्तावित पाठ

20.1 उद्देश्य

प्रस्तुत पाठ का उद्देश्य गुणवाचकता के द्वारा परिभाषा किसी शब्द की किस प्रकार देते हैं, इसपर प्रकाश डालना है। किसी शब्द का अर्थ तभी स्पष्ट होता है जब उसकी गुणवाचकता बता दी जाय । किसी पद से जिस वस्तु का बोध होता है उसके स्वभावगुण को बतला देने से ही उस पद का अर्थ स्पष्ट हो जाता है । अत: किसी पद की सम्पूर्ण गुणवाचकता स्पष्टतया व्यक्त करना ही उसकी परिभाषा है अर्थात् किसी पद की परिभाषा बताने के लिए उस पद से जिस व्यक्ति का बोध होता है उसके सामान्य और आवश्यक गुणों को शब्दों में व्यक्त करना चाहिए ।

20.2 विषय–प्रवेश

गुणवाचकता के द्वारा शब्दों की परिभाषा दी जा सकती है । शब्दों का सही अर्थ जानने का अर्थ है उनकी वस्तुवाचकता और गुणवाचकता जानना अर्थात् किन वस्तुओं का उनसे संकेत होता है और उनमें क्या सार गुण है या उनका क्या स्वभाव है । किसी शब्द का स्पष्ट अर्थ और महत्व जानने के लिए ही परिभाषा का अध्ययन किया जाता है । किसी शब्द का अर्थ तभी स्पष्ट होता है जब उसकी गुणवाचकता बता दी जाए । जैसे 'मनुष्य' पद की गुणवाचकता है–'विवेकशीलता' तथा 'प्राणित्व' । अत: 'मनुष्य विवेकशील प्राणी है' कहने से मनुष्य पद का अर्थ स्पष्ट हो जाता है । किसी पद की परिभाषा बताने के लिए उस पद से जिन व्यक्तियों का बोध होता है उसके सामान्य और आवश्यक गुणों को

शब्दों में व्यक्त करना चाहिए । जैसे–'त्रिभुज' पद की परिभाषा करनी है तो सभी त्रिभुजों में जो सामान्य और मौलिक गुण हैं–'तीन रेखाओं से घिरा रहना' और 'समतल आकारत्व'–उसे स्पष्ट रूप से व्यक्त करेंगे । अत: किसी शब्द का स्पष्ट अर्थ तभी जाना जा सकता है जब हम उसकी वस्तुवाचकता और गुणवाचकता से पूर्णरूप से परिचित हो जाएं । 'मनुष्य' पद की वस्तुवाचकता 'संसार के सभी मनुष्य' हैं और उसकी गुणवाचकता 'पशुता' एवं 'विवेकशीलता' है । उसी प्रकार 'कलम' शब्द की वस्तुवाचकता 'संसार की प्रत्येक कलम' और इसका स्वभाव बोध या गुणवाचकता 'स्याही से लिखने की सामग्री' हैं ।

20.3 मुख्य विषय की व्याख्या

20.3.1 गुणवाचकता तथा अर्थ :

किसी शब्द की गुणवाचकता हर व्यक्ति तथा हर समूह के लिए अलग-अलग होती है । परन्तु बहुत से ऐसे भी शब्द हैं जिनकी गुणवाचकता में एकरूपता आ जाती है क्योंकि उस भाषा को प्रयोग करने वाले, सभी लोग अच्छी तरह जानते हैं कि उस शब्द से किस गुण का संकेत मिलता है, यदि किसी को 'मूर्ख' कहा जाता है तो हिन्दी भाषा जानने वाले लोग यह अच्छी तरह समझते हैं कि उस व्यक्ति में किस गुण का संकेत किया गया ।

कभी-कभी किसी शब्द का ठीक पर्यायवाची शब्द पाना कठिन हो जाता है । क्योंकि यद्यपि दोनों शब्दों के व्यक्तिबोध एवं लक्षण एक जैसे होते हैं, उनकी गुणवाचकता एक जैसी नहीं होती है । उन शब्दों से जो प्रतिमाएँ, प्रवृत्तियाँ विचार या भावनाएँ मन में आती हैं वे अलग-अलग होती हैं । केवल तकनीकी या वैज्ञानिक शब्दों के ठीक पर्यायवाची शब्द हो सकते हैं । किन्तु दैनिक जीवन में प्रयोग होनेवाले शब्दों के लक्षण या गुण-घर्म के ठीक पर्यायवाची शब्दों का मिलना कठिन है।

मान लें कि गुणवाचकता के अन्तर्गत वैसे लक्षणों को रखा जाए जो सर्वव्यापी हैं तो प्रश्न यह उठता है क्या किसी शब्द की गुणवाचकता उसके अर्थ का अंश होगी ? आमतौर पर हम इसका निषेधात्मक उत्तर ही देंगे । हम यह कहेंगे कि किसी शब्द का अर्थ एक चीज है तथा उसका श्रोताओं पर जो प्रभाव पड़ता है वह दूसरी चीज है । 'साँप' शब्द के उच्चारण से श्रोताओं पर एक प्रभावकारी प्रभाव पड़ता है किन्तु इसका तो उस शब्द के संज्ञा संज्ञी मीमांसा (Semantics) से कोई संबंध नहीं है । यद्यपि अर्थ तथा परिणाम भिन्न है । फिर कुछ विचारकों के अनुसार किसी शब्द की गुणवाचकता का उसके अर्थ के साथ संबंध है । इनके अनुसार शब्दों के तीन प्रकार के अर्थ होते हैं जिसमें शब्द की गुणवाचकता का उल्लेख रहता है । वे इस प्रकार हैं–

(i) चित्रमूलक अर्थ :

किसी शब्द का चित्रमूलक अर्थ वह है जो उस शब्द के परिणामस्वरुप श्रोता या पाठक के मन में मानसिक तस्वीर उभारती है । हॉस्पर्स के अनुसार "The 'pictorial meaning' of a word consists of the mental pictures it evokes in the hearer's or reader's mind."

(An Introduction to Philosophical Analysis, P–49)

उदाहरणस्वरूप, यदि किसी ने कहा 'शेर' तो हमारे मन में शेर की एक मानसिक तस्वीर बन जाती है । उसी प्रकार यदि किसी ने 'लाल' कहा तो हमारे मन में लाल रंग के कपड़े की मानसिक तस्वीर बनती है । किन्तु शेर या लाल रंग की मानसिक तस्वीर उन शब्दों के द्वारा उत्पन्न परिणाम है । उन शब्दों के अर्थ या अर्थ के अंश नहीं हैं । शेर या हाथी के अर्थ समझने का मतलब है इन चीजों को पहचानना तथा अन्य चीजों से उनका भेद करना । हम पाते हैं कि कई लोगों को कोई भी मानसिक तस्वीर नहीं उत्पन्न होती है या कई लोगों को बहुत ही कम मानसिक तस्वीर उत्पन्न होती है । यदि हम 'हाथी' या 'शेर' शब्द का उच्चारण करते हैं तो कई लोगों को तो बिल्कुल ही कोई मानसिक तस्वीर नहीं होगी । किन्तु इसका यह तो अर्थ नहीं होगा कि उन्हें 'शेर' या 'हाथी' शब्द का अर्थ नहीं मालूम है या वे इन जानवरों और अन्य जानवरों

में भेद नहीं कर पाते हैं ।

यहाँ तक कि कविताओं को पढ़ने या सुनने से भी कुछ लोगों के मन में कोई भी मानसिक प्रतिमा नहीं बनती है और यदि कुछ लोगों के मन में बनती भी है तो अलग-अलग बनती है । उदहारणस्वरूप,

''आ रही हिमाचल से पुकार
प्राची पश्चिम भू नभ अपार
वीरों का कैसा हो वसंत ?''

प्रश्न यह उठता है कि इन पंक्तियों को पढ़ने से हमारे मस्तिष्क में कौन सी तस्वीर उभरती है ? क्या उन मानसिक तस्वीरों से हमें इन पंक्तियों का अर्थ समझ में आ जाएगा ? यह अवश्य है कि कविता को अच्छी तरह समझने के लिए मानसिक तस्वीर का होना अच्छा समझा जाता है । किन्तु, यह भी कम सत्य नहीं है कि उन मानसिक तस्वीरों से हमें कविता के अर्थ का पता चल जायेगा । अत: चित्रमूलक अर्थ अर्थात् शब्द के परिणाम स्वरूप जो मानसिक तस्वीरें मन में उत्पन्न होती हैं, उन्हें शब्द के अर्थ या अर्थ का अंश मानना उचित नहीं है ।

(ii) काव्यमूलक अर्थ :

कई विचारकों के अनुसार काव्यमूलक अर्थ को अर्थ या अर्थ का अंश माना जा सकता है । अत: हमें यह देखना है कि काव्यमूलक अर्थ को अर्थ का अंश मानना चाहिए या नहीं ? एक कविता की दो पंक्तियाँ लीजिए– 'मैं नहीं चाहता चिर सुख, मैं नहीं चाहता, चिर दु:ख, तथा दूसरी मुझे न अत्यधिक सुख चाहिए न ही अत्यधिक दु:ख । इन दोनों पंक्तियों का मस्तिष्क में अलग-अलग परिणाम होता है । उसी प्रकार, 'बांझ क्या जाने प्रसव की पीड़ा' अर्थात् 'जिसने दु:ख नहीं' झेला है वह क्या जाने कि दु:ख क्या होता है, इन दोनों का मस्तिष्क में अलग-अलग परिणाम होता है । अत: प्रश्न उठता है कि क्या इन दोनों के अर्थ में भी भेद है या केवल परिणाम का यह भेद है ?

यह कहना आसान है कि इनमें से प्रत्येक जोड़ों का अर्थ तो एक है किन्तु उनके परिणाम भिन्न हैं । किन्तु प्रश्न यह उठता है कि ऐसा कहना उचित होगा ? क्या यह कहना उचित नहीं होगा कि इन पंक्तियों का प्रभाव या परिणाम अलग होगा क्योंकि इनके अर्थ भिन्न हैं ?

फिर एक प्रश्न उठता है कि इनके अर्थ कैसे भिन्न है । उनकी गुणवाचकता अर्थात् मन में जो बातें सहचारी हैं वे अवश्य भिन्न होती हैं, किन्तु यदि वे अर्थ नहीं हैं तो उनके अर्थ कैसे भिन्न होंगे ? यह अवश्य सत्य है कि काव्यात्मक परिणाम नष्ट किए बिना हम'' मैं नहीं चाहता चिर सुख, मैं नहीं चाहता चिर दु:ख' का अनुवाद 'न ही मैं अत्यधिक सुख चाहता हूँ, न ही अत्यधिक दु:ख' नहीं कर सकते हैं । परन्तु, प्रश्न यह है कि इससे अर्थ में क्या अन्तर पड़ता है ? यदि दोनों स्वभावबोध और व्यक्तिबोध एक हैं ।

कुछ विचारकों ने प्राथमिक अर्थ एवं गौण अर्थ में भेद किया है । किसी शब्द का प्राथमिक अर्थ उसकी परिभाषा में निहित है, जो अर्थ शब्दकोषों में दिया जाता है वही प्राथमिक अर्थ होता है । गौण अर्थ के अन्तर्गत वे सभी बातें आती हैं जिसका संकेत पाठक या श्रोता के मन में मिलता है । इन विचारकों के अनुसार कविता में गौण अर्थ का महत्व है ।

(iii) संवेगात्मक अर्थ :

कुछ विचारकों के अनुसार कई शब्दों के संवेगात्मक अर्थ होते हैं । किसी शब्द के विषय में जो अनुकूल या प्रतिकूल भावनाओं के लक्षण लगे रहते हैं वही उस शब्द का संवेगात्मक अर्थ है । इस प्रकार, संवेगात्मक अर्थ उसे कहते हैं जो किसी शब्द के फलस्वरुप पाठकों या श्रोताओं के मन में भावनाएँ आती हैं । ये भावनाएँ उस शब्द के प्रभाव हैं जो अनुकूल या प्रतिकूल दोनों ही हो सकती हैं । अब यह प्रश्न उठता है कि संवेगात्मक अर्थ का शब्द के अर्थ के साथ क्या संबंध है ?

जिसे हम शब्द का अर्थ या परिभाषा कहते हैं उसे संज्ञानात्मक अर्थ कहते हैं तथा उस शब्द का जो श्रोताओं पर प्रभाव पड़ता है उसे संवेगात्मक अर्थ, जैसे–'बुद्धिमान' एवं 'चालाक' के संज्ञानात्मक अर्थ एक हैं किन्तु इनके संवेगात्मक

अर्थ भिन्न हैं । प्रश्न है कि क्या संवेगात्मक अर्थ को अर्थ का अंश मानना चाहिए ? इस प्रश्न का उत्तर इस बात पर निर्भर करता है कि 'अर्थ' शब्द का प्रयोग हम किस प्रकार करते हैं । यदि अर्थ के अन्तर्गत हम शब्द के प्रभाव को भी निहित कर लेते हैं तब संवेगात्मक अर्थ को अर्थ का अंश मान सकते हैं । किन्तु स्पष्टता के उद्देश्य से संवेगात्मक अर्थ को अर्थ का अंश नहीं माना जा सकता है ।

एक बात तो बिल्कुल स्पष्ट है कि यद्यपि शब्द के प्रभाव भिन्न व्यक्तियों पर भिन्न-भिन्न पड़ते हैं किन्तु इससे उस शब्द का अर्थ तो नहीं बदलता है । जैसे–'समाजवाद' शब्द दो भिन्न राजनीतिक दलों में भिन्न प्रकार का प्रभाव जागृत करता है । पर इस शब्द का अर्थ तो एक ही है । अत: ऐसे शब्द भी हैं जिसके उच्चारण से जैसी भी भावनाएँ जागृत हों पर उनका अर्थ उससे बिल्कुल स्वतंत्र होता है ।

20.3.2 प्रभावी परिभाषा :

संवेगात्मक अर्थ के संप्रत्यय पर आधारित एक दूसरे प्रकार की परिभाषा की चर्चा हुई है जिसे प्रभावी परिभाषा कहते हैं । जब कोई शब्द या वाक्यांश अनुकूल संवेगात्मक अर्थ प्राप्त कर लेता है, तब लोग उसके प्रयोग के लिए चाहते हैं कि उसका वहीं अर्थ जो कि साधारण अर्थ से भिन्न हैं, संज्ञात्मक अर्थ की भाँति प्रयुक्त हो । उदाहरणस्वरूप 'सुसंस्कृत' शब्द का संज्ञात्मक अर्थ है 'जो कलाओं से परिचित हो' यदि इस अर्थ का अनुकूल प्रभाव हुआ और धीरे-धीरे 'सुसंस्कृत' शब्द अपने संज्ञात्मक अर्थ के अतिरिक्त यह संवेगात्मक अर्थ भी प्राप्त कर लेता है । यदि ऐसा होता है तो कोशिश की जाती है कि इस संवेगात्मक अर्थ के लिए 'सुसंस्कृत' शब्द को फिर से परिभाषित किया जाए । यदि किसी ने कहा कि, ''सच्ची संस्कृति कलाओं से परिचय नहीं वरन् विज्ञान और तकनीकी से परिचय है, तो यह परिभाषा प्रभावी परिभाषा होगी । राजनीतिशास्त्र धर्मशास्त्र, नीतिशास्त्र और कलाओं में अनेक शब्दों की प्रवर्त्तक परिभाषाएँ दी जाती हैं ।

20.4 सारांश

उपर्युक्त विवेचना के आधार पर सारांशत: कहा जा सकता है कि गुणवाचकता के द्वारा शब्दों की परिभाषा दी जा सकती है । किसी शब्द के प्रयोग के द्वारा किसी व्यक्ति के मन में जो बातें आती हैं उन्हें ही उस शब्द की गुणवाचकता कहते हैं । गुणवाचकता के द्वारा उस शब्द के आवश्यक और सारे गुण को व्यक्त करते हैं । कुछ विचारकों का मानना है कि किसी शब्द की गुणवाचकता का उसके अर्थ के साथ संबंध है, चित्रमूलक अर्थ, काव्यमूलक अर्थ तथा संवेगात्मक अर्थ किसी शब्द के ऐसे अर्थ हैं जिसका संबंध गुणवाचकता के साथ है । अत: किसी पद का अर्थ तभी स्पष्ट होता है जब उसका गुणवाचकता बता दी जाए ।

20.5 पाठ में प्रयुक्त शब्द

गुणवाचकता
विवेकशीलता
पशुता
व्यक्ति बोध
चित्रमूलक अर्थ
काव्यमूलक अर्थ
संवेगात्मक अर्थ
प्रभावी अर्थ

संप्रत्यय तथा इनके निर्माण

पाठ संरचना

21.1 उद्देश्य
21.2 विषय-प्रवेश
21.3 मुख्य विषय की व्याख्या
21.3.1 संप्रत्यय कहाँ से प्राप्त होते हैं ?
21.3.2 अनुभव संप्रत्यय के स्रोत हैं
21.4 सारांश
21.5 पाठ में प्रयुक्त शब्द
21.6 अभ्यास के लिए प्रश्न
21.6.1 वस्तुनिष्ठ प्रश्न
21.6.2 लघु उत्तरीय प्रश्न
21.6.3 दीर्घ उत्तरीय प्रश्न
21.7 प्रस्तावित पाठ

21.1 उद्देश्य

प्रस्तुत पाठ का उद्देश्य संप्रत्यय तथा इनके निर्माण के संबंध में जो विचार हैं उससे परिचय करवाना है । संप्रत्यय की चर्चा का ज्ञानमीमांसा में विशेष महत्त्व है । किसी भी शब्द के अर्थ को जानने के लिए हमें उसके संप्रत्यय का होना आवश्यक है । अनुभववादियों का विचार है कि संप्रत्यय का निर्माण इन्द्रिय-अनुभव से होता है । जबकि बुद्धिवादियों का विचार है कि संप्रत्यय जन्मजात होते हैं ।

21.2 विषय-प्रवेश

ज्ञानमीमांसा के अन्तर्गत संप्रत्यय का विशेष स्थान एवं महत्व है । मानव ज्ञान के स्रोत, उसका स्वरूप या उसके विभिन्न प्रकारों के परीक्षण के पूर्व हमें संप्रत्ययों का परीक्षण करना आवश्यक है । इनके पीछे प्रमुख कारण यह है कि ज्ञान तर्कवाक्यों में व्यक्त होता है । उदाहरणस्वरूप, राम मरणशील है, कलम लाल है । इन तर्कवाक्यों को समझने के लिए हमें उन संप्रत्ययों को समझना आवश्यक है, जिनका प्रयोग तर्कवाक्यों में किया गया है । 'राम मरणशील है' इस तर्कवाक्य को समझने के लिए हमें 'राम' तथा 'मरणशील' दोनों शब्दों के अर्थ को जानने के लिए हमें उन संप्रत्ययों का ज्ञान आवश्यक है । अर्थात् किसी भी शब्द के अर्थ को जानने के लिए हमें उनके संप्रत्यय का ज्ञान होना आवश्यक है । संप्रत्यय के संबंध

में बुद्धिवादियों एवं अनुभववादियों के विचार अलग-अलग हैं । बुद्धिवादी संप्रत्यय को जन्मजात मानते हैं जबकि अनुभववादी संप्रत्यय को अर्जित मानते हैं ।

21.3 मुख्य-विषय की व्याख्या

21.3.1 संप्रत्यय कहाँ से प्राप्त होते हैं ?

कुछ विचारकों के अनुसार हमारे संप्रत्यय जन्मजात होते हैं अर्थात् जन्म के पूर्व से ही संप्रत्यय मन में रहते हैं । बुद्धि विश्लेषित कर ज्ञान का रूप देता है । किन्तु हॉस्पर्स का कहना है कि यदि संप्रत्यय जन्मजात हैं तो हमें उनका ज्ञान अनुभव से पूर्व होना चाहिए । यदि लाल रंग का संप्रत्यय जन्मजात है तो हमें लाल वस्तुओं को बिना लाल रंग देखे ही पहचान लेना चाहिए । उसी प्रकार, एक अंधे व्यक्ति को भी लाल या अन्य रंगों का संप्रत्यय रहना चाहिए । किन्तु ऐसा तो संभव नहीं होता है ।

कहा जाता है कि कुछ संप्रत्यय जैसे–कारणता का संप्रत्यय या ईश्वर का संप्रत्यय जन्मजात होता है । किन्तु हॉस्पर्स का कहना है कि 'कारणता' का संप्रत्यय जन्मजात होता तो हमें 'कारण' शब्द के अर्थ का ज्ञान होता । किन्तु ऐसा तो होता नहीं है । उसी प्रकार 'ईश्वर' के सम्प्रत्यय के विषय में भी कहा जा सकता है कि यह भी जन्मजात नहीं होता है । यदि ईश्वर का संप्रत्यय जन्मजात है तो इसका सम्प्रत्यय सभी व्यक्तियों में एक ही प्रकार का होना चाहिए, लेकिन ऐसा देखने को नहीं मिलता है । यह एक अलग ही विषय है जिसकी चर्चा अलग से की जाएगी । यहाँ हम केवल यह कहेंगे कि जन्मजात प्रत्ययों का सिद्धान्त अब मान्य नहीं है । आधुनिक मनोविज्ञान ने इसका खंडन किया है । वस्तुत: सभी संप्रत्यय किसी न किसी रूप में अनुभव पर आधारित हैं ।

21.3.2 अनुभव संप्रत्ययों का स्रोत हैं :

सभी संप्रत्यय का स्रोत अनुभव है । यह विचार अनुभववादी विचारक लॉक, बर्कले एवं ह्यूम का है । इन अनुभववादियों ने संप्रत्यय के स्थान पर 'प्रत्यय' शब्द का प्रयोग किया है । उनलोगों के अनुसार सभी संप्रत्यय या प्रत्यय अनुभव से प्राप्त होते हैं । अनुभव के दो स्रोत हैं–बाह्य इन्द्रियाँ और आन्तरिक इन्द्रियाँ ।

हमारे कुछ प्रत्यय हमारी बाह्य इन्द्रियों जैसे दृष्टि, श्रवण, स्पर्श, घ्राण तथा स्वाद इन्द्रियों से प्राप्त होता है । इनके द्वारा हमें बाह्य भौतिक संसार की वस्तुओं की संवेदनाओं की प्राप्ति होती है । हमारे कुछ अन्य प्रत्यय आन्तरिक इन्द्रियों के द्वारा प्राप्त होता है । इनसे हमें सुख-दु:ख, प्रेम-घृणा विचार आदि संवेदनाओं का अनुभव होता है । इस प्रकार, हमारे सारे प्रत्यय बाह्य अथवा आन्तरिक इन्द्रियों के द्वारा प्राप्त होते हैं ।

सत्रहवीं तथा अठाहरवीं शताब्दी तक सभी प्रकार के अनुभव के लिए प्रत्यय (Idea) शब्द का प्रयोग किया जाता था किन्तु ह्यूम ने अनुभव में भेद किया संस्कारों (Impressions) तथा प्रत्ययों (Ideas) में ।

ह्यूम के अनुसार जब हम किसी वस्तु को देखते हैं तब जो पहली स्पष्ट छाप हमारे मन में आती है, उसे संस्कार कहते हैं । उदाहरणस्वरूप-जब हम एक सुन्दर लाल गुलाब देखते हैं, तो जो प्रथम लाली एवं सुन्दरता की छाप हमारे मन में आती है उसे संस्कार कहते हैं । प्रत्यय संस्कारों की क्षीण या नकल है । बाद में जब हम सुन्दर लाल गुलाब की स्मरण करते हैं, तो हमारे मन में लाली और सुन्दरता की जो प्रतिमा आती है, उससे प्रत्यय कहते हैं । इस प्रकार, जब किसी पदार्थ का बाह्य इन्द्रियों से सम्पर्क होता है तो उसे संस्कार उत्पन्न होते हैं और जब उसकी कल्पना करते हैं तो प्रत्यय । अत: ह्यूम के अनुसार प्रत्यय बिना संस्कारों के नहीं हो सकते हैं । जब तक हमें लाल गुलाब का संस्कार नहीं होगा तब तक उसका प्रत्यय नहीं हो सकता है । यदि हमने किसी लाल पदार्थ को नहीं देखा है तो हमें लाल रंग का संस्कार भी नहीं होगा, और न लाल रंग का प्रत्यय ही होगा । एक अंधे व्यक्ति को लाल रंग का प्रत्यय नहीं हो सकता ।

एक आक्षेप किया जाता है कि क्या हमें उन वस्तुओं का प्रत्यय कभी नहीं हो सकता है जिनका हमें संस्कार नहीं होता है ? क्या हमें 'काला गुलाब' या 'सोने का पर्वत' का कभी संस्कार नहीं हुआ है तो हमें उनके प्रत्यय भी नहीं होंगे ? क्या हम इनकी कल्पना नहीं कर सकते हैं ? यह सत्य है कि हमने इनकी तस्वीरें देखी हैं या कथाओं में इनके विषय में पढ़ा है अत: हम इनकी कल्पना कर सकते हैं । परन्तु जिस व्यक्ति ने पहले-पहल उन तस्वीरों को बनाया होगा या कथाओं को पढ़ा होगा उसके मस्तिस्क में तो बिना तस्वीरों के द्वारा प्राप्त संवेदनाओं एवं संस्कारों के ही वैसे प्रत्यय होंगे । अत: हम ऐसी वस्तुओं की भी कल्पना कर सकते हैं जिनका हमने इन्द्रिय अनुभव नहीं किया है ।

इन कठिनाइयों से बचने के लिए लॉक ने सरल प्रत्ययों और जटिल प्रत्ययों में भेद किया है । सरल प्रत्यय इन्द्रिय-अनुभव से प्राप्त होता है जैसे प्रत्यक्ष से हमें लाल, काला का सरल प्रत्यय प्राप्त होता है । उसी प्रकार 'आन्तरिक निरीक्षण' के द्वारा हमें सुख-दु:ख के सरल प्रत्यय प्राप्त होते हैं ।

सरल प्रत्यय को जोड़ने से मिश्रित प्रत्ययों का निर्माण होता है । जैसे-'सोने का पर्वत' या 'काला-गुलाब' का प्रत्यय मिश्रित प्रत्यय है । क्योंकि इनका निर्माण 'सोने' तथा 'पर्वत' के प्रत्यय को मिलाकर हुआ । उसी प्रकार, हमें ईश्वर का भी प्रत्यय प्राप्त हो सकता है । शक्ति, ज्ञान, दया जैसे मनुष्य के गुण-धर्मों को बढ़ा-चढ़ाकर ईश्वर के प्रत्यय का निर्माण किया जा सकता है ।

सरल या मिश्रित प्रत्ययों का वैसा ही संबंध होता है जैसा कि परमाणुओं एवं अणु (Atomes and Molecules) के बीच होता है । बिना परमाणुओं के अणुओं का अस्तित्व नहीं रहेगा । उसी प्रकार बिना सरल प्रत्यय के मिश्रित प्रत्यय नहीं बन सकते हैं । यदि हमें सरल प्रत्यय मिल जाते हैं तो हम उन्हें विभिन्न प्रकार से मिलाकर ऐसी वस्तुओं के प्रत्ययों का निर्माण कर सकते हैं जिनका अस्तित्व न ही पृथ्वी पर और न ही कहीं अन्य स्थान पर हो ।

इस प्रकार, विचार के सारे तत्त्व मनुष्य को अनुभव से प्राप्त होते हैं । मानव मस्तिष्क की शक्ति अनुभव तक ही सीमित है क्योंकि मनुष्य के सभी प्रत्ययों का एक मात्र साधन अनुभव है ।

अनुभववादियों के विचार के विरुद्ध आक्षेप निम्न उठाये गये हैं । पहला आक्षेप, यद्यपि अनुभववादियों ने सरल एवं मिश्रित प्रत्ययों में भेद किया है, फिर भी उन्होंने स्पष्ट रूप से नहीं बताया है कि कौन से सरल प्रत्यय हैं, तथा कौन से मिश्रित हैं । सामान्य रूप से कहा गया है कि सरल प्रत्यय वे हैं जो संवेदनात्मक गुण-धर्म का ज्ञान देते हैं जैसे--काला, पीला, मीठा, दु:ख, सुख आदि जिसे रसेल तथा मूर इन्द्रिय-प्रदत्त कहते हैं । ह्यूम के इस विचार से यह स्पष्ट नहीं हो पाता है कि कौन से प्रत्ययों का विश्लेषण हो सकता है और किसका नहीं । किन्तु हॉस्पर्स की यह आपत्ति उचित नहीं है। क्योंकि सरल प्रत्ययों का विश्लेषण नहीं हो सकता है ।

दूसरी समस्या यह है कि अनुभववादियों के अनुसार सरल प्रत्यय हैं जैसे लाल रंग के प्रत्यय । यहाँ आपत्ति यह उठायी जाती है कि जिसे सामान्य लाल या सरल प्रत्यय कहा जाएगा, वह लाल की कौन सी मात्रा होगी ? यदि उस मात्रा को 'क' कहा जाए और मुझे उसे देखकर जो सरल प्रत्यय प्राप्त हुआ हो और मुझे लाल रंग की दूसरी मात्रा 'ख' को देखकर सामान्य लाल रंग का प्रत्यय हुआ हो तब मेरे लिए 'क' मिश्रित प्रत्यय है क्योंकि मैंने अनुभव के द्वारा उसे प्राप्त किया है । इस प्रकार, एक ही प्रत्यय मेरे लिए सरल है तो दूसरे के लिए मिश्रित है । यह विरोधात्मक है ।

21.4 सारांश

सारांशत: कहा जा सकता है कि अनुभववादियों ने सरल एवं मिश्रित प्रत्ययों में जो भेद बतलाया है उसमें अवश्य ही कठिनाइयाँ हैं किन्तु यह तो स्पष्ट है कि प्रत्यय बिना संस्कारों के संभव नहीं हैं । एक अंधे-व्यक्ति को रंग का प्रत्यय नहीं हो सकता है । इस प्रकार, प्रत्यय या संप्रत्यय के निर्माण के लिये संस्कारों का होना आवश्यक है । अत: अनुभववादियों के अनुसार संप्रत्यय का निर्माण इन्द्रिय-अनुभव से संभव है ।

21.5 पाठ में प्रयुक्त शब्द

संप्रत्यय

ज्ञानमीमांसा

जन्मजात

अनुभव

बुद्धिवाद

प्रत्यक्ष

बाध्य इन्द्रिय

आन्तरिक इन्द्रिय

संस्कार

सरल एवं जटिल प्रत्यय

इन्द्रिय प्रदत्त

21.6 अभ्यास के लिए प्रश्न

21.6.1 वस्तुनिष्ठ प्रश्न

(i) हॉस्पर्स के अनुसार संप्रत्यय का स्रोत है–

(अ) जन्मजात प्रत्यय

(ब) अनुभव

(स) ऊपरोक्त दोनों

(द) ऊपरोक्त में से कोई नहीं

उत्तर : (ब)

(ii) अनुभववादियों के अनुसार हमारे सारे प्रत्यय प्राप्त होते हैं–

(अ) बाह्य इन्द्रियों के द्वारा

(ब) आन्तरिक इन्द्रियों के द्वारा

(स) बाह्य एवं आन्तरिक इन्द्रियों के द्वारा

(द) अन्तः प्रज्ञा के द्वारा

उत्तर : (स)

21.6.2 लघु उत्तरीय प्रश्न

(i) संप्रत्य कहाँ से प्राप्त होते हैं ? स्पष्ट करें ।

(ii) संप्रत्यय एवं संस्कार के बीच क्या संबंध है ।

(iii) सरल एवं जटिल प्रत्ययों को स्पष्ट करें ।

21.6.3 दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

(i) हॉस्पर्स के विचार के आलोक में संप्रत्यय तथा इनकी रचना के संबंध में जो विचार हैं उसे स्पष्ट करें।

(ii) क्या सभी संप्रत्यय अनुभव पर आधारित हैं ? स्पष्ट करें ।

21.7 प्रस्तावित पाठ

(i) जॉन हॉस्पर्स : दार्शनिक विश्लेषण परिचय

(ii) गोवर्द्धन भट्ट : दार्शनिक विश्लेषण परिचय

✠✠✠

22.3 मुख्य विषय की व्याख्या

22.3.1 संप्रत्यय क्या है ?

यह स्पष्ट है कि संप्रत्यय प्रतिमाओं से भिन्न हैं । जब तक हमें इन्द्रिय अनुभव नहीं होगा तब तक हमे प्रतिमाएँ नहीं हो सकती हैं । किन्तु बिना इन्द्रिय-अनुभव के हमें संप्रत्यय हो सकता है । हम जानते हैं कि ज्ञान की अभिव्यक्ति प्रतिज्ञप्तियों द्वारा होता है । जैसे–'मैं जानता हूँ कि मैं इस समय किताब पढ़ रहा हूँ, 'मैं लिख रहा हूँ' इत्यादि प्रतिज्ञप्ति तर्कवाक्य है । किन्तु किसी प्रतिज्ञप्ति को समझने के पहले सम्प्रत्यय का होना आवश्यक है । 'वर्फ पिघलती है' इस प्रतिज्ञप्ति के अर्थ समझने के लिए 'वर्फ' और 'पिघलना' शब्दों का अर्थ जान लेना आवश्यक है । परन्तु 'वर्फ' तथा 'पिघलना' शब्दों के अर्थ को जानने के लिए इनके संप्रत्यय का होना आवश्यक है । अत: स्पष्ट है कि किसी भी शब्द का अर्थ तभी जाना जा सकता है जब उसका संप्रत्यय हो ।

कुछ लोगों के अनुसार यदि हमें किसी शब्द 'क' की परिभाषा का ज्ञान हुआ तो हमें 'क' का संप्रत्यय हुआ । किन्तु यह विचार अतिसंकीर्ण विचार है । हमें अपने दैनिक जीवन में प्रयोग होने वाले अनेक शब्दों के अर्थ का ज्ञान होता है जैसे–कलम, घर, पंखा, पहाड़ आदि । किन्तु हम इन सबको परिभाषित तो नहीं कर सकते हैं । इसका यह अर्थ हुआ कि हमें उनका संप्रत्यय तो है, भले ही हमें उनकी परिभाषा का ज्ञान नहीं हो । अत: परिभाषित करने की योग्यता संप्रत्यय होने की शर्त्त नहीं कही जा सकती है । ऐसे भी अनेक शब्द हैं जैसे–सुख-दु:ख, लाल, मीठा, खट्टा आदि जिन्हें शब्दों में परिभाषित नहीं किया जा सकता है । किन्तु इससे यह तो निष्कर्ष नहीं निकलता है कि हमें इन शब्दों का संप्रत्यय नहीं हो सकता है । अत: शब्दों की परिभाषा जानने का अर्थ उनका संप्रत्यय होना नहीं है ।

फिर यह भी कहा गया है कि हमें 'क' का संप्रत्यय तब होगा जब हम 'क' का सही प्रयोग कर सकते हैं । उदाहरणस्वरूप, यदि हम 'लाल', 'कागज', 'कलम', शब्दों का हमेशा सही रूप में उन पदार्थों के लिए प्रयोग करते हैं तो हमें उन शब्दों का (लाल, कागज, कलम) संप्रत्यय हुआ । इस मान्यता के अनुसार संप्रत्यय होने के लिए शब्दों को परिभाषित करने की आवश्यकता नहीं है बल्कि उन्हें सही रूप में प्रयोग करना चाहिए । यदि 'कलम' के लिए हम बराबर 'कलम' शब्द का ही प्रयोग करते हैं कभी उसे कागज नहीं कहते हैं तो हमें कलम का संप्रत्यय है ।

किन्तु इस मत के साथ भी कठिनाइयाँ हैं । इस विचार के अनुसार संप्रत्यय होने के लिए हमें शब्द के साथ पहले से ही परिचित होना चाहिए । यह मापदंड बहुत ही संकीर्ण है । यद्यपि अधिकतर स्थितियों में हम शब्दों से पूर्व परिचित रहते हैं किन्तु कुछ स्थितियों में ऐसा नहीं होता है । कई बार हम पाते हैं कि हमारे मन में कुछ विचार ऐसे हैं जिनके लिए कोई शब्द नहीं होता है । अत: हम या तो नए शब्दों को बनाते हैं या पुराने शब्दों को नये अर्थ में प्रयोग करते हैं । अत: शब्द के अस्तित्व के पूर्व ही हमें संप्रत्यय का ज्ञान हो जाता है ।

यदि संप्रत्यय के लिए शब्दों से परिचित होना आवश्यक नहीं है, तो फिर यह कहा गया कि हमें 'क' का संप्रत्यय तब होगा जब हम 'क' का 'ख' 'ग' 'घ' आदि से विभेदीकरण कर सकते हैं । जैसे, एक छोटा बालक साइकिल को मोटर या अन्य गाड़ियों से भेद करता है । भले ही उसे साइकिल शब्द की परिभाषा का ज्ञान न हो । इसलिए विभेदीकरण का अर्थ है संप्रत्यय का होना । उस बालक को साइकिल शब्द की परिभाषा का ज्ञान नहीं है । फिर भी उसमें साइकिल का संप्रत्यय है । उस बालक को साइकिल का सम्प्रत्यय रहने से अन्य पदार्थों से उसका भेद का ज्ञान हो जाता है । इसलिए यह कहा जा सकता है कि संप्रत्यय का अर्थ विभेदीकरण का ज्ञान नहीं । बच्चे में साइकिल का संप्रत्यय है और वह निदर्शनात्मक परिभाषा के द्वारा शब्द को वस्तु के साथ संबंधित कर लेता है ।

ऊपर वर्णित विचारों से यह स्पष्ट नहीं हो पाता है कि संप्रत्यय है क्या ? ऊपर वर्णित आपत्तियों का उत्तर देते हुए हॉस्पर्स कहते हैं कि किसी पदार्थ के संप्रत्यय रहने का एक ही अर्थ है–मस्तिष्क में किसी कसौटी का होना । इसका अर्थ है किसी प्रकार की मानसिक अन्तर्वस्तु (Mental Content) जो शब्द की परिभाषा या प्रयोग से तथा एक पदार्थ या दूसरे पदार्थ में भेद करने की योग्यता से स्वतन्त्र है । हॉस्पर्स के शब्दों में, "to have concept is simply to have some

criterion in mind." (An Introduction to Philosophical analysis, P-109) किन्तु, यह कहना आसान नहीं है कि वह मानसिक कसौटी कैसा है ? या उसका ज्ञान कैसे होगा ? किसी को कोई संप्रत्यय है या नहीं इसके जानने का एक साधन है कि उसे उस पदार्थ का अन्य पदार्थों से भेद करने की क्षमता है या नहीं ।

प्रश्न उठता है क्या वैसे विषय का भी संप्रत्यय हो सकता है, जिसका इस संसार में अस्तित्व नहीं है ? इसका उत्तर भावात्मक होगा । हमें ऐसे पदार्थ का संप्रत्यय हो सकता है जो आधा नर हो तथा आधा शरीर सिंह का हो । अगर इस प्रकार के पदार्थ का अस्तित्व हो तो उसको पहचान सकते हैं, परन्तु अगर उसका अस्तित्व नहीं हो फिर भी उसका संप्रत्यय हो सकता है ।

22.3.2 संप्रत्यय और प्रतिमा में भेद :

संप्रत्यय की व्याख्या के उपरांत अब यह प्रश्न उठता है कि क्या संप्रत्यय प्रतिमा है ? या संप्रत्यय और प्रतिमा में क्या भेद है ? प्रतिमा का अर्थ है–मानसिक तस्वीर । उदाहरणस्वरूप, किसी भी व्यक्ति को पाराबैंगनी प्रतिमाएँ नहीं हो सकती हैं, क्योंकि मनुष्य की आँखों में उस रंग की संवेदनशीलता नहीं होती हैं । चूँकि पाराबैगनी के संस्कार नहीं होते हैं। अत: पाराबैगनी प्रतिमाएँ भी नहीं होती हैं । किन्तु हमें पाराबैगनी संप्रत्यय हो सकता है क्योंकि भौतिकशास्त्री पराबैंगनी प्रकाश की चर्चा करते हैं, उसे पहचान सकते हैं । इसका अर्थ यह है कि उन्हें पाराबैंगनी प्रकाश का संप्रत्यय है ।

इन दोनों में अन्तर स्पष्ट करने के लिए दूसरा उदाहरण भी दिया जा सकता है–जन्म से अंधा एक आदमी भौतिक विज्ञानी बन सकता है और रंग भौतिकी में विशेषज्ञता प्राप्त कर सकता है । ऐसे व्यक्ति ने रंग को कभी देखा नहीं होगा इसलिए रंगों की प्रतिमा उनके मन में नहीं होंगी, परन्तु रंग के विषय में संप्रत्यय या जानकारी हमलोगों से अधिक हो सकती है । इससे स्पष्ट होता है, कि रंग की प्रतिमाओं के नहीं रहने पर भी उसे रंग का संप्रत्यय हो सकता है । इसलिए, ह्यूम का भी कहना है कि बिना संस्कारों के प्रतिमाएँ नहीं होतीं ।

अत: संप्रत्यय और प्रतिमा में मुख्य अंतर यह है कि बिना इन्द्रिय-अनुभव के प्रतिमाएँ नहीं हो सकतीं । पर बिना इन्द्रिय-अनुभव के संप्रत्यय हो सकते हैं । कहने का तात्पर्य यह है कि अगर कोई यह मानता है कि बिना लाल रंग के इन्द्रिय अनुभव के लाल रंग की प्रतिमा नहीं हो सकती तो इससे यह निस्कर्ष नहीं निकाला जा सकता है कि बिना लाल रंग के इन्द्रिय अनुभव के लाल रंग का संप्रत्यय नहीं हो सकता है ।

22.4 सारांश

उपर्युक्त विवेचना के आधार पर यह सारांशत: कहा जा सकता है कि हॉस्पर्स के अनुसार संप्रत्यय का अर्थ मस्तिष्क में किसी कसौटी का होना है । लेकिन इस कसौटी का स्वरूप क्या होगा यह हॉस्पर्स नहीं स्पष्ट कर पाते । प्रतिमा के लिए इन्द्रिय-अनुभव का होना आवश्यक है । प्रतिमा और संप्रत्यय में अन्तर यह है कि जिनकी प्रतिमा नहीं हो सकती उसका भी संप्रत्यय हो सकता है ।

22.5 पाठ में प्रयुक्त शब्द

प्रतिमा
संप्रत्यय
मानसिक तस्वीर
पाराबैंगनी
इन्द्रिय अनुभव

परिभाषा

विभेदीकरण

मानसिक अन्तर्वस्तु

22.6 अभ्यास के लिए प्रश्न

22.6.1 वस्तुनिष्ठ प्रश्न

(i) प्रतिमा का अर्थ है–

(अ) मानसिक तस्वीर

(ब) मानसिक अन्तर्वस्तु

(स) मस्तिष्क में किसी कसौटी का होना

(द) उपर्युक्त में कोई नहीं

उत्तर : (अ)

(ii) हॉस्पर्स के अनुसार संप्रत्यय का अर्थ है–

(अ) मानसिक तस्वीर

(ब) मानसिक अन्तर्वस्तु

(स) इन्द्रिय-अनुभव का होना

(द) उपर्युक्त में से कोई नहीं

उत्तर : (ब)

22.6.2 लघु उत्तरीय प्रश्न

(i) संप्रत्यय से आप क्या समझते हैं ? स्पष्ट करें ।

(ii) क्या एक अंधे व्यक्ति को संप्रत्यय हो सकता है ? स्पष्ट करें ।

22.6.3 दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

(i) क्या संप्रत्यय प्रतिमा है ? विवेचना करें ।

(i) संप्रत्यय क्या है ? संप्रत्यय और प्रतिमा के बीच भेद करें ।

22.7 प्रस्तावित पाठ

(i) जॉन हॉस्पर्स : दार्शनिक विश्लेषण परिचय

(ii) गोवर्द्धन भट्ट : दार्शनिक विश्लेषण परिचय

✠✠✠

संप्रत्यय तथा अनुभव

पाठ संरचना

23.1 उद्देश्य
23.2 विषय-प्रवेश
23.3 मुख्य विषय की व्याख्या
23.3.1 क्या संप्रत्यय अनुभव से प्राप्त होते हैं ?
23.3.2 गणित एवं भाषागत नियमों के संप्रत्यय इन्द्रिय अनुभव नहीं हैं
23.4 सारांश
23.5 पाठ में प्रयुक्त शब्द
23.6 अभ्यास के लिए प्रश्न
23.6.1 वस्तुनिष्ठ प्रश्न
23.6.2 लघु उत्तरीय प्रश्न
23.6.3 दीर्घ उत्तरीय प्रश्न
23.7 प्रस्तावित पाठ

23.1 उद्देश्य

प्रस्तुत पाठ का उद्देश्य संप्रत्यय तथा अनुभव के बीच संबंध से परिचित होना है । हमने पूर्व पाठ में देखा कि अनुभववादियों के अनुसार सभी संप्रत्यय अनुभव पर आधारित हैं । अब हमें इसका परीक्षण करना है कि क्या सभी संप्रत्यय अनुभव पर आधारित हैं ?

23.2 विषय-प्रवेश

यह स्पष्ट है कि बुद्धिवादी विचारक स्वीकार करते हैं कि संप्रत्यय जन्मजात होते हैं जबकि अनुभववादियों के अनुसार सभी संप्रत्यय अनुभव पर आधारित हैं । हॉस्पर्स का कहना है कि यदि संप्रत्यय जन्मजात हैं तो हमें उनका ज्ञान अनुभव से पूर्व होना चाहिए । यदि लाल रंग का संप्रत्यय जन्मजात हैं तो हम लाल वस्तुओं के बिना लाल रंग देखे ही पहचान लेना चाहिए । उसी प्रकार, एक अंधेव्यक्ति को भी लाल या अन्य रंगों का संप्रत्यय रहना चाहिए । किन्तु ऐसा तो संभव नहीं होता है । अनुभववादियों के अनुसार संप्रत्यय का निर्माण इन्द्रिय-अनुभव से होत है, जिससे सरल प्रत्यय या संस्कार मिलते हैं । अब हमें इसका परीक्षण करना है कि क्या सभी संप्रत्यय अनुभव पर आधारित हैं ? अनुभववादी दार्शनिकों के अनुसार तो सभी संप्रत्यय अनुभव पर आधारित हैं अर्थात् जहाँ तक सरल प्रत्ययों का संबंध है, बिना 'क' के

पूर्व अनुभव के 'क' का संप्रत्यय नहीं हो सकता है और जहाँ तक मिश्रित प्रत्ययों का संबंध है, बिना सरल प्रत्ययों के पूर्व अनुभव के मिश्रित प्रत्ययों का जो सरल प्रत्ययों से बनते हैं, संप्रत्यय नहीं हो सकता है । अत: एक ही विचार उचित प्रतीत होता है कि संप्रत्यय अनुभव पर आधारित है क्योंकि न तो वे जन्मजात हैं, न ही पूर्वजन्म के संस्कार की स्मृति से प्राप्त किये जाते हैं ।

23.3 मुख्य विषय की व्याख्या

23.3.1 क्या संप्रत्यय अनुभव से प्राप्त होते हैं ?

जहाँ तक संबंध गुण-धर्मों का संबंध है वहाँ यह बताना आसान है कि संप्रत्यय कैसे प्राप्त हुए ? उदाहरणस्वरूप, लाली का संप्रत्यय लें । बचपन में ही हमने कई लाल वस्तुएँ देखीं । हम उन लाल वस्तुओं में जो सामान्य गुण-धर्म 'लाली' है, उसे पहचानने लगते हैं । इस प्रकार अमूर्त्तकरण के द्वारा हमें लाली का या उजलापन का संप्रत्यय बनता है ।

परन्तु यहाँ स्वभावत: प्रश्न उठता है कि अनुभव के द्वारा हमें ईमानदारी, स्वतंत्रता, समानता, दासता, या दो-चार का संप्रत्यय कैसे प्राप्त होगा ? यदि हम स्वतंत्रता का विचार करते हैं तो हम 'राज्य की स्वतंत्रता' की कल्पना करते हैं । यदि हम दासता का विचार करते हैं तो हम अफ्रीका में कोड़े खाने वालों दासों की कल्पना करते हैं अथवा अफ्रीका के दासों की प्रतिमा हमारे मन में आती है । किन्तु यह प्रतिमाएँ उन शब्दों के अर्थ नहीं हैं ।

'राज्य की स्वतंत्रता' की प्रतिमा स्वतंत्रता का अर्थ नहीं है । न ही क्रोड़े खाते हुए अफ्रीका के दास 'दासता' का अर्थ है । ये स्वतंत्रता या दासता का दृष्टांत हो सकते हैं किन्तु इनके अर्थ नहीं, क्योंकि यदि मेरे मन में ये प्रतिमाएँ आती हैं तो किसी अन्य व्यक्ति के मन में दूसरी प्रतिमा होगी या कुछ लोगों के मन में बिल्कुल ही कोई प्रतिमा नहीं होगी । अत: जिस प्रकार 'लाल' या 'पीला' की प्रतिमा हो सकती है, उसी प्रकार स्वतंत्रता या दासता की प्रतिमा नहीं हो सकती है । ये अमूर्त्त संप्रत्यय नहीं हो सकती हैं । हम सभी को स्वतंत्रता, ईमानदारी, समता, दासता का संप्रत्यय है । यद्यपि हम सभी के मन में अलग-अलग प्रतिमाएँ होती हैं या कोई भी प्रतिमा नहीं होती है ।

किन्तु, इसका यह अर्थ नहीं है कि यदि हमें कभी इन्द्रिय-अनुभव नहीं हो तो हमें इनका संप्रत्यय हो सकता है । किसी न किसी प्रकार से संप्रत्यय अनुभव पर आश्रित है, पर यह कहना कठिन है कि कैसे ? यदि हम केवल गुलामी में रहते तथा कभी किसी को स्वतंत्र रूप से अपने विचारों को व्यक्त करते हुए नहीं सुनते तो शायद ही हमें 'स्वतंत्रता' का संप्रत्यय होता । हालांकि किसी भी स्थिति में यह कहना कठिन है कि किसी विशेष इन्द्रिय-अनुभव के आधार पर हमें यह संप्रत्यय प्राप्त हुआ है । संप्रत्यय तथा इन्द्रिय-अनुभव में कौन सा संबंध है, इसका किसी ने स्पष्ट चित्रण नहीं किया है ।

23.3.2 गणित एवं भाषागत नियमों के संप्रत्यय इन्द्रिय अनुभव नहीं :

यदि अनुभव का अर्थ इन्द्रिय अनुभव है तो सभी संप्रत्यय अनुभव पर आधारित नहीं हैं । गणित के संप्रत्ययों के संबंध में यह कहा जा सकता है कि गणित का संबंध वस्तुओं के परिमाणात्मक पक्ष से हैं अर्थात गणित का संबंध परिमाण संबंधी संप्रत्ययों से है--एक, दो, तीन, चार आदि । प्रश्न यह है कि ऐसे संप्रत्यय कहाँ से प्राप्त होते हैं ? हम दो और तीन पदार्थों में भेद करते हैं, किन्तु प्रश्न यह है कि हमें दो और तीन के प्रत्यय कहाँ से मिलते हैं ? ह्यूम के अनुसार हमें ये संप्रत्यय अनुभव से मिलते हैं । कहा जाता है कि ये सम्प्रत्यय हमें अमूर्त्तकरण के द्वारा प्राप्त होते हैं । हमें चार सेवों का, चार आमों का या चार कलमों का इन्द्रिय अनुभव होता है और हम उनमें जो 'चारपन' सामान्य है उसको चार सेवों, चार आमों, चार कलमों से मन में निकाल लेते हैं । इस प्रकार, हमें चार-पन, तीन-पन आदि का संप्रत्यय होता है । गणित का संबंध इन्हीं से है, न उनकी प्रतिमाओं से । इन संख्याओं की प्रतिमाएँ नहीं होती हैं । यदि कोई व्यक्ति केवल चार या तीन को देखना चाहता है तो यह संभव नहीं है । हमें तीन फलों का या तीन किताबों का प्रत्यय हो सकता है, किन्तु तीन का प्रत्यय नहीं हो सकता है । इस प्रकार, गणित के संप्रत्ययों का आधार अनुभव होता है । किन्तु, समस्या तब उत्पन्न होती है जब हमें दस लाख जैसी संख्याओं का संप्रत्यय बनाना होता है । जब संख्या छोटी होती है तो हमें उसका अनुभव हो जाता

23.6 अभ्यास के लिए प्रश्न

23.6.1 वस्तुनिष्ठ प्रश्न

(i) अनुभववादियों के अनुसार संप्रत्यय का निर्माण होता है–

(अ) इन्द्रिय अनुभव

(ब) जन्मजात

(स) इन्द्रिय अनुभव एवं जन्मजात दोनों के द्वारा

(द) ऊपरोक्त में से कोई नहीं

उत्तर : (अ)

(ii) हॉस्पर्स के अनुसार गणित या भाषागत नियमों का संप्रत्यय का निर्माण होता है–

(अ) इन्द्रिय अनुभव के द्वारा

(ब) इन्द्रिय अनुभव के द्वारा नहीं

(स) जन्मजात प्रत्यय के द्वारा

(द) ऊपरोक्त में से कोई नहीं

उत्तर : (ब)

23.6.2 लघु उत्तरीय प्रश्न

(i) हॉस्पर्स के इस विचार को स्पष्ट करें, ''यदि अनुभव का अर्थ इन्द्रिय अनुभव है तो सभी संप्रत्यय अनुभव पर आधारित नहीं हैं ।''

23.6.3 दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

(i) ''क्या सभी संप्रत्यय अनुभव पर आधारित होते हैं ?'' हॉस्पर्स के विचार के आलोक में प्रकाश डालें।

23.7 प्रस्तावित पाठ

(i) जॉन हॉस्पर्स : दार्शनिक विश्लेषण परिचय

(ii) गोवर्द्धन भट्ट : दार्शनिक विश्लेषण परिचय

✠✠✠

वाक्य एवं तर्कवाक्य

पाठ संरचना

24.1 उद्देश्य
24.2 विषय-प्रवेश
24.3 मुख्य विषय की व्याख्या
24.3.1 तर्कवाक्य का स्वरूप
24.3.2 वाक्य का स्वरूप
24.4 सारांश
24.5 पाठ में प्रयुक्त शब्द
24.6 अभ्यास के लिए प्रश्न
24.6.1 वस्तुनिष्ठ प्रश्न
24.6.2 लघु उत्तरीय प्रश्न
24.6.3 दीर्घ उत्तरीय प्रश्न
24.7 प्रस्तावित पाठ

24.1 उद्देश्य

प्रस्तुत पाठ का उद्देश्य वाक्य एवं तर्कवाक्य के स्वरूप से परिचय करवाना है । सभी वाक्य तर्कवाक्य नहीं कहे जा सकते हैं, लेकिन यह सत्य है कि सभी तर्कवाक्य वाक्य होते हैं । तर्कवाक्य सत्य हो सकते हैं या असत्य हो सकते हैं किन्तु वाक्य या तो अर्थवान होते हैं या अर्थहीन ।

24.2 विषय–प्रवेश

मनुष्य में भाषा ही संज्ञापन का प्रमुख साधन है । भाषा के माध्यम से ही मनुष्य अपने विचारों भावनाओं, संवेगों आदि का संज्ञापन करता है । भाषा शब्दों से बनती है, शब्दों के योग से वाक्य बनते हैं । साधारण बोल-चाल में जब हम अपने विचारों एवं भावनाओं को व्यक्त करते हैं तो हम अकेले-अकेले शब्दों का प्रयोग नहीं करते हैं, बल्कि हम पूरे वाक्य का प्रयोग करते हैं, वाक्यों की रचना शब्दों से होती है । परन्तु शब्द का कोई भी समूह वाक्य नहीं कहलाता है । उदाहरणस्वरूप 'क्योंकि पंखा घोड़ा' में कई शब्द हैं और सभी शब्द अर्थवान हैं, पर यह वाक्य नहीं है । इससे स्पष्ट होता है कि शब्दों के अर्थ वाक्यों के अर्थ की गारंटी नहीं करते । वाक्यों के अर्थ का संबंध शब्दों के समूह के प्रयोग से है । शब्दों को मिलाकर किसी अभिव्यक्ति की जो रचना की जाती है, उसके मुख्य प्रयोगों में से एक है–अभिकथन करना । हालांकि वाक्यों का प्रयोग दूसरे तरीकों से भी किया जा सकता है ।

प्रत्येक वाक्य में कम से कम उद्देश्य और क्रिया होना आवश्यक है । उदाहरणस्वरूप 'फूल सुन्दर है' यह एक वाक्य है । परन्तु 'जाओ कलम'–यह वाक्य नहीं है । यदि शब्दों को इस प्रकार जोड़ दिया जाए तो वाक्यों का कोई अर्थ नहीं निकलेगा । 'अक बग नम'–इनमें न ही शब्दों का ही कोई अर्थ है और न ही वाक्य का ही कोई अर्थ है । प्रस्तुत पाठ में हमारा उद्देश्य वाक्यों को अर्थवान बनाने वाले शर्त्तों को जानने से है ताकि हम अर्थवान और अर्थहीन वाक्यों में भेद कर सकें। किन्तु, इससे पहले हमें यह जानना आवश्यक है कि सही माने में एक वाक्य क्या होता है तथा तर्कवाक्यों के साथ उसका क्या संबंध है ?

24.3 मुख्य–विषय की व्याख्या

24.3.1 तर्कवाक्य का स्वरूप :

कोई भी अनुमान वाक्यों से ही बना हुआ होता है । वाक्य ही अनुमान का मुख्य अंग है, जैसे–सभी ग्रह गोल होते हैं; चन्द्रमा एक ग्रह है, अत: चन्द्रमा भी गोल है । इस अनुमान में तीन वाक्य हैं पर वाक्य कई प्रकार के होते हैं । सभी वाक्यों का अनुमान में प्रयोग नहीं हो सकता है । वैसे वाक्य जो अनुमान में व्यवहृत हो सकें तर्कवाक्य कहलाते हैं । अब प्रश्न यह है कि किस प्रकार के वाक्य का अनुमान में व्यवहार हो सकता है ? वैसे वाक्यों का अनुमान में व्यवहार हो सकता है जो किसी निर्णय को व्यक्त करते हों । निर्णय वह मानसिक प्रक्रिया है जिसमें दो या अधिक प्रत्ययों को संयुक्त किया जाता है । यदि अपने मन में हमने 'खल्ली' के प्रत्यय और 'उजलापन' के प्रत्यय को संयुक्त कर दिया (खल्ली उजली है) तो वह निर्णय हुआ । इन दोनों प्रत्ययों में संबंध मन में स्थापित हुआ । जब निर्णय को भाषा में व्यक्त कर देते हैं तो वही तार्किक वाक्य कहलाता है । जैसे–खल्ली उजली है, राम मूर्ख है आदि । निर्णय सत्य या असत्य हो सकता है अर्थात् इसके साथ सत्यता और असत्यता का प्रश्न लागू हो सकता है । 'खल्ली उजली है' यह वाक्य जो निर्णय का रूप है, सत्य हो सकता है या असत्य परन्तु जो वाक्य आदेश या आज्ञा देते हैं, विस्मय प्रकट करते हैं, सुझाव देते हैं या प्रश्न पूछते हैं । इन वाक्यों के साथ सत्यता या असत्यता का प्रश्न ही नहीं उठता है ।

वाक्य मात्र कुछ चिन्हों का समूह नहीं है जिसे कागज पर अंकित कर दिया जाए, न ही यह ध्वनियों का समूह, बल्कि वाक्य ऐसे शब्दों का समूह है जिनका कोई अर्थ होता है । जब हम तर्कवाक्य की बात करते हैं, तब हम वाक्य के विषय में चर्चा नहीं करते हैं, वरन् उस वाक्य के अर्थ के विषय में चर्चा करते हैं । अत: तर्कवाक्यों का संबंध वाक्य के अर्थ से है । हम पाते हैं कि दो भिन्न वाक्य एक ही तर्कवाक्य या एक ही अर्थ को व्यक्त करते हैं–'मोहन राम के पिता हैं' तथा 'राम मोहन का बेटा है' ये दोनों ही भिन्न वाक्य हैं क्योंकि एक वाक्य में 'मोहन' उद्देश्य है और दूसरे में 'राम' उद्देश्य है । एक में पिता शब्द का प्रयोग हुआ है और दूसरे में बेटा शब्द का प्रयोग हुआ है । किन्तु फिर भी दोनों ही के अर्थ एक ही हैं । अत: दोनों में एक तर्कवाक्य का कथन है । दोनों वाक्यों के द्वारा हमें सूचना मिलती है । अत: यदि हमारा विश्वास है कि पहला कथन सत्य है तो दूसरा भी सत्य कथन माना जाएगा । यद्यपि वाक्य दो हैं फिर भी वे एक ही तर्कवाक्य व्यक्त कर रहे हैं ।

इसका विपरीत भी होता है–एक ही वाक्य दो तर्कवाक्यों को व्यक्त कर सकता है । जब वाक्य अनेकार्थक होता है तब ऐसा होता है । जैसे ''यह गाड़ी किराये की है इसका अर्थ हो सकता है–

(i) ''यह गाड़ी मैंने किसी से किराये पर ली है'' या

(ii) ''यह गाड़ी मैं दूसरों को किराये पर देता हूँ ।''

तर्कवाक्य सत्य हो सकते हैं या असत्य हो सकते हैं, किन्तु वाक्य या तो अर्थवान होते हैं या अर्थहीन । वाक्य अर्थ व्यक्त करने के माध्यम हैं और जब तक हमें वाक्य के अर्थ का स्पष्ट रूप से ज्ञान नहीं होगा तब तक हम यह नहीं जान पायेंगे कि जो तर्कवाक्य के द्वारा व्यक्त हो रहा है वह सत्य है अथवा असत्य है । अत: तर्कवाक्य वह वाक्य है जो सत्य हो अथवा असत्य । हॉस्पर्स का विचार है कि दर्शनशास्त्र क वाक्यों का संबंध वहीं तक है जहाँ तर्कवाक्यों को व्यक्त करने के

इसलिए कहा जाता हैं कि सभी तर्कवाक्य वाक्य होते हैं परन्तु सभी वाक्य तर्कवाक्य नहीं होते हैं । अरस्तू ने भी अपने तर्कशास्त्र के अन्तर्गत इसी तरह का अन्तर वाक्य तथा तर्कवाक्य के बीच किया है ।

24.5 पाठ में प्रयुक्त शब्द

तर्कवाक्य

वाक्य

सत्यता एवं असत्यता

अर्थवान एवं अर्थहीन

अभिकथनात्मक वाक्य

न-अभिकथनात्मक वाक्य

संज्ञापन

24.6 अभ्यास के लिए प्रश्न

24.6.1 वस्तुनिष्ठ प्रश्न

(i) तर्कवाक्य होते हैं–

(अ) केवल सत्य

(ब) केवल असत्य

(स) सत्य अथवा असत्य

(द) ऊपर्युक्त में से कोई नहीं

उत्तर : (स)

(ii) वाक्य होते हैं–

(अ) केवल अर्थवान

(ब) केवल अर्थहीन

(स) अर्थवान अथवा अर्थहीन

(द) ऊपरोक्त में से कोई नहीं

उत्तर : (स)

(iii) प्रश्न, आज्ञा, विस्मय आदि वाक्य हैं

(अ) अभिकथनात्मक वाक्य

(ब) न-अभिकथनात्मक वाक्य

(स) सत्य अथवा असत्य वाक्य

(द) ऊपरोक्त में से कोई नहीं

उत्तर : (ब)

24.6.2 लघु उत्तरीय प्रश्न

(i) अभिकथनात्मक वाक्य को स्पष्ट करें ।

(ii) न-अभिकथनात्मक वाक्य को स्पष्ट करें ।

24.6.3 दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

(i) वाक्य और तर्कवाक्य के बीच भेद करें । क्या सभी वाक्य तर्कवाक्य हैं ? स्पष्ट करें ।

24.7 प्रस्तावित पाठ

(i) जॉन हॉस्पर्स : दार्शनिक विश्लेषण परिचय

(ii) गोवर्द्धन भट्ट : दार्शनिक विश्लेषण परिचय

✠✠✠

वाक्य के अर्थ की कसौटियाँ

पाठ संरचना

25.1 उद्देश्य
25.2 विषय-प्रवेश
25.3 मुख्य विषय की व्याख्या
25.3.1 वाक्य को अर्थवान होने की शर्त्तें
25.3.2 अर्थहीनता के लक्षण
25.4 सारांश
25.5 पाठ में प्रयुक्त शब्द
25.6 अभ्यास के लिए प्रश्न
25.6.1 वस्तुनिष्ठ प्रश्न
25.6.2 लघु उत्तरीय प्रश्न
25.6.3 दीर्घ उत्तरीय प्रश्न
25.7 प्रस्तावित पाठ

25.1 उद्देश्य

प्रस्तुत पाठ का उद्देश्य वाक्य के अर्थ की कसौटियों से परिचय करवाना है अर्थात् किसी वाक्य को अर्थवान अथवा अर्थहीन होने की शर्तें कौन-कौन सी हैं, इस पर विचार करना आवश्यक है । अर्थहीनता का अर्थ असत्यता नहीं है । यदि कोई वाक्य असत्य है तो इसका यह अर्थ नहीं है कि वह वाक्य अर्थहीन है । अर्थहीन वाक्य के साथ सत्यता और असत्यता का प्रश्न ही नहीं उठता है ।

25.2 विषय-प्रवेश

हॉस्पर्स ने अपनी पुस्तक 'दार्शनिक विश्लेषण परिचय' के प्रथम अध्याय में वाक्य के अर्थ की कसौटियों की शर्त्तो पर प्रकाश डाला है । तर्कवाक्य एवं वाक्य के संबंध को जानने के पश्चात् अब हमें यह देखना है कि वाक्यों के अर्थवान होने के लिए शर्तों का पालन करना आवश्यक है ताकि अर्थवान एवं अर्थहीन वाक्यों में भेद किया जा सके । हम जानते हैं कि यदि कोई वाक्य अर्थहीन हों तो वह सत्य तर्कवाक्य या असत्य तर्कवाक्य नहीं व्यक्त करता है । अर्थहीनता का अर्थ असत्यता नहीं है । यदि कोई वाक्य असत्य है तो इसका यह अर्थ नहीं है कि वह वाक्य अर्थहीन है । एक दार्शनिक जब दूसरे दार्शनिक के सिद्धान्तों को असत्य कहता है तो वह अच्छी तरह जानता है कि उस सिद्धान्त का अर्थ है, भले ही वह

असत्य है किन्तु जब वह किसी के सिद्धान्त को अर्थहीन कहता है तब सत्यता एवं असत्यता का प्रश्न ही नहीं उठता है । प्रश्न यह उठता है कि किसी वाक्य को अर्थवान अथवा अर्थहीन होने की शर्तें कौन-कौन सी हैं ? हम जानते हैं कि ऐसे वाक्य अर्थवान होते हैं जैसे–

'मैं लिख रहा हूँ', 'साँप जहरीला है', 'वर्षा हो रही है' आदि परन्तु कुछ ऐसे वाक्य भी हैं, जिसका कोई अर्थ नहीं होता है जैसे–'कलम खेलता है', 'किताबें नाच रही हैं ।' आदि प्रश्न यह उठता है कि इन वाक्यों में ऐसे कौन से तत्व हैं जो किसी वाक्य को अर्थवान अथवा अर्थहीन बनातें हैं । किसी भी वाक्य को अर्थवान या अर्थहीन होने की कुछ शर्तें हैं, जिसके आधार पर वाक्य को अर्थवान या अर्थहीन कहा जा सकता है ।

25.3 मुख्य-विषय की व्याख्या

25.3.1 वाक्य को अर्थवान होने की शर्त्तें :

(i) कल्पनीयता :

कुछ विचारकों के अनुसार कोई भी वाक्य तभी अर्थवान होगा जब हम वाक्य के द्वारा वर्णित स्थिति की कल्पना कर सकें । जैसे–'मोहन दिल्ली गया है, यह वाक्य अर्थवान है, क्योंकि हम इस स्थिति की कल्पना कर सकते हैं । 'परियाँ सुन्दर हैं'–यह भी अर्थवान वाक्य है क्योंकि हम सुन्दर परियों की कल्पना कर सकते हैं, भले ही परियों का अस्तित्व न हो।

किन्तु प्रश्न यह उठता है कि यदि हम उस स्थिति की कल्पना नहीं कर सकते हैं जिसका वर्णन वाक्य से हुआ है, तो क्या वह वाक्य अर्थहीन हो जाएगा ? उदाहरणस्वरुप, ''भारत को विश्व बैंक ने पाँच अरब रुपयों का ऋण दिया है' इतने रुपयों की तो कल्पना हम नहीं कर सकते हैं तो क्या यह वाक्य अर्थहीन हो जाएगा ? कई बार वाक्य में ऐसा कहा जाता है जो इन्द्रिय-गम्य नहीं है जैसे–''सत्य बोलना हमारा धर्म है'' इस वाक्य के अर्थ को लेकर मन में कोई तस्वीर नहीं उभरती है तो क्या इसका अर्थ नहीं है ? यदि भिन्न-भिन्न लोगों के मन में वाक्य को लेकर भिन्न-भिन्न तस्वीरें उभरती हैं तो क्या इससे अर्थ पर प्रभाव पड़ेगा ? दूसरा, किसी वाक्य के अर्थवान होने की यह कसौटी यदि मानी गयी तो यह कसौटी आत्मनिष्ठ होगी, क्योंकि भिन्न व्यक्तियों की कल्पना भिन्न होगी ।

(ii) वर्णनीयता :

कुछ विचारकों के अनुसार कोई वाक्य तब अर्थवान होगा जब हम वैसी स्थिति का वर्णन कर सकते हैं जो उसका दृष्टांत हो । उदाहरणस्वरूप, ''धूमपान स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है'' इसकी हम पर्यायवाची शब्दों के द्वारा व्याख्या कर सकते हैं । अत: इस वाक्य को अर्थवान कहा जाएगा ।

किन्तु हमेशा वाक्यों का इस प्रकार का वर्णन करना संभव नहीं है । उदाहरणस्वरूप-यदि हम कहते हैं–'मैं मानसिक उत्तेजना की स्थिति में हूँ'–ऐसी स्थिति का पर्यायवाची शब्दों के द्वारा वर्णन करना संभव नहीं है। इस वाक्य में कुछ ऐसे शब्द हैं जिनकी केवल निदर्शनात्मक परिभाषा हो सकती है । जब तक मैं आपको भी मानसिक रूप से उत्तेजित नहीं करता हूँ तब तक इस वाक्य का अर्थ समझना संभव नहीं है । इस प्रकार, ऐसी स्थितियों का वर्णन कैसे करें जिन्हें दूसरे पर्यायवाची शब्दों के द्वारा वर्णन नहीं किया जा सकता है ?

दूसरी समस्या यह है कि यदि वर्णनीयता को कसौटी माना गया तो अर्थवान तथा अर्थहीन वाक्यों में भेद करना संभव नहीं होगा । मान लीजिए, हम किसी को यह कहते हैं कि ''चाँद पृथ्वी पर चलता है'' की स्थिति का वर्णन करें । यदि वह उत्तर देते हुए यह कहता है कि ''चाँद का पृथ्वी पर चलना वह स्थिति होगी'' तो यह वाक्य अर्थवान हो जाएगा, भले ही यह असत्य है ।

मान लीजिए हम कहते हैं कि ''शुक्रवार सोया हुआ है ।'' जब हमसे स्थिति का वर्णन करने को कहा जाएगा तो

मैं कहूँगा, ''शुक्रवार सोया हुआ है यही सबसे उचित परिभाषा हैं'' । या फिर यदि अन्य पर्यायवाची शब्दों के द्वारा इसका वर्णन करना होगा तो हम कहेंगे ''वृहस्पतिवार के बाद वाला दिन सोया हुआ है ।''

इसप्रकार, इस कसौटी को भी मानना संभव नहीं है क्योंकि किसी भी वाक्य के प्रत्येक शब्द को पर्यायवाची शब्दों के द्वारा वर्णन करना संभव नहीं है ।

(iii) सत्यता की शर्त्तें :

कुछ विचारकों के अनुसार वाक्य अर्थवान तब होगा जब हम यह बता सकें कि किन शर्तों के पूरा होने पर कोई कथन अर्थवान होगा । वह कथन भले ही असत्य हो । किन्तु यदि हम यह कह सकें कि किन शर्तों के अन्तर्गत वह कथन सत्य होगा तो वह वाक्य अर्थवान होगा । ''टेबुल गोलाकार है'' हम यह बता देंगे कि टेबुल का गोलाकार होना ही इस कथन की सत्यता है । अत: वाक्य अर्थवान होगा ।

यदि ''चाँद पृथ्वी पर चलता है'' वाक्य के अर्थवान होने का परीक्षण करना चाहेंगे तो हमें यह बताना होगा कि किन शर्त्तों के अन्तर्गत यह कथन सत्य होगा । यदि मैंने चाँद को पृथ्वी पर चलते हुए देखा है तब तो यह वाक्य अर्थवान होगा । यदि नहीं देखा है, तब भी उन शर्त्तों को तो जानते हैं जिनके रहने पर यह कथन होगा । यह शर्त है–'चाँद का पृथ्वी पर चलना' इस विचार के अनुसार यदि किसी कथन के सत्य होने की शर्तों को हम जानते हैं तो यह वाक्य अर्थवान होगा । किन्तु मान लीजिए, हम इस वाक्य को लेते हैं–'दिन भूखा है'– इस कथन की सत्यता की शर्तों क्या हैं ? उत्तर मिलेगा–'दिन का भूखा रहना ।''

इस प्रकार, कोई भी वाक्य अर्थहीन नहीं होगा और हम अर्थवान एवं अर्थहीन वाक्यों में भेद नहीं कर पायेंगे ।

(iv) यह किसके समान है यह जानना :

जब यह कहा जाता है कि ''चाँद धरती पर चलता है' या 'दिन भूखा है'–तो मैं इन वाक्यों को अर्थवान मान सकता हूँ, भले ही उस स्थिति की कल्पना मैं नहीं कर सकता हूँ । लेकिन शर्त यह है कि हम यह बता दें कि यदि ये कथन सत्य हों तो किसके समान होंगे ? भले ही कथन सत्य हो अथवा असत्य, हमें यह जानना है कि सत्य होने के लिए वह किसके समान होगा । जैसे–'बर्फ गुलाबी है' यह कथन असत्य है । परन्तु हम यह जानते हैं कि सत्य होने के लिए यह किसके समान होगा । अत: भले ही यह असत्य है, यह वाक्य अर्थवान है ।

''यह किसके समान है, यह जानना'' वर्णनीयता के समान ही है । यदि इसके लिए हम दूसरे शब्द नहीं जानते हों तो हम नहीं कह सकते हैं कि यह किसके समान होगा । और यदि इसके लिए कोई शब्द हो ही नहीं, तब हम कैसे कहेंगे कि यह यह किसके समान होगा ? दूसरा, ऐसी कई स्थितियाँ हैं, जो अनूठी हैं । ऐसी परिस्थिति में हम यह नहीं कह सकते हैं कि यदि वे सत्य हों तो किसके समान होंगी । अत: वाक्य के अर्थवान होने की यह कसौटी ठीक नहीं है ।

25.3.2 अर्थहीनता के लक्षण :

(i) संदर्भ के बाहर अर्थहीनता :-

सामान्यत: शब्द किसी संदर्भ में प्रयुक्त होते हैं, जिससे उन्हें अर्थ मिलता है । यदि शब्द संदर्भ के बाहर प्रयोग हो तो शब्द अर्थहीन हो जायेंगे । 'ऊपर', 'नीचे', 'पास', 'दूर', 'छोटा', आदि शब्द एक पदार्थ के दूसरे पदार्थ से विशिष्ट दैशिक संबंध का संकेत करते हैं । 'ऊपर' का अर्थ है ''अपेक्षाकृत ऊपर'' । यदि हम कहते हैं कि पंखा टेबुल के ऊपर है तो इसका अर्थ हुआ कि पंखा टेबुल की तुलना में ऊँचा है । किन्तु, यदि इन शब्दों को संदर्भ के बाहर प्रयोग होगा, तो ये अर्थहीन हो जायेंगे । जैसे–'विवेकशील छोटा है' ।

अत: शब्दों को किसी संदर्भ में ही प्रयुक्त होना चाहिए, नहीं तो वे अर्थहीन हो जायेंगे ।

(ii) कोटि भ्रम :

प्रत्येक वस्तु जिसकी हम चर्चा करते हैं वह किसी कोटीय वर्ग के अन्तर्गत होती हैं । जैसे कलम के बारे में हम

कहते हैं कि इसका प्रयोग लिखने के लिए होता है । इसमें स्याही डाली जाती है, इसकी लम्बाई होती है, किन्तु, हम यह नहीं कह सकते हैं कि कलम खाने की वस्तु है । यदि हम किसी कोटि की वस्तु से उन लक्षणों को जोड़ते हैं जो उस कोटि के हैं तो वह अर्थपूर्ण होगा । जैसे–''किताबें पढ़ने के लिए होती हैं'', ''कलम लिखने की सामग्री है'' ये अर्थपूर्ण हैं ।

परन्तु यदि किसी वाक्य में ऐसे शब्द जोड़ते हैं जो भिन्न कोटि के हैं, तो वह वाक्य अर्थहीन हो जाएगा । जैसे, यदि किसी ने कहा कि 'उस स्वाद का गंध हुआ' या 'गंध का स्वाद हुआ' तो यह कोटि भ्रम कहलायेगा । ऐसे वाक्य जिनमें कोटि-भ्रम हों, अर्थहीन होंगे ।

(iii) आत्म-व्याघातकता :

वाक्य तभी अर्थहीन होगा जब उसमें आत्म व्याघातक शब्द होंगे । उदाहरणस्वरूप, 'यह वृत्ताकार चतुर्भुज है', 'यह काला लाल रंग का है–इन सभी वाक्यों में आत्म-व्याघातक शब्द प्रयोग किए गए हैं । अत: ये वाक्य अर्थहीन हैं, क्योंकि वे जिन स्थितियों का वर्णन कर रहे हैं वे आत्म-व्याघाती हैं ।

(iv) रूपकों की अनुवाद अयोग्यता :

अर्थपूर्ण तथा अर्थहीन वाक्यों में भेद करते समय भाषा में प्रयोग होने वाले रूपकों के द्वारा कठिनाई उत्पन्न होती है। कविताओं में विशेषकर रूपकों का प्रयोग होता है–''सुख-दुख: की दिवा निशा में, खोले जीवन अपना मुख'' यदि मात्र शब्दों का अर्थ लिया जाए तो पंक्ति अर्थहीन प्रतीत होगी । लेकिन वास्तव में ये पंक्ति अर्थपूर्ण हैं । रूपक समानता के द्वारा कार्य करते हैं तथा ये किसी शब्द के प्रचलित प्रयोग के बाहर भी जाते हैं । रूपकों का अनुवाद किया जाता है । इनका अनुवाद ऐसे शब्दों में हो जिसका अर्थ हम जान सकें । यदि इनके अर्थ का विस्तार ऐसा हो कि कहीं 'समानता' का पता न चले तो उसे अर्थहीन माना जाएगा ।

(v) साधारण वाक्यों में अनुवाद योग्यता :

कहा जाता है कि अर्थहीन वाक्य वे हैं जिन्हें साधारण वाक्यों से व्यक्त नहीं किया जा सकता है और उसका साधारण वाक्यों में अनुवाद करने की चेष्टा असफल होती है । ऐसे वाक्य जैसे–'मैं पढ़ रहा हूँ', 'मैं कॉलेज जाता हूँ' अर्थवान हैं, क्योंकि इनके अर्थ का साधारण वाक्यों में अनुवाद हो सकता है । किन्तु ''सत्य तथा असत्य एक हैं और समान हैं'' यह तब तक अर्थहीन हैं जब तक साधारण वाक्यों में इनका अनुवाद न हो ।

25.4 सारांश

उपर्युक्त विवेचना के आधार पर सारांशत: कहा जा सकता है कि हॉस्पर्स ने वाक्यों के अर्थवान तथा अर्थहीनता के लिए कुछ शर्तों की चर्चा की है जिसके आधार पर वाक्यों को अर्थपूर्ण अथवा अर्थहीन कहा जा सकता है । अर्थहीन का अर्थ असत्यता नहीं है । अर्थहीन वाक्यों की सत्यता अथवा असत्यता का प्रश्न ही नहीं उठता है । इस प्रकार यह स्पष्ट होता है कि वाक्यों को अर्थपूर्ण होने की कसौटियाँ कौन-कौन सी हैं तथा वाक्य के अर्थहीन होने के लक्षण क्या हैं ।

25.5 पाठ में प्रयुक्त शब्द

कसौटियाँ

अर्थहीन

अर्थपूर्ण

कल्पनीयता

वर्णनीयता

सत्यता की शर्तें

कोटि भ्रम

आत्म–व्याघातकता

25.6 अभ्यास के लिए प्रश्न

25.6.1 वस्तुनिष्ठ प्रश्न

(i) यदि कोई वाक्य अर्थहीन है, इसका अर्थ है कि वह वाक्य

(अ) सत्य है

(ब) असत्य है

(स) सत्य तथा असत्य दोनों हो सकता है

(द) ऊपरोक्त में से कोई नहीं

उत्तर : (द)

(ii) अर्थवान वाक्य होते हैं–

(अ) सिर्फ सत्य

(ब) सिर्फ असत्य

(स) सत्य अथवा असत्य

(द) ऊपरोक्त में से कोई नहीं

उत्तर : (स)

25.6.2 लघु उत्तरीय प्रश्न

(i) किसी भी वाक्य के अर्थहीन होने के लक्षण क्या हैं ? स्पष्ट करें ।

(ii) किसी भी वाक्य के अर्थपूर्ण होने की शर्तें क्या हैं ? स्पष्ट करें ।

25.6.3 दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

(i) वाक्य के अर्थ की कसौटियाँ क्या हैं ? स्पष्ट करें ।

25.7 प्रस्तावित पाठ

(i) जॉन हॉस्पर्स : दार्शनिक विश्लेषण परिचय

(ii) गोवर्द्धन भट्ट : दार्शनिक विश्लेषण परिचय

✠✠✠